राष्ट्रीय दैनिक

# प्रात:किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

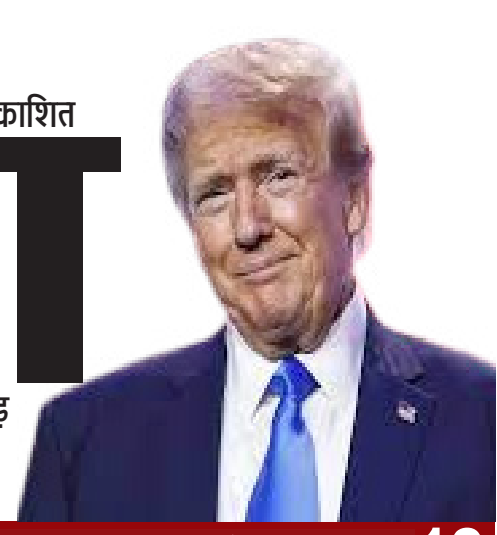

11 रोहित शर्मा की ओपनिंग पर उखड़े संजय मांजरेकर, कही यह बातें..

अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में ट्रंप ने दायर की याचिका, टिकटॉक पर प्रतिबंध वाले कानून..... 12

वर्ष : 12 | अंक : 255 | पटना, रविवार, 29 दिसम्बर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

**मौसम** अधिकतम तापमान 22.0°C न्यूनतम तापमान

**बाजार**

सोना 75,920

चांदी 91,900

सेंसेक्स 83,584

निफ्टी 25,698

## संक्षिप्त खबरें

### जेड प्लस सिक्योरिटी में रहेंगी मनमोहन सिंह की पत्नी गुरुशरण कौर

नई दिल्ली। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को पूरे राजकीय सम्मान के साथ विदाई दी गई। नई दिल्ली के निगम बोध घाट पर दिवंगत पीएम का अंतिम संस्कार किया गया। इस मौके पर डॉ. सिंह की पत्नी गुरुशरण कौर और उनकी बेटियां मौजूद रही। 2019 में डॉ. मनमोहन सिंह का एसपीजी सिक्योरिटी कवर वापस ले लिया गया था। एसपीजी की जगह पर उन्हें जेड प्लस सुरक्षा मुहैया कराई गई। अब उनकी पत्नी गुरुशरण कौर को भी सीआरपीएफ जेड प्लस सुरक्षा मिलेगी। इस सुरक्षा घेरे में उनके पास बुलेटप्रूफ वाहन भी होगा। उनके आवास पर करीब चार दर्जन जवान मौजूद रहेंगे। डॉ. मनमोहन सिंह की एसपीजी सुरक्षा हटाकर जब उन्हें सीआरपीएफ की जेड प्लस सुरक्षा दी गई थी, तब उन्हें एसपीजी वाली हाई क्लास बुलेटप्रूफ बीएमडब्लू कार, जिसमें वे यात्रा करते थे, वही गाड़ी प्रदान कर दी गई थी। अब उनकी पत्नी गुरुशरण कौर के पास भी वही गाड़ी रहेगी। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का गुरुवार देर रात एम्स में 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। पीएम के पद से हटने के बाद डॉ. सिंह को मोतीलाल लाल नेहरू रोड पर स्थित बंगला नंबर 3 अलॉट किया गया था। पांच साल पहले विशेष सुरक्षा समूह (एसपीजी) को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष में बहस छिड़ गई थी। वजह, 2019 में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की एसपीजी सुरक्षा वापस ले ली गई थी। तब विपक्ष की तरफ से कोई शोर शराबा नहीं हुआ था। कुछ माह बाद जब गांधी परिवार के सदस्यों की एसपीजी सुरक्षा हटाई गई तो विपक्ष ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाया था कि जानबूझकर और राजनीतिक कारणों से एसपीजी सुरक्षा वापस ली गई है।

# मनमोहन सिंह राजकीय सम्मान के साथ पंचतत्व में हुए विलीन

## निगमबोध घाट पर राजकीय सम्मान के साथ हुआ अंतिम संस्कार

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का शनिवार को यहां निगमबोध घाट पर राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया और उनका पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया। डॉ. सिंह के अंतिम संस्कार में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, भूटान नरेश जिग्मे खेसर नमगायेल वांगचुक, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजिजू, भाजपा अध्यक्ष तथा केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा, दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, कांग्रेस संसदीय दल की नेता सोनिया गांधी, कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, तीनों सेनाओं के प्रमुखों के साथ ही कई केंद्रीय मंत्री, राजनयिक तथा अन्य गणमान्य लोग शामिल हुए। इससे पहले उनके पार्थिव शरीर को कांग्रेस मुख्यालय में अंतिम दर्शन के लिए रखा गया जहां उनके परिवार के सदस्यों के साथ ही कांग्रेस में कई प्रमुख नेताओं ने उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की। उसके बाद उनके पार्थिव शरीर को काफिले के साथ निगमबोध घाट लाया गया। उनकी अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में लोग उमड़े, लेकिन निगम बोध घाट पर सुरक्षा के कड़े बंदोबस्त होने के करण जो लोग कांग्रेस मुख्यालय से शव यात्रा में करीब 11 किलोमीटर पैदल चलकर घाट पर पहुंचे उनमें सबको अंदर जाने नहीं दिया गया। गौरतलब है कि डॉ. सिंह का 92 साल की उम्र में 26 दिसंबर रात करीब 9 बजे दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में निधन हो गया था। डॉ. सिंह के निधन के बाद उनका स्मारक बनाने को लेकर कांग्रेस तथा भाजपा के बीच जमकर सियासत हो रही है हालांकि सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि ट्रस्ट बनाकर डॉ. सिंह का समाधि स्थल बनाया जाएगा। डॉ. सिंह 2004 से 2014 तक दो बार देश के प्रधानमंत्री रहे। इससे पहले 1991 में पी.वी. नरसिम्हा राव सरकार में वित्तमंत्री के रूप में उन्होंने देश में उदारवादी आर्थिक सुधार लागू किया जिससे देश की अर्थव्यवस्था को नई रिपीट नई ऊंचाई मिली। वर्ष 1954 में पंजाब विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एमए करने के बाद कैम्ब्रिज से प्रथम श्रेणी से अर्थशास्त्र (ओनर्स) कर उन्होंने 1962 में ऑक्सफोर्ड से डीफिल किया। वर्ष 1971 में भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार, 1972 में वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार रहे और 1980 से 82 तक योजना आयोग के सदस्य बने। डॉ. सिंह 1982-1985 तक रिजर्व बैंक के गवर्नर रहे और साल 1985 में योजना आयोग के उपाध्यक्ष बने। फिर वह 1990 में प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार नियुक्त हुए। वह दिल्ली विश्वविद्यालय में भी प्रोफेसर रहे।

> राष्ट्रपति मुर्मु, पीएम मोदी, सोनिया गांधी, राहुल गांधी सहित अन्य ने दी श्रद्धांजलि

### सोनिया, खरगे, राहुल समेत कई नेताओं ने कांग्रेस मुख्यालय में दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी, पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और पार्टी के कई अन्य वरिष्ठ नेताओं एवं कार्यकताओं ने शनिवार को यहां कांग्रेस मुख्यालय में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि दी। इसके कुछ देर बाद ही सिंह की अंतिम यात्रा शुरू हुई। निगमबोध घाट पर उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। पूर्व प्रधानमंत्री का पार्थिव शरीर उनके आवास से सुबह करीब नौ बजे कांग्रेस मुख्यालय लाया गया, जहां पार्टी के नेता और कार्यकर्ता उनके अंतिम दर्शन के लिए पहले से ही इंतजार कर रहे थे। कांग्रेस मुख्यालय 24 अकबर रोड में सिंह का पार्थिव शरीर रखे जाने के बाद सोनिया गांधी, खरगे, राहुल गांधी, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा तथा पार्टी के कई अन्य नेताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। सिंह की पत्नी गुरशरण कौर और उनके परिवार के कुछ अन्य सदस्य भी कांग्रेस मुख्यालय में मौजूद थे। पूर्व प्रधानमंत्री के अंतिम दर्शन के लिए बड़ी संख्या में कार्यकर्ता पहले से ही कतारबद्ध थे और उन्होंने भारतीय राजनीति के इस सौम्य नेता को नम आंखों से श्रद्धांजलि दी।

### प्रधानमंत्री मोदी की दिल्ली परिवर्तन यात्रा का कार्यक्रम टला

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 29 दिसंबर को दिल्ली के रोहिणी में होने वाली परिवर्तन यात्रा को पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के सम्मान में घोषित सात दिवसीय राष्ट्रीय शोक के मद्देनजर पुनर्निर्धारित किया गया है। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री और भारत के 14वें प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का गुरुवार रात नई दिल्ली स्थित एम्स में 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। सिंह के निधन पर सात दिवसीय राष्ट्रीय शोक की घोषणा की गई है, जो 1 जनवरी 2025 तक रहेगी। इसी को ध्यान में रखते हुए कई सरकारी कार्यक्रमों को पुनर्निर्धारित किया गया है। भाजपा की ओर से प्रधानमंत्री मोदी की रोहिणी रैली के साथ दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए अपने अभियान की शुरूआत करने की योजना बनाई थी, जिसे अब 5 जनवरी 2025 के लिए पुनर्निर्धारित किया गया है। भाजपा सूत्रों के अनुसार, प्रधानमंत्री द्वारा रैली के दौरान राष्ट्रीय राजधानी के लिए महत्वपूर्ण घोषणाएं किए जाने की उम्मीद है। इसके अतिरिक्त, 3 जनवरी को एक और बड़ी रैली निर्धारित है। योजना के तहत, पीएम मोदी 29 दिसंबर को रिठाला में एक नई मेट्रो लाइन की आधारशिला रखने और रोहिणी के जापानी पार्क में एक सभा को संबोधित करने वाले थे। हालांकि, शिलान्यास समारोह की नई तारीखों की पुष्टि होना अभी बाकी है। भारत के चुनाव आयोग ने अभी तक 70 सदस्यीय दिल्ली विधानसभा चुनावों की तारीखों की घोषणा नहीं की है, हालांकि अगले साल फरवरी में चुनाव होने की संभावना है, क्योंकि मौजूदा विधानसभा का कार्यकाल 23 फरवरी को खत्म हो रहा है। आम आदमी पार्टी 2015 और 2020 में अपनी निर्णायक जीत के बाद लगातार तीसरी बार सत्ता में आने की कोशिश कर रही है। पार्टी ने 2015 में 67 और 2020 में 63 सीटें जीती थीं और दिल्ली विधानसभा में अपनी मजबूत पकड़ बनाए रखी थी।

### अंतिम यात्रा में राहुल गांधी समेत कांग्रेस के वरिष्ठ नेता हुए शामिल

नई दिल्ली। जब तक सूरज चांद रहेगा मनमोहन सिंह का नाम रहेगा, जैसे नारों के बीच पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह की अंतिम यात्रा कांग्रेस मुख्यालय से निकली। इससे पहले शनिवार सुबह पूरे सम्मान के साथ भारतीय सेना, नौसेना और वायु सेना के अधिकारी पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का पार्थिव शरीर लेकर कांग्रेस मुख्यालय पहुंचे, जहां स्वर्गीय मनमोहन सिंह की धर्मपत्नी और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने मनमोहन सिंह के पार्थिव शरीर पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्वज अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। पूर्व प्रधानमंत्री का पार्थिव शरीर अंतिम यात्रा के लिए सेना के वाहन पर रखा गया। इस वाहन में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के परिवार के लोगों के साथ मौजूद रहे।

### नवंबर में गुणवत्ता मानकों पर खरे नहीं उतरे 111 दवाओं के नमूने

नई दिल्ली/एजेंसी। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने नवंबर में केंद्रीय औषधि प्रयोगशालाओं में जांचे गए 41 दवा नमूने मानक गुणवत्ता के नहीं पाए हैं। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इसके अलावा, राज्य औषधि परीक्षण प्रयोगशालाओं द्वारा जांचे गए 70 औषधि नमूनों को भी नवंबर में एनएसक्यू के रूप में चिन्हित किया गया है। एक या उससे ज्यादा निर्दिष्ट गुणवत्ता मानकों पर खरा नहीं उतरने पर किसी औषधि को एनएसक्यू माना जाता है। एक अधिकारी ने कहा, ह्लसरकारी प्रयोगशाला में जिन औषधियों का परीक्षण किया गया, केवल वे मानकों पर खरी नहीं उतरीं और इससे बाजार में उपलब्ध अन्य औषधि के संबंध में किसी प्रकार की चिंता की आवश्यकता नहीं है। नवंबर में दो औषधि नमूनों की पहचान नकली दवाओं के रूप में की गई थी। सूत्रों ने बताया कि इनमें से एक नमूना बिहार औषधि नियंत्रण प्राधिकरण और दूसरा सीडीएससीओ गाजियाबाद ने लिया था। अनधिकृत और अज्ञात निमार्ता दूसरी कंपनियों के ब्रांड नामों का उपयोग करके ये दवाएं बना रहे थे। सूत्रों ने बताया कि एनएसक्यू और नकली दवाओं की पहचान के लिए राज्यों के नियामकों के सहयोग से नियमित रूप से कार्रवाई की जाती है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ऐसी दवाओं की पहचान करके बाजार से हटाया जाए।

### सूबे में 62 आईपीएस अधिकारियों का तबादला

#### अवकाश कुमार बने पटना के नए एसएसपी

प्रात: किरण

पटना। बिहार में एक बार फिर बड़े पैमाने पर आईपीएस अधिकारियों का तबादला हुआ है। 62 आईपीएस अफसरों ट्रांसफर किया गया है। अवकाश कुमार को पटना का एसएसपी बनाया गया है, जबकि पटना एसएसपी राजीव मिश्रा को आतंकवाद निरोधक दस्ता का पुलिस उप महानिरीक्षक बनाया गया है। बिहार पुलिस मुख्यालय के अपर पुलिस महानिदेशक कुंदन कृष्णन को विशेष कार्य बल के अपर पुलिस महानिदेशक (अभियान) का भी अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। साथ ही 1996 बैच के आईपीएस डॉ अमित कुमार जैन जो अब तक बिहार मानवाधिकार आयोग के अपर पुलिस महानिदेशक के साथ अपराध अनुसंधान विभाग के अपर पुलिस महानिदेशक (कमजोर वर्ग) की भूमिका में थे, उनसे आयोग वाली जिम्मेदारी ले ली गई है। अतिरिक्त प्रभार ही उनका मूल पद हो गया है।

**अमृतराज को अपर पुलिस महानिदेशक (सुरक्षा) की जिम्मेदारी**

वहीं 1998 बैच के आईपीएस अमृतराज को अपर पुलिस महानिदेशक (सुरक्षा) बनाया गया है। वह अब तक अपर पुलिस महानिदेशक (अभियान) की जिम्मेदारी निभा रहे थे। वहीं 2001 बैच के आईपीएस शालीन को पुलिस महानिदेशक (आतंकवाद निरोधक दस्ता) के साथ पुलिस महानिरीक्षक (सुरक्षा) का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। वह पहले भी आतंकवाद निरोधक दस्ता के पुलिस महानिरीक्षक थे। उनसे विशेष सशस्त्र पुलिस के पुलिस महानिरीक्षक का अतिरिक्त प्रभार ले लिया गया है।

**आईपीएस राकेश राठी और राजेश कुमार को भी मिली जिम्मेदारी**

2002 बैच के आईपीएस राकेश राठी अब तक पूर्णिया क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक थे। वह अब तकनीकी सेवाएं एवं संचार के पुलिस महानिरीक्षक के अलावा आर्थिक अपराध इकाई में (साइबर क्राइम) के पुलिस महानिरीक्षक के अतिरिक्त प्रभार में भी होंगे। वहीं 2003 बैच के आईपीएस अधिकारी राजेश कुमार मिथिला क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक थे। वह अब बिहार मानवाधिकार आयोग के पुलिस महानिरीक्षक होंगे।

**आईपीएस विनय कुमार को भी अतिरिक्त प्रभार**

2004 बैच के आईपीएस विनय कुमार पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) के साथ पुलिस महानिरीक्षक (सुरक्षा) के अतिरिक्त प्रभार में थे। वह अब विशेष कार्य बल में पुलिस महानिरीक्षक (अभियान) के साथ ही पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) के अतिरिक्त प्रभार में रहेंगे। 2012 बैच के रवि रंजन कुमार को पटना में गृह रक्षा वाहिनी का समादेष्टा बनाया गया है। डॉ इनामुल हक मेंगनू (2012) को अरवल का एसपी बनाया गया है। आमिर जावेद को अपराध अनुसंधान विभाग (कमजोर वर्ग एवं महिला कोषांग) का पुलिस अधीक्षक बनाया गया है। संजय कुमार सिंह (2012) को विशेष कार्य बल अभियान का एसपी बनाया गया है।

### निगमबोध घाट पर अंतिम संस्कार मनमोहन सिंह का अपमान : राहुल

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का शनिवार को दिल्ली के निगमबोध घाट पर राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। इस मौके पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सहित सत्ता पक्ष और विपक्ष के कई बड़े नेता मौजूद थे। अंतिम संस्कार के बाद लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने निगमबोध घाट पर उनके अंतिम संस्कार को पूर्व प्रधानमंत्री का अपमान बताया। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, भारत माता के महान सपूत और सिख समुदाय के पहले प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी का अंतिम संस्कार आज निगमबोध घाट पर करवाकर वर्तमान सरकार द्वारा उनका सरासर अपमान किया गया है। कांग्रेस नेता ने लिखा कि मनमोहन सिंह एक दशक के लिए देश के प्रधानमंत्री रहे। उनके दौर में देश आर्थिक महाशक्ति बना और उनकी नीतियां आज भी देश के गरीब और पिछड़े वर्गों का सहारा हैं। आज तक सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों की गरिमा का आदर करते हुए उनके अंतिम संस्कार अधिकृत समाधि स्थलों में किए गए हैं, ताकि आम लोग बिना किसी असुविधा के अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि दे पाएं। उन्होंने अपने पोस्ट में लिखा कि डॉ. मनमोहन सिंह हमारे सर्वोच्च सम्मान और समाधि स्थल के हकदार हैं। सरकार को देश के इस महान पुत्र और उनकी गौरवशाली कौम के प्रति आदर दिखाना चाहिए था। उल्लेखनीय है कि पूर्व प्रधानमंत्री के अंतिम संस्कार के दौरान परिसर में ह्यडॉ. मनमोहन सिंह अमर रहेऔर डॉ. साहब अमर रहे के नारे गूंजते रहे। पूर्व प्रधानमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता रहे डॉ. मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि देते हुए राहुल गांधी ने कहा, आज डॉ. मनमोहन सिंह को अंतिम विदाई दी। डॉ. मनमोहन सिंह की विनम्रता, मार्गदर्शन और देश के लिए उनका योगदान इतिहास के पन्नों में सदा जीवित रहेंगे।

### बिहार में सियासी उलटफेर से तेजस्वी का इनकार

पटना। बिहार में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने शनिवार को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर जमकर सियासी हमला बोला। उन्होंने किसी भी प्रकार के सियासी उलटफेर से इनकार करते हुए इस तरह की चचाओं को बेकार की बातें करार दिया और कहा कि इसमें कोई दम नहीं है। उन्होंने कहा कि सीएम से बिहार ही नहीं चल रहा है। पटना में पत्रकारों से चर्चा के दौरान पूर्व उपमुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार में कोई सरकार है ही नहीं। जो सरकार है उसे होश ही नहीं है। उन्होंने कहा, अब यहां चर्चा करनी चाहिए कि बिहार में सरकार है भी या नहीं। अगर है तो मुख्यमंत्री को लीड करना चाहिए। लेकिन, अब वे निर्णय लेने लायक नहीं रह गए हैं। किसी भी विषय पर वे निर्णय नहीं ले पा रहे हैं, तो आखिर सरकार कौन चला रहा है? उन्होंने कहा, चंद रिटायर्ड अधिकारी और दो नेता दिल्ली में और दो नेता पटना में हैं, वही लोग अपने फायदे के लिए निर्णय ले रहे हैं। उनको बिहार से कोई मतलब नहीं है। भाजपा से तालमेल है। उनको अपना देखना है। तेजस्वी यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री यात्रा पर निकले हैं, लेकिन कोई संवाद नहीं है। कोई पत्र का भी जवाब नहीं दे रहे। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पत्र का भी जवाब भी संजय झा दे रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि नीतीश कुमार अब होश में नहीं हैं। उनके चेहरे को आगे करके सरकार चलाई जा रही है। यही सच्चाई है। बीपीएससी अभ्यर्थियों के आंदोलन पर उन्होंने कहा कि अगर पेपर लीक हुआ है तो परीक्षा तो रद्द होनी चाहिए। एक केंद्र की परीक्षा रद्द करते हैं, बाकी केंद्रों की परीक्षा क्यों रद्द नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि एक साल हो गए, एक युवक को नौकरी नहीं मिली है। बिहार में प्रशासनिक अराजकता व्याप्त है।

### भारत-नेपाल की सेनाएं करेंगी संयुक्त सैन्य अभ्यास सूर्य किरण

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। भारतीय सेना के 334 जवानों की एक टुकड़ी शनिवार को नेपाल के लिए रवाना हुई। भारतीय सेना की यह टुकड़ी नेपाल में बटालियन स्तरीय संयुक्त सैन्य अभ्यास सूर्य किरण में भाग लेगी। दोनों देशों के बीच यह संयुक्त सैन्य अभ्यास का 18वां संस्करण है। यह युद्धाभ्यास 31 दिसंबर 2024 से 13 जनवरी 2025 तक नेपाल के सलझंडी में आयोजित किया जा रहा है। सूर्य किरण अभ्यास का उद्देश्य जंगल में युद्ध, पहाड़ों में आतंकवाद विरोधी अभियानों और संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अंतर्गत मानवीय सहायता और आपदा राहत में अंतर-संचालन क्षमता को बढ़ाना है। अभ्यास में परिचालन तैयारियों, विमानन पहलुओं, चिकित्सा प्रशिक्षण और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इन गतिविधियों के माध्यम से सैनिक अपनी परिचालन क्षमताओं को बढ़ाएंगे। इसके साथ ही दोनों सेनाओं के जवान अपने युद्ध कौशल को निखारेंगे। इस अभ्यास के माध्यम से भारत और नेपाल के सैन्य कर्मी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में एक साथ काम करने के लिए अपने समन्वय को मजबूत करेंगे। यह एक वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम है, जो दोनों देशों में बारी-बारी से आयोजित किया जाता है। भारतीय सेना की टुकड़ी का नेतृत्व 11वीं गोरखा राइफल्स की एक बटालियन द्वारा किया जाएगा। वहीं, नेपाली सेना की टुकड़ी का प्रतिनिधित्व श्री जंग बटालियन द्वारा किया जाएगा। अभ्यास सूर्य किरण का यह संस्करण भारतीय सेना के प्रमुख, जनरल उपेंद्र द्विवेदी की सफल नेपाल यात्रा और नेपाली सेना के सेना प्रमुख जनरल अशोक राज सिगडेल की भारत यात्रा के बाद आयोजित किया जा रहा है। यह अभ्यास भारत और नेपाल के सैनिकों को विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान करने, सर्वोत्तम व्यवस्थाओं को साझा करने और एक-दूसरे की परिचालन प्रक्रियाओं की गहरी समझ को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान करेगा।

# अप्रैल से सितंबर के बीच 28 गुना बढ़े बैंक धोखाधड़ी के मामले : आरबीआई

**धोखाधड़ी**

## इस अवधि में बैंक धोखाधड़ी की कुल 18,461 घटनाएं हुई

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। भारतीय रिजर्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार इस वित्त वर्ष की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में बैंक धोखाधड़ी के मामलों में तेजी से वृद्धि हुई है। इस अवधि में बैंक धोखाधड़ी की कुल 18,461 घटनाएं हुईं, जिनकी राशि 21,367 करोड़ रुपये थी। रिपोर्ट के अनुसार, यह पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि की तुलना में मामलों की संख्या (वित्त वर्ष 24 के अप्रैल-सितंबर में 14,480) में लगभग 28 प्रतिशत की वृद्धि और कुल राशि (2,623 करोड़ रुपये) में आठ गुना से अधिक की वृद्धि है। केंद्रीय बैंक ने अपनी ट्रेंड एंड प्रोग्रेस ऑफ बैंकिंग इन इंडिया रिपोर्ट में जानकारी दी है कि वित्त वर्ष 2023-24 में, इंटरनेट और कार्ड फ्रॉड कुल धोखाधड़ी राशि का 44.7 प्रतिशत और कुल मामलों का 85.3 प्रतिशत हिस्सा रहा।

रिपोर्ट में आगे कहा गया कि निजी क्षेत्र के बैंकों ने सभी धोखाधड़ी के मामलों में से 67.1 प्रतिशत की रिपोर्ट की, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को सबसे अधिक वित्तीय प्रभाव का सामना करना पड़ा। रिपोर्ट में बताया गया है कि 2023-24 में कार्ड और इंटरनेट धोखाधड़ी का हिस्सा सबसे अधिक था। जब प्रवर्तन कार्रवाइयों की बात आती है, तो बैंकों पर लगाए गए कुल जुमार्ने 2023-24 में 86.1 करोड़ रुपये तक पहुंच गई। एफबी और छोटे वित्तीय बैंकों (एसएफबी) को छोड़कर सभी बैंक समूहों में 2023-24 के दौरान विनियमित संस्थाओं (आरई) पर लगाए गए जुमार्ने के मामलों में वृद्धि हुई। आरबीआई की रिपोर्ट में कहा गया कि 2023-24 में कुल जुमार्ना राशि दोगुनी से अधिक हो गई, जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंक सबसे आगे रहे। सहकारी बैंकों पर लगाए गए जुमार्ने की राशि में वर्ष के दौरान कमी आई, जबकि जुमार्ना लगाने के मामलों में वृद्धि हुई। धोखाधड़ी फाइनेंशियल सिस्टम के लिए प्रतिष्ठा से जुड़े जोखिम, परिचालन जोखिम, व्यावसायिक जोखिम और वित्तीय स्थिरता के साथ ग्राहक विश्वास को लेकर कई चुनौतियां पेश करती हैं। आरबीआई ने कहा, आगे बढ़ते हुए, बैंकों को अपने जोखिम प्रबंधन मानकों, आईटी गवर्नेंस व्यवस्थाओं और ग्राहकों को जोड़ने तथा लेनदेन निगरानी प्रणालियों को मजबूत करने की निरंतर आवश्यकता है, ताकि संदिग्ध और असामान्य लेनदेन सहित बेईमान गतिविधियों पर लगाम लगाई जा सके। केंद्रीय बैंक डिजिटल लेंडिंग ऐप्स के सार्वजनिक संग्रह पर काम कर रहा है, ताकि ग्राहकों को इन सेवाओं की वैधता सत्यापित करने में मदद मिल सके।

## संक्षिप्त खबरें

### विद्यालय में हुआ वृक्षारोपण कार्यक्रम

फतुहा। शनिवार को प्रखंड के उसफा स्थित अनुग्रह नारायण सर्वोदय उच्च विद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें छात्रों ने इको क्लब द्वारा वृक्षारोपण किया। जिसमें छात्रों ने कई फलदार एवं इमारती पौधे लगाए। वहीं छात्रों ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि देते हुए स्व. मनमोहन सिंह का चित्र बनाकर प्रदर्शित किया। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रकाश चन्द्र, शिक्षकों में राजेश कुमार, शमशेर पठान, रेणु कुमारी, अजय कुमार एवं सैंकड़ों छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

### रंजीत यादव उर्फ दही गोप एवं गोरव के हत्यारे को पुलिस गिरफ्तार करें पूर्व सांसद राम कृपाल यादव

दानापुर। नगर के अंतर्गत शनिवार को पूर्व सांसद रामकृपाल यादव और भाजपा नेता भाई सनोज यादव ने छावनी के पूर्व उपाध्यक्ष रंजीत कुमार और उसके साथी गोरखनाथ के शोकाकुल परिवार को सांत्वना देने पहुंचे।यादव ने कहा कि रंजीत छोटे भाई की तरह था। गरीबों के दुःख सुख में हमेशा तत्पर रहता था। घटना के एक सप्ताह बाद भी अभी अपराधियों को गिरफ्तार नहीं किया गया है। रंजीत का जान बचाने में निर्दोष लड़का गोरखनाथ को भी अपराधियों ने निशाने पर लेते हुए गोली मारकर हत्या कर दिया। उस घर में कमाने वाला यही लड़का था जो अपने परिवार को भरण पोषण करता है। भाजपा नेता सनोज ने गोरखनाथ के परिजन को वित्तीय सहायता किया पूर्व सांसद ने कहा कि एनडीए सरकार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का सपना है कि कोई अपराधी, अपराध करने वाला बचें नहीं या तो शांत रहे या पुलिस प्रशासन ऊपर का रास्ता दिखायेगा।दानापुर में एक महीने के अंदर चार हत्याएं हो चुकी है। बता दें कि पेठिया बाजार निवासी छावनी परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष रंजीत यादव को अपराधियों ने उस वक्त पेठिया बाजार के पास घर गोली मारकर गंभीर रूप से जख्मी कर दिया था। उपचार के दौरान पटना अस्पताल में मौत हो गई थी। उसी समय गोली की आवाज सुनकर बचाने गए गोरख नाथ को भी अपराधियों ने सीने में गोली मारकर हत्या कर दिया था। साथ में अजीत यादव,गुंजन जयसवाल समेत अन्य लोग थे।

### बंद घर का तालाकाट कर लाखों रुपए के जेवरात लेकर चोर हुए फरार

दानापुर। थाना क्षेत्र के अंतर्गत आनंद बाजार में चोरों ने बंद घर का ताला काटकर लाखों रूपए की जेवरात चुरा लिया। घटना की जानकारी पड़ोसी द्वारा मिली। गृहस्वामी आशीष कुमार ने अज्ञात के खिलाफ लिखित शिकायत दर्ज कराया है। बताया कि मां पिता तीर्थ पर गए थे।इस बीच मै और पत्नी निजी कार्य से बाहर चले गए।घर बंद रहने के कारण चोरों ने सभी कमरे का ताला काटकर एक एक कमरे में रखा सारा सामान को खंगाल दिया।चोरों ने तीन सोने का हार, सोने का तीन झुमका, दस सोने की अंगूठी, एक सोने का मांगटीका,एक सोने का चैन,दो सोने का कंगन, चाँदी का सेट चार,चाँदी का मछली दो समेत अन्य सामान है। पुलिस मामला दर्ज कर छानबीन करने में जुट गई।

### बंदियों को प्रमाण पत्र वितरण को लेकर कार्यक्रम किया

दानापुर। नगर के अंतर्गत उपकारा में पूर्व में प्रशिक्षित बंदियों को प्रमाण पत्र वितरण को लेकर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ काराधीक्षक अनिल कुमार व कार्यपालक दण्डाधिकारी लोकेश कुमार ने किया। कार्यक्रम में सुरक्षा अंकेक्षण, बंदी दरबार, मेगा हेल्थ कैंप एवं कारा मे दिए गए बकरी पालन के प्रशिक्षण के उपरांत प्रतिक्षित बंदियो को प्रमाण- पत्र वितरित किया गया। काराधीक्षक अनिल कुमार कार्यपालक दण्डाधिकारी लोकेश कुमार प्रशिक्षित बंदियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया। उन्होंनें बंदियों की उज्जवल भविष्य की कामना की। इस मौके पर सहायक अभियंता भवन निर्माण, कनीय अभियंता विद्युत विभाग, थानाध्यक्ष प्रशांत कुमार भारद्वाज एवं कारा चिकित्सक डा निधि अग्रवाल, सहायक अधीक्षक विमल कुमार समेत कारा कर्मी उपस्थित थे।

### श्री छोटी पटन देवी मंदिर में रक्तदान शिविर आज

पटना सिटी (प्राकि)। देश के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व अटल बिहारी वाजपेई, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय के सौवीं जयंती और गुरु गोविंद सिंह जी महाराज की स्मृति में पीड़ित मानवता की सेवा में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन रविवार को किया गया है। श्री पटनदेवी जी गो मानस सेवा संस्थान माहुरी वैश्य संघ के संयुक्त तत्वावधान में शक्ति पीठ स्थल श्री छोटी पटनदेवी मंदिर परिसर में इसका आयोजन किया गया है। रक्तदान का उद्देश्य थैलेसीमिया, डेंगू, हृदय रोग, कैंसर और दुर्घटनाओं में घायल मरीजों की सहायता को लोग अपना स्वैच्छिक रक्तदान कर सकेंगे। शिविर रविवार को पूर्वाह्न 10 बजे से अपराह्न चार बजे तक चलेगा।

# अतिक्रमण हटाओ अभियान में 13 ठेला व 8,500 जुमार्ना वसूला

## अशोक राजपथ पर ट्रेफिक स्मूथ, सुदर्शन पथ में अवैध पार्किंग, गुमटी व गैराज

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

प्रमंडलीय आयुक्त मयंक वरबड़े के निर्देश पर नगर निगम के पटना सिटी और अजीमाबाद अंचल के द्वारा लगातार अतिक्रमण के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। चलाए गए अतिक्रमण उन्मूलन अभियान के दौरान किसी तरह की कोताही नहीं बढ़ती जा रही है प्रकाश पर्व को लेकर और प्रमंडलीय आयुक्त के निर्देश पर अभियान का असर यह है कि अशोक राजपथ सुदर्शन पाठ गुरु गोविंद सिंह पथ मोर्चा रोड पटना साहिब स्टेशन रोड पर लगता ही नहीं है कि या वही रोड है जहां सरपट वाहन दौड़ रहा है जाम ना के बराबर लग पा रहा है। सिटी अंचल के अतिक्रमण प्रभारी रितेश कुमार ने बताया कि शनिवार को चौक शिकारपुर से अभियान शुरू किया गया और पटना साहिब स्टेशन मोर्चा रोड हाजीगंज से होते हुए झौगंज और कंगाणघात तक अभियान चलाया गया इस दौरान तीन ठेला को जप्त किया गया जबकि 3000 जुमार्ना किया गया है वहीं दूसरी ओर अजीमाबाद अंचल के टीम प्रभारी बिट्टू कुमार की देखरेख में गायघाट पुलिस चेक पोस्ट से शुरू करके डंका इमली नहर होते हुए कुमरार के संदलपुर गोलंबर और बिस्कोमांग गोलंबर तक अभियान चलाया गया इस दौरान कुल 10 ठेला और दो मुर्गा की जाल जब्त किया गया है साथ ही 5500 जुमार्ना भी वसूल किया गया है। लगातार अतिक्रमण अभियान चलाए जाने का असर यह है कि अशोक राजपथ पर जहां पश्चिम दरवाजा से लेकर मारूफगंज मोड़ के बीच ट्रैफिक जाम मिलता था वह अब यात्रा निरापद हो गया है अब ना के बराबर जाम देखने को मिल पा रहा है हालांकि अब भी ख्वाजा कल के पानी टंकी मोड़ से लेकर जनता होटल के बीच लोग मानने को तैयार नहीं है और फुटपाथ को अतिक्रमण कर कारोबार कर ही रहे हैं। दूसरी ओर सुदर्शन पाठ के चौक शिकारपुर नल से लेकर तुलसी मंडी के बीच सड़क किनारे ठेला पिकअप वैन बैंड बाजा का ठेला विभिन्न ढोल ताशा वाले का चौकी घूमती आदि लगाए जाने और मोटर गैराज के कारण जाम की स्थिति बनती जा रही है विद्युत होगी वैवाहिक मौसम नहीं होने के कारण इन दोनों बैंड बाजा का ठेला या कारोबार में भी थोड़ा मंदिर देखा जा रहा है नीतीश तन लोग सड़क किनारे हैं वहां से लेकर बैंड बाजा का ठेला आदि लगाकर निश्चित हो जाते हैं मगर इसका सीधा असर ट्रैफिक जाम के रूप में देखा जा रहा है।

# पूर्व प्रधानमंत्री के निधन पर लोकमंच ने जताया गहरा शोक

प्रात :किरण संवाददाता

पटना : भारतीय लोकमंच पार्टी के राष्ट्रीय प्रधान महासचिव कुणाल सिकंद पूर्व प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह के निधन पर घरी शोक संवेदना व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि मनमोहन सिंह जैसे लोग धरती पर यदा कदा ही आते है। जब देश की आर्थिक स्थिति खराब हुई थी तो डॉ० मनमोहन सिंह ने अपने विवेक और अनुभव से देश को हर विकट स्थिति से निकाल कर लाये और देश की आर्थिक स्थिति को सुधार किये। जब वो देश के वित्त मंत्री थे तो उन्होंने डारेक्ट सेलिंग को ले कर योजना बनाये और आज उनकी ही देन है कि डारेक्ट सेलिंग इंडस्ट्रीज में आज करोड़ो लोग डारेक्ट सेलिंग के माध्यम से रोजगार प्राप्त कर जीवन यापन कर रहें और लोगो को काम मिल रहा है। उनका अनंत यात्रा पर जाना देश के लिए बहुत बड़ी क्षति है जिसकी भड़पाई नही किए जा सकती है इस दुख की घरी में ईश्वर उनके परिवार और चाहने वालो को सम्भलने की शक्ति दे और डॉ० मनमोहन सिंह जी की आत्मा को उनके श्री चरणों मे स्थान प्रदान करें।

## रामजी बिंद के स्मृति में एक दिवसीय फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया

प्रात :किरण संवाददाता

मसौढ़ी।स्वर्गीय फुलेन रामजी बिंद की 29वीं पुण्यतिथि पर युवा शक्ति विकास केंद्र सांडा में शनिवार को बरनी खेल मैदान में पटना जीएसबी महिला फुटबॉल क्लब बनाम झारखंड महिला फुटबॉल क्लब मधुपुर के बीच एक दिवसीय दिवसीय फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया।जिसमें निर्धारित 90 मिनट के खेल के बाद मैच 1-1 से बराबरी पर रहा।फिर रैफरी ने पेनल्टी शूटआउट करने का फैसला किया।पेनल्टी किक में महिला फुटबॉल क्लब मधुपुर झारखंड की टीम ने सबसे अधिक गोल दागा। जिसमें निर्णायक मंडल के द्वारा मधुपुर झारखंड की टीम को विजेता घोषित किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता के अशोक कुमार आर्य व मंच का संचालन युवा शक्ति विकास केन्द्र के सचिव राजेश कुमार बिंद ने की.वही कार्यक्रम का उद्घाटन औरंगाबाद सांसद सह संसदीय दल राजद नेता अभय कुशवाहा मुख्य अतिथि स्थानीय विधायिका रेखा देवी विशिष्ट अतिथि बिहार प्रदेश राजद उपाध्यक्ष गौतम कुमार बिंद पटना जिला अध्यक्ष अंजू देवी ने की.मौके पर उपस्थित लोगों ने उनके तैल्य चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी.वक्ताओं ने उनके कृतित्व और व्यक्तित्व प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अध्यक्षता कर रहे अशोक कुमार आर्य ने कहा कि आजकल युवा पारंपरिक खेलों से दूर होते जा रहे हैं, लेकिन ऐसे आयोजनों से ग्रामीण क्षेत्रों की प्रतिभाओं को एक मंच मिलता है। उन्होंने खेल भावना को महत्व देते हुए कहा कि मैदान में हार-जीत दोनों होते हैं, लेकिन खिलाड़ियों को हमेशा खेल भावना का प्रदर्शन करना चाहिए।बरनी खेल मैदान पर 28दिसंबर से लेकर 31दिसंबर तक विभिन्न प्रकार की खेल आयोजित किया जाएगा। इस मौके पर जीप सदस्य उपेंद्र कुमार बिंद चंदन कुमार वरिष्ठ पत्रकार नागेंद्र नाथ शर्मा पूर्व मुखिया धनरूआ योगेंद्र चंद्रवंशी राजद प्रखंड अध्यक्ष संजय कुमार पलटन सिंह लाला यादव वार्ड पार्षद रेनू देवी सहित अन्य लोग भी मौजूद रहे।

## पूर्व पीएम डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर कांग्रेस ने जताया शोक, प्रखंड अध्यक्ष बोले- देश ने खोया महान नेता



प्रात :किरण संवाददाता

मसौढ़ी।भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर प्रखंड अध्यक्ष राजेश कुमार उर्फ पिंटू रजक की अध्यक्षता में शनिवार को शोक सभा आयोजित की गई। पार्टी कार्यकर्ताओं ने डॉ.मनमोहन सिंह के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।इस मौके पर दो मिनट का मौन रखकर उनके योगदान को याद किया गया।शोक सभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष श्री रजक ने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह ने अपनी नीतियों और फैसलों से भारत को मजबूत किया। उन्होंने कहा,ह्वडॉ. सिंह एक सफल अर्थशास्त्री, दूरदर्शी राजनेता और सौम्य व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी नीतियों ने भारत को विश्व शक्ति की कतार में खड़ा किया। उनकी सज्जनता और दृढ़ता भारतीय राजनीति के लिए प्रेरणा स्रोत है।उनके निधन से पार्टी और देश को जो अपूरणीय क्षति हुई है वह इस मौके पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेत्री इंद्रमणि देवी प्रदेश युवा कांग्रेस महासचिव मोहम्मद आरफराज साहिल पटना जिला ग्रामीण कांग्रेस उपाध्यक्ष उदय चंद्रवंशी अलख नारायण पांडे शिवपूजन सिंह अजीत सिंह डॉक्टर सुनील यादव प्रोफेसर धर्मेंद्र यादव धनरूआ कांग्रेस पूर्व प्रखंड अध्यक्ष मदनपाल यादव अबोध कुमार उर्फ शेरा चंद्रवंशी रविंद्र धारी बिंद सोनू चंद्रवंशी सोहन चंद्रवंशी अमित कुमारसमेत अन्य शामिल थे। सभी ने डॉ. मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके योगदान को याद किया।

# राज्य के 21 जिलों में 208 युवा क्लिनिक संचालित

## पोग्स, फोगसी, आईसोपार्ब एवं सिफार के तत्वावधान में किशोर स्वास्थ्य पर बैठक आयोजित

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। किशोर स्वास्थ्य पर जनमानस में जागरूकता का प्रचार-प्रसार फैलाने के उद्देश्य से पोग्स, फोगसी, आईसोपार्ब एवं सिफार के तत्वावधान में किशोर स्वास्थ्य पर बैठक का आयोजन शनिवार को आईएमए हॉल में किया गया। बैठक में राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम अंतर्गत किशोर किशोरी स्वास्थ्य, माहवारी स्वच्छता, किशोरियों में गर्भधारण एवं पोग्स, फोगसी एवं आईसोपार्ब द्वारा किशोर-किशोरी स्वास्थ्य में सहभागिता पर चर्चा की गयी। बैठक में वक्ताओं द्वारा बताया गया कि बिहार एक युवा राज्य है जहाँ करीब 22 प्रतिशत आबादी किशोरों की है. इस समूह में स्वास्थ्य पर जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से राज्य के 21 जिलों में 208 युवा क्लिनिक संचालित संचालित किये जा रहे हैं जिनके माध्यम से किशोरों के बीच स्वास्थ्य संबंधी सभी पहलुओं की जानकारी दी जा रही है. पियर एजुकेशन के माध्यम से राज्य के 5 जिलों गया, जमुई, सीतामढ़ी, कटिहार एवं पुर्णिया में जागरूकता फैलाने के प्रयास किया जा रहा है. इसके अंतर्गत 6 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है और फिर यह ग्रुप किशोर स्वास्थ्य पर जागरूकता एवं शिक्षा फैलाने के प्रयास करता है. बैठक में बताया गया कि स्कूल हेल्थ एंड वेलनेस प्रोग्राम राज्य के 22 जिलों में संचालित किया जा रहा है। बैठक को संबोधित करते हुए पोग्स की सचिव डॉ. अमिता सिन्हा ने कहा कि लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाना आवश्यक है क्योंकि तब ही किशोरियों में एनीमिया की समस्या से निजात पाया जा सकता है. समुदाय में लड़के-लड़कियों में भेदभाव समाप्त करना जरुरी है ताकि बालिकाओं एवं किशोरियों के स्वास्थ्य एवं उनके पोषण की आपूर्ति हो सके. फोगसी में किशोर स्वास्थ्य की चेयरपर्सन डॉ. सुप्रिया जयसवाल ने कहा कि 78 फीसदी किशोरियां सेनेटरी पैड के बारे में जानती हैं. उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार द्वारा 2011 में माहवारी स्वच्छता कार्यक्रम की शुरूआत की गयी. इसके लिए जागरूकता की अहम भूमिका है और इस विषय के बारे में खुलकर बिना संकोच के बातचीत करने की जरुरत है। बैठक को संबोधित करते हुए आईसोपार्ब की अध्यक्ष एवं एम्स पटना में स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. हिमाली सिन्हा ने कहा कि किशोरावस्था में गर्भधारण माँ एवं उसके बच्चे दोनों में एनीमिया का खतरा उत्पन्न करता है. उन्होंने कहा कि किशोरियों को संवेदिकरण जरुरी है ताकि वह कम उम्र में गर्भधारण के खतरे को समझ सकें और जागरूक हों. उन्होंने कहा कि स्कूलों में गर्भ निरोधकों के बारे में जानकारी देना एवं जागरूकता फैलाना जरुरी है. बैठक में डॉ. मीना सामंत, पोग्स की अध्यक्ष ने बताया कि संस्था द्वारा इससे संबंधित चिकित्सकों को हर महीने प्रजनन एवं मातृ स्वास्थ्य पर जागरूक किया जाता है। बैठक में राज्य स्वास्थ्य समिति से राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम से जुड़ी मिनी, सिफार की टीम के साथ पिरामल स्वास्थ्य के मुकेश, सी 3 के प्रतिनिधि एवं मीडिया के प्रतिनिधि शामिल रहे।

## पटना सिटी व्यापार मंडल नगर कीर्तन का करेगा स्वागत

पटना सिटी (प्राकि)। पटना सिटी व्यापार मंडल दशमेश पिता गुरु गोविंद सिंह जी महाराज के प्रकाश पर्व पर गायघाट से निकलने वाले नगर कीर्तन का स्वागत करने का निर्णय लिया है। यह निर्णय मंडल की कार्यसमिति की टेढ़ी घाट स्थित कार्यालय में अध्यक्ष प्रदीप कुमार सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में लिया गया। इसका संचालन महासचिव अवधेश श कुमार सिन्हा ने करते हुए बताया कि दशमेश मिता के प्रकाश उत्सव पर पांच जनवरी को गायघाट से नगर कीर्तन निकाला जाएगा, जो अशोक राजपथ के रास्ते तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब पहुंचता है। इस दौरान मच्छरहट्टा मंडी में पंज प्यारों और पालकी साहिब पर विराजित गुरु ग्रंथ साहिब पर माला अर्पित कर स्वागत और बंदन किया जाएगा। साथ ही संगतो के बीच खाद्य सामग्री का वितरण किया जाएगा। इसके लिए स्वागत समिति का गठन किया गया है, जिसके संयोजक कन्हाई पटेल के अलावा अरुण मिश्रा, राजकुमार शर्मा, शारदानंद प्रसाद, वीरेंद्र सिंह बनाए गए हैं।

# बड़ा पाइप व टंकीनुमा कंटेनर में रखा दो लाख का विदेशी शराब जब्त

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता



उत्पाद विभाग की टीम ने एक बार फिर बाइपास थाना क्षेत्र के करमलीचक टोल प्लाजा के पास से एक पिकअप वैन से करीब दो लाख का विदेशी शराब जब्त किया है। उत्पाद के सहायक अधीक्षक प्रेम प्रकाश ने बताया कि उत्पाद विभाग की टीम उत्पाद निरीक्षक कुलवंत कुमार के नेतृत्व में राष्ट्रीय उच्च पथ 30 पर गश्त कर रहे थी। इसी दौरान करमलीचक टोल प्लाजा के पास गश्ती के दौरान ही पुलिस की गाड़ी को देखकर पिकअप वैन का चालक हड़बड़ा गया। इससे टीम को शक हुआ और उक्त वाहन को रुकवाया गया। जब वाहन की तलाशी ली गई, तो उस गाड़ी में प्लास्टिक के दो बड़े पाइप के अंदर शराब रखा हुआ था। इसके अलावा एक प्लास्टिक का बड़ा गोल टंकीनुमा आकार का कंटेनर भी था, जिसमें भी विदेशी शराब था। इस दौरान कुल 586 बोतल/पीस विदेशी शराब व बीयर जब्त किया गया, जिसकी मात्रा 148.18 लीटर है। शराब की कीमत करीब दो लाख आंकी गई है। टीम ने पिकअप वैन, जिस पर पंजीयन बीआर 03के 3805 लिखा था, को जब्त कर लिया है। साथ ही वाहन के चालक नदी थाना क्षेत्र के सबलपुर का रहने वाला संदीप कुमार को गिरफ्तार कर लिया गया है। उससे पूछताछ कर आगे की कार्रवाई की जा रही है। छापेमारी टीम में उत्पाद निरीक्षक कुलवंत कुमार, एएसआई शशि ठाकुर, साहेब गुप्ता, ब्रजकिशोर ठाकुर, सुनील कुमार व विभाकर शामिल थे।

## मारपीट के बाद गोली चलने से पंकज घायल, चार नामजद

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

सुल्तानगंज थाना क्षेत्र के बकरी बाजार के पास मारपीट की घटना हुई। इसी दौरान गोलीबारी भी की गयी। गोली लगने से युवक पंकज कुमार जख्मी हो गया। उसका इलाज पीएमसीएच में कराया गया है। घायल के बयान पर पुलिस ने चार को नामजद कर मामले की छानबीन कर रही है। बकरी बाजार स्थित छात्रावास में रहने वाला युवक पंकज ने पुलिस को बताया कि साथी प्रकाश कुमार उर्फ विक्की और नितांशु के साथ बाजार में खरीदारी करने के लिए निकला था। इसी दौरान बकरी बाजार के समीप तीन-चार की संख्या में रहे युवक घर में मारपीट करने लगे। मारपीट करने वाले युवकों का कहना था कि वह सब नशीला पदार्थ बेचते हैं, तो यह पुलिस को सूचना दे देता है। इसी बात को लेकर मारपीट के दौरान उज्जल कुमार ने गोली चला दी। गोली पंकज को कमर के पास लगी है। पुलिस ने बताया कि घायल के बयान पर उज्जवल, रोहित उर्फ कल्लू, सोनू और रवि के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। घायल का इलाज पीएमसीएच में कराया गया है। फिलहाल वह खतरे से बाहर है।

## महर्षि विवि के प्रतिनिधियों ने गुरुघर में लगायी हाजिरी

पटना सिटी (प्राकि)। महर्षि विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों ने कॉरपोरेट अफेयर्स निदेशक डॉ रतीश गुप्ता और शिवम यादव ने तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में शनिवार को मत्था टेका। दोनों को ग्रंथी ने गुरुघर का आशीष सरोपा दिया। प्रतिनिधियों ने स्वच्छ भारत मिशन के तहत दो बड़ा स्वच्छता पात्र डस्टबिन गुरुघर में भेंट किया। निदेशक डॉ रतीश गुप्ता ने बताया कि संस्थान द्वारा कुलाधिपति अजय प्रकाश श्रीवास्तव के नेतृत्व में दो नयी यूनिविर्सटी और कार्य करेगी। इसमें अयोध्या में शुरू होने वाली महर्षि महेश योगी रामायण यूनिवर्सिटी और कानपुर में महर्षि महेश योगी एग्रीकल्चर यूनिविर्सटी शामिल है। संयोजक सह होली विजन ग्रूप ऑफ स्कूल के निदेशक संतोष कुमार शर्मा ने अतिथियों का स्वागत करते कहा कि शिक्षा जगत के उत्थान के लिए रविवार को एजुकेशन कॉन्क्लेब होगा।

# रामदेव महतो मेमोरियल ओपन स्टेट ताइक्वांडो प्रतियोगिता शुरू

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना जिला ताइक्वांडो संघ के तत्वावधान में पांचवीं स्व रामदेव महतो मेमोरियल ओपन स्टेट ताइक्वांडो चैम्पियनशिप का उद्घाटन मंगल तालाब स्थित रामदेव महतो सभागार में शनिवार को किया गया।इसका उद्घाटन बिहार विधानसभा के अध्यक्ष सह विधायक नंदकिशोर यादव एवं विशिष्ट अतिथि महापौर श्रीमती सीता साहू ने किया। मौके पर पटना जिला ताइक्वांडो संघ के अध्यक्ष सतीश कुमार राजू एवं पाटलिपुत्र परिषद के महासचिव संजीव यादव भी मौजूद रहे। अतिथियों का स्वागत संघ के सचिव जेपी मेहता ने और संचालन प्रेम प्रकाश ने किया। इस दौरान विधानसभा अध्यक्ष नंदकिशोर यादव ने कहा कि खेल में पहले अभिभावक कहते थे कि खेलोगे कूदोगे होगे खराब और पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब। मगर आज पढ़ाई के साथ-साथ खेल उतनी ही जरूरी है। किशोर वय और युवाओं को खेलने से जहां शारीरिक और मानसिक रूप से शांति मिलती है, वहीं पढ़ाई में भी मन लगता है। लेकिन खेल प्रतियोगिता में हार और जीत लगी रहती है। शील्ड जीतने वाले को कभी घमंड नहीं करना चाहिए। उसे अगले प्रतियोगिता में भी और बेहतर करने का प्रयास करना चाहिए। जो मेडल पाने से वंचित रह गए, उन्हें और अधिक प्रयास व परिश्रम करना चाहिए, ताकि अगली प्रतियोगिता में वह इसके हकदार बन सकें। महापौर सीता साहू ने सभी खिलाड़ियों को आशीर्वाद दिया। साथ ही कहा कि खेल से अनुशासन बढ़ता है।

प्रतियोगिता में बिहार के विभिन्न जिलों से 300 बालक और बालिका वर्ग के खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं। प्रतियोगिता की खासियत यह है कि खिलाड़ियों को इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस के द्वारा मैच कराया जा रहा है। भारतीय ताइक्वांडो का प्रतिनिधित्व कर साउथ कोरिया से लौटे अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी मनजीत सिंह राठौर को मुख्य अतिथि के द्वारा सम्मानित किया गया। धन्यवाद ज्ञापन सतीश कुमार राजू ने किया। मौके पर रविशंकर मेहता, सुजीत कुशवाहा, विकास कु. गोल्डी, मनोज कुशवाहा, विकास सिंह, गांधी मेहता व अजय कुमार मौजूद रहे।

# विज्ञान प्रदर्शनी में बाल वैज्ञानिकों ने दिखाया हुनर

## मॉडल के जरिए प्रदर्शित की भविष्य की झलक

- फूड फेस्ट में बच्चों ने बनाए विभिन्न राज्यों के भोजन, डीसीएलआर समेत अन्यों की सराहना

प्रात :किरण संवाददाता

बिक्रम : प्रखंड क्षेत्र के गोपालपुर स्थित एसआर पब्लिक स्कूल में शनिवार को बाल विज्ञान मेले व फूड फेस्ट का आयोजन किया गया. स्कूल के करीब 150 से अधिक बाल वैज्ञानिकों ने इसमें भाग लेकर बेहतरीन मॉडल प्रस्तुत किए. विज्ञान मेले में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के बाल वैज्ञानिकों ने भाग लिया और विभिन्न श्रेणी के अलग-अलग मॉडल बनाए. मौके पर आयोजित समारोह का उद्घाटन पूर्व विज्ञान शिक्षक रामयतन शर्मा, पालीगंज डीसीएलआर जनक कुमार, विद्यालय के निदेशक विनय कुमार उर्फ गुड्डू सिंह, प्राचार्य आर के पांडे व गोपाल विद्यार्थी ने संयुक्त रूप से किया ` विज्ञान प्रदर्शनी में मॉडलों का अवलोकन करते हुए अतिथियों ने युवा दिमागों को उनके नवाचार और खोजों के लिए प्रोत्साहित किया ` वहीं डीसीएलआर जनक कुमार ने विज्ञान मेले के आयोजन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला. उन्होंने छात्रों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए कुछ नया आविष्कार और नवाचार के लिए भी प्रेरित किया. वहीं अभिभावकों ने भी विज्ञान मेले में बाल वैज्ञानिकों द्वारा प्रदर्शित बेहतरीन मॉडल का अवलोकन कर उनके प्रयासों की सराहना की. वहीं दूसरी ओर फूड फेस्टिवल में बच्चों की प्रतिभा देख लोग दंग रह गये। उनके द्वारा बनाए गये स्वादिष्ट व्यंजन का स्वाद चख लोगों ने खूब सराहना की। स्कूली बच्चों ने गाजर का हलवा, मोमोज, पानीपुरी, रायल पुरी, पोहा, फ्राईड राइस, पनीर चिली,लिट्टी चोखा समेत अन्य प्रकार के व्यंजन बनाए हुए थे। सभी वर्ग के बच्चे द्वारा बनाए गए अलग अलग राज्यों के खाना को अलग-अलग आकर्षक स्टॉल पर लगाया गया था। अभिभावक समेत अतिथियों ने बच्चों के द्वारा बनाए गए व्यंजनों का लुफ्त उठाया व उनके हुनर को खूब सराहा । मौके पर विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिकाओं समेत सैंकड़ों अभिभावक मौजूद रहे ।

# दशमेश पिता के प्रकाश पर्व पर प्रभातफेरी गई गुरु का बाग

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज के 358वां प्रकाश पर्व को लेकर निकल रही प्रभातफेरी शनिवार को गुरुद्वारा गुरु का बाग गई। पंज प्यारे की अगुवाई में निकली प्रभातफेरी तख्तश्री हरिमंदिर साहिब से अरदास के बाद शुरू हुई। यह अशोक राजपथ के हाजीगंज, पूरब दरवाजा, मालसलामी बोरी दास की भट्ठी के रास्ते गुरुद्वारा गुरु का बाग पहुंची। यहां सबों ने दरबार साहिब में मत्था टेका और कीर्तन किया। यहां कीर्तन किया गया। चाय-नाश्ता के बाद वापस सभी तख्तश्री पटना साहिब लौटी। प्रभातफेरी में संयोजक सरदार तेजिंदर सिंह बग्गा, सरदार प्रेम सिंह, सरदार रणजीत सिंह व इन्द्रजीत सिंह बग्गा के साथ शामिल सिख श्रद्धालु शबद कीर्तन और जयकारा करते चल रहे थे। रविवार को निकलने वाली प्रभातफेरी तख्तश्री पटना साहिब से निकल कर गुरुद्वारा सोनार टोली जाएगी। इधर गुरुद्वारा बाललीला मैनी संगत में जत्थेदार संत बाबा कश्मीर सिंह भूरीवाले व बाबा सुखविंदर सिंह के निर्देश पर रविवार को विशेष कीर्तन दरबार का आयोजन किया गया है। गुरुद्वारा के प्रमुख बाबा गुरविंदर सिंह व बाबा गुरबंत सिंह ने बताया कि गुरु महाराज के चारों साहिबजादों की शहादत पर होने वाले कीर्तन दरबार में अमृतसर दरबार साहिब के रागी भाई गुरमैल सिंह और तख्तश्री पटना साहिब के भाई ज्ञान सिंह शबद कीर्तन व फतेहगढ़ साहिब के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी हरपाल सिंह और तख्त साहिब के ज्ञानी सुखदेव सिंह गुरु महाराज के साहिबजादों की शहादत पर कथा करेंगे।

## प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के उपाध्यक्ष बने जगजीत सिंह

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी (प्राकि)। यहां के रहने वाले सरदार जगजीत सिंह को बिहार प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ का उपाध्यक्ष बनाया गया है। इससे यहां के कांग्रेसियों में खुशी व्याप्त है। जगजीत सिंह विभिन्न संस्थाओं से भी जुड़े रहे हैं। उनके मनोनयन पर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष प्रवीण कुशवाहा ने खुशी जताते हुए कहा कि सिटी के कार्यकताओं को सम्मान देना 2025 चुनाव के लिए और मजबूती प्रदान करेगा। प्रदेश के पूर्व संगठन मंत्री डॉ विनोद कुमार अवस्थी, पटना महानगर अध्यक्ष शशि रंजन, प्रखंड अध्यक्ष अभय जायसवाल, शमीम अख्तर, वार्ड पार्षद मनोज मेहता, डॉ तुषार राज, पंडित राजेश शुक्ला, सरदार चंद्रपाल सिंह, मो फखरुद्दीन अहमद सुशील गुप्ता रामेश्वर पासवान, फकीरा यादव आदि ने जगजीत सिंह के मनोनयन पर खुशी जताते हुए कहा कि इससे अल्पसंख्यकों में कांग्रेस की पैठ बढ़ेगी।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com
राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण
पटना, रविवार, 29 दिसम्बर, 2024



# योजनाओं को समय से पूरा कराने के लिए सभी जरूरी कदम उठाएं अधिकारी: विजय

## जल संसाधन मंत्री ने विभागीय योजनाओं की प्रगति और व्यय की स्थिति की विस्तृत समीक्षा कर दिये जरूरी निर्देश

**पटना, प्रात: किरण संवाददाता**




जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी ने शनिवार को सिंचाई भवन में आयोजित बैठक में बिहार में बाढ़ से सुरक्षा तथा सिंचाई सुविधा के लिए जल संसाधन विभाग द्वारा कार्यान्वित 50 करोड़ रुपये से अधिक लागत वाली सभी योजनाओं की अद्यतन प्रगति के साथ-साथ उनके लिए आवंटन और व्यय की स्थिति की विस्तृत समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने सभी योजनाओं को समय पर पूरा कराने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जल संसाधन मंत्री ने कहा कि राज्य में उपलब्ध नदी जल का अधिकतम सदुपयोग मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की शीर्ष प्राथमिकताओं में शामिल है। जल संसाधन विभाग के आधिकारी बाढ़ से सुरक्षा और सिंचाई सुविधा के विस्तार की योजनाओं के लिए हुए बजट आवंटन के समानुपातिक व्यय सुनिश्चित कराएं। इन योजनाओं के ससमय कार्यान्वयन में यदि कहीं किसी तरह की बाधा आ रही है तो उसे चिह्नित करते हुए प्राथमिकता के आधार पर दूर कराएं। जिन योजनाओं के संवेदक द्वारा निर्धारित टाइम लाइन के अनुसार कार्य नहीं कर रहे है उनपर करवाई करने का निदेश दिया गया।साथ ही विभाग द्वारा दिये गये निदेश का अनुपालन का गहन अनुश्रवण करने का निदेश दिया गया। समीक्षा बैठक में प्रधान सचिव संतोष कुमार मल्ल, अपर सचिव नवीन, बाढ़ नियंत्रण के अभियंता प्रमुख मनोज रमण और सिंचाई सृजन के अभियंता प्रमुख नंद कुमार झा, योजना एवं मॉनीटरिंग के मुख्य अभियंता संजय कुमार ओझा सहित सभी वरीय अधिकारी मौजूद थे।

# युवाओं के भविष्य के साथ हो रहा खिलवाड़: तेजस्वी

## बिहार में सरकार नहीं है, महात्मा गांधी का हो रहा अपमान

**पटना, प्रात: किरण संवाददाता**



बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने एक बार फिर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर हमला किया है। बीपीएससी अभ्यर्थियों पर हुए लाठीचार्ज पर तेजस्वी यादव ने कहा कि बिहार में सरकार है कि नहीं, पहले इस पर चर्चा होनी चाहिए। यह जनता की सरकार नहीं, बल्कि भ्रष्टाचारियों की सरकार है। इस सरकार को मुख्यमंत्री नहीं चला रहे हैं। युवाओं पर लाठीचार्ज होता है, आंखों में आंसू होते हैं। लेकिन मुख्यमंत्री को कोई फर्क नहीं पड़ता है। तेजस्वी ने कहा कि 17 महीने की हमारी गठबंधन की सरकार में हमने 5 लाख लोगों को नौकरी दी थी। युवा खुश थे, कोई पेपर लीक नहीं हुआ। यहां कार्यक्रम में महात्मा गांधी का अपमान हो रहा है। बिहार में भ्रष्ट अधिकारी सरकार चला रहे हैं। पेपर लीक हो रहा है, लेकिन रि-एग्जाम नहीं कराया जा रहा है। हम बीपीएससी से सवाल पूछना चाहते हैं कि परीक्षा अगर रद्द की गई है तो सभी सेंटर की रद्द होनी चाहिए। युवाओं के भविष्य के साथ यह खिलवाड़ हो रहा है। छात्रों पर लाठीचार्ज किया जा रहा है। आज स्थिति यह हो गई है कि दसवीं की परीक्षा से लेकर बीपीएससी की परीक्षा यह लोग बिना पेपर लीक के नहीं करा पाते हैं। लोकतंत्र में नेता विपक्ष की चिट्ठी का जवाब मुख्यमंत्री को देना होता है। लेकिन, नीतीश कुमार हमारी चिट्ठी का जवाब नहीं दे रहे हैं। बिहारवासी ही नहीं, बल्कि देशवासी भी मान रहे है कि बिहार में सरकार नहीं है। प्रदेश के 20 बरस से मुख्यमंत्री छात्रों व परीक्षार्थियों को अपने अधीन पुलिस और अधिकारियों से थप्पड़ से लेकर लाठी-डंडों से पिटवा कर युवक-युवतियों को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक पीड़ा पहुंचा रहे है। नीतीश कुमार को भारत रत्न मिलने के सवाल पर उन्होंने कहा कि उन्हें मिलना चाहिए। पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के निधन पर तेजस्वी ने कहा कि कल रात यह दुखद समाचार मिला। हम लोग उनके चाहने वाले थे। देश को बहुत बड़ी क्षति हुई है। तेजस्वी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट किया। इतिहास आपको याद ही नहीं, बल्कि आपका दिवाना रहेगा सर। देश में आर्थिक सुधारों के जनक, आर्थिक बदलाव के शिल्पकार, मजबूत शख्सियत, महान राजनेता पूर्व प्रधानमंत्री व अभिभावक डॉ. मनमोहन सिंह जी के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त करता हूं। ईश्वर से प्रार्थना है कि पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। सरदार डॉ. मनमोहन सिंह जी ने दशकों तक हमारी अर्थव्यवस्था, देश की अभूतपूर्व प्रगति और विकास की ऐतिहासिक अध्यक्षता की। उनकी बुद्धिमता, सहनशीलता, दूरदर्शिता, विनम्रता और समर्पण को सदैव याद रखा जाएगा। आपकी सौम्यता एवं सज्जनता के अलावा आपके सकारात्मक, उत्साही व प्रेरणादायी शब्द मुझे हमेशा प्रेरित करते रहेंगे।

### तेजस्वी की कार्यकर्ता दर्शन सह संवाद कार्यक्रम का पांचवा चरण 30 दिसम्बर से

पटना। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव का पांचवें चरण का कार्यकर्ता दर्शन सह संवाद कार्यक्रम 30 दिसम्बर को सीतामढ़ी में आयोजित किया गया है, जिसमें शिवहर जिला के कार्यकर्ता भी शामिल होंगे। इस आशय की जानकारी राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद ने दी है। उन्होंने यह भी बताया कि प्रदेश राजद के प्रधान महासचिव रणविजय साहू के हस्ताक्षर से जारी किये गये नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी के कार्यक्रम की सूचना सीतामढ़ी एवं शिवहर के जिला अध्यक्ष/ जिला प्रधान महासचिव को भेज दी गई है। उसी अनुसार सीतामढ़ी में कार्यकर्ता दर्शन सह संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया है ,जिसमें शिवहर जिला के कार्यकर्ता भी शामिल होंगे। इसकी तैयारी चल रही है। पार्टी कार्यालय से जो दिशा- निर्देश जारी किए गए हैं ,उसी के अनुसार तैयारी की जा रही है। यह भी बताया कि आगे का कार्यक्रम की सूचना बाद में दी जाएगी।

# बीपीएससी अभ्यर्थियों से मिले प्रशांत किशोर

## गांधी मैदान में बुलाई छात्र संसद

**पटना, प्रात: किरण संवाददाता**



बिहार लोक सेवा आयोग की 70वीं पीटी परीक्षा रद्द करने की मांग को लेकर धरना पर बैठे अभ्यर्थियों से मिलने शनिवार को जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर पहुंचे। उन्होंने रविवार को गांधी मैदान में छात्र संसद आयोजित करने की घोषणा भी की। धरना पर बैठे छात्रों से मिलने के बाद प्रशांत किशोर ने कहा कि यह केवल एक बीपीएससी की परीक्षा का मामला नहीं है। बिहार में होने वाली लगभग हर परीक्षा में गड़बड़ी, भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ता है। इसे समाप्त करना आवश्यक है। बिहार की हर परीक्षा, हर छात्र की आवाज है। जब तक इन परीक्षाओं में हो रही गड़बड़ियों का समाधान नहीं होगा, तब तक हमारी लड़ाई जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि रविवार को गांधी मैदान में महात्मा गांधी मूर्ति के पास छात्र संसद का आयोजन किया जाएगा, जिसमें व्यापक चर्चा की जाएगी। इसमें सभी जिलों के छात्र भाग लेंगे। यह आयोजन दोपहर 12 बजे से शुरू होगा और यहां प्रदर्शन कर रहे सभी छात्र गांधी मैदान पहुंचेंगे। छात्र संसद में न केवल अभ्यर्थी, बल्कि उनके अभिभावक और शिक्षा से जुड़े अन्य संस्थाओं के लोग भी आमंत्रित हैं। बिहार में लोकतंत्र है और बिहार लोकतंत्र की जननी है। यहां किसी भी नेता का लाठीतंत्र नहीं चल सकता है। यह आंदोलन छात्रों का है और वही नेतृत्व कर रहे हैं। हम केवल उनके साथ हैं। 13 दिसंबर को आयोजित संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा में प्रदेश की राजधानी पटना के बापू भवन परीक्षा केंद्र में प्रश्न पत्र लीक होने की अफवाह फैल गई थी, जिसके बाद सैकड़ों उम्मीदवारों ने विरोध दर्ज कराने के लिए परीक्षा का बहिष्कार भी किया था। बीपीएससी ने बापू परिसर में आयोजित परीक्षा को रद्द कर दिया और फिर से परीक्षा आयोजित करने का आदेश दिया है। दूसरी तरफ छात्र पूरी परीक्षा को रद्द कराने की मांग को लेकर पटना के गर्दनीबाग में धरने पर बैठे हुए हैं।

# ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की अद्भुत मिसाल थे अरुण जेटली: तारकिशोर



पटना। पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली की जयंती पर उन्हें अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए पूर्व उप मुख्यमंत्री तारकिशोर प्रसाद ने उन्हें ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की अद्भुत मिसाल बताया। उन्होंने कहा कि भारतीय राजनीति में ऐसे बिरले ही नेता हुए हैं, जिन्होंने बिना किसी राजनीतिक पृष्ठभूमि के केवल अपनी मेहनत की बदौलत राष्ट्रीय स्तर पर अपना एक अलग पहचान बनायी है। हर मसले का बारीक और विस्तृत विश्लेषण करने वाले अरुण जेटली जिन पदों पर रहे, वहां उन्होंने अपनी अलग छाप छोड़ी। मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में लिए गये कई ऐतिहासिक फैसलों को जमीन पर उतारने में भी उनकी अहम भूमिका थी। उन्होंने कहा कि यह प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी का भी भरोसा ही था कि उनके बतौर वित्त मंत्री रहते नोटबंदी, जीएसटी, इनसॉल्वेंसी एवं बैंकरप्सी कोड, जन-धन योजना, कैश ट्रांसफर जैसे कई ऐतिहासिक फैसले लिए गए इसके अलावा देश की टैक्स व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाला जीएसटी भी श्री जेटली के अथक प्रयासों का ही प्रतिफल है। उनकी वाक पटुता और तर्कशीलता के कारण आम जनता के साथ-साथ विपक्षी दलों के नेता भी उनके मुरीद हुआ करते थे। श्री प्रसाद ने कहा कि बिहार से भी श्री जेटली का पुराना नाता रहा। वह भले ही बिहार के रहनेवाले नहीं थे, लेकिन उनका बिहार से विशेष लगाव था। बिहार वासियों के प्रति उनके मन में आदर का भाव था। बिहार में एनडीए सरकार बनाने में उनकी काफी प्रमुख भूमिका थी। उन्होंने कहा कि आज भले ही जेटली जी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके कृतित्व और व्यक्तित्व हमेशा हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

# केन्द्रीय रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव से मिले पप्पू यादव

## कोशी-सीमांचल क्षेत्र के रेलवे विकास से संबंधित महत्वपूर्ण मांगों पर चर्चा की



पटना। पूर्णिया सांसद पप्पू यादव ने शनिवार को नई दिल्ली में केंद्रीय रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात कर पूर्णिया समेत कोशी-सीमांचल और मिथिलांचल क्षेत्र के रेलवे विकास से संबंधित महत्वपूर्ण मांगों पर चर्चा की। इस दौरान उन्होंने इन पिछड़े क्षेत्रों में स्वीकृत रेलवे परियोजनाओं के लिए धनराशि उपलब्ध कराने और नई योजनाओं को स्वीकृति देने का आग्रह किया। पूर्णिया कोर्ट रेलवे स्टेशन वाशिंग पीट निर्माण, पूर्णिया कोर्ट, बनमनखी, मुरलीगंज, बिहारीगंज, जानकीनगर रेलवे स्टेशनों को अमृत भारत स्टेशन के तहत मॉडल स्टेशन बनाने, और क्षेत्र के विभिन्न स्टेशनों पर रेल उपरी पुलों के निर्माण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए। इसके साथ ही, उन्होंने गाड़ी संख्या-15713/15714 को जोगबनी तक विस्तार करने और अन्य लंबित योजनाओं को शीघ्रता से लागू करने की अपील की। इसके अतिरिक्त, हमने कुर्सेला-बिहारीगंज नई रेल लाइन, बिहारीगंज-वाया मुरलीगंज-खुर्दा वीरपुर नई रेल लाइन, और सहरसा एवं मुरलीगंज के पास रेल उपरी पुल जैसे प्रस्तावों को प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर जोर दिया। पूर्णिया जंक्शन को वृहद मॉडल स्टेशन में बदलने और रानी पतरा रेलवे स्टेशन पर रेल उपरी पुल के निर्माण की भी सिफारिश की। हमने इसके साथ महिलाओं, विकलांग यात्रियों और यात्रियों के लिए सुविधाओं में सुधार की जरूरत को रेखांकित किया। उन्होंने महिला कोच की उपलब्धता, रेलवे स्टेशनों की साफ-सफाई, शुद्ध पेयजल, महिला शौचालय और वेटिंग रूम, विकलांगों के लिए सुगम आवागमन, और स्वच्छ खान-पान सुविधाओं की अनिवार्यता पर बल दिया।

# बेबुनियाद व बेतुका आरोप लगा रहे नेता प्रतिपक्ष : मनोज



**पटना, प्रात: किरण संवाददाता**

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता और पूर्व विधायक मनोज शर्मा ने प्रतिपक्ष के नेता तेजस्वी यादव द्वारा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के ऊपर दिए गए आपत्तिजनक बयान की निंदा की है और कहा है कि प्रतिपक्ष के नेता तेजस्वी यादव यात्रा करके जब से लौटे हैं तब से उनको जमीनी हकीकत का पता चल गया है। उनके नीचे की जमीन पूरी तरह से खिसक चुकी है। अब यह बेबुनियाद बोल रहे हैं। बेतुका का बयान दे रहे हैं। उनके बयान निहायत थी दोयम दर्जे और निम्न कैटेगरी के होते हैं। हालांकि यह दोष इनका नहीं है, इनको जो विरासत में संस्कार मिले हुए हैं, उसी का वह प्रदर्शन कर रहे हैं। श्री शर्मा ने तेजस्वी यादव पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा शायद तेजस्वी यादव को याद नहीं है लेकिन, दुनिया में एक कहावत है कि जब रोम जल रहा था तो नीरो बंशी बजा रहा था। वह कहावत उनके माता-पिता की सरकार में फिट बैठती थी, जब पूरा बिहार अपराध, मर्डर, डकैती, अपहरण जैसे वारदातों में जल रहा था तो, मियां-बीवी की सरकार चैन की बंसी बजा रही थे। लालू यादव और राबड़ी देवी होश में कहां थे? वह तो मदहोश थे, सत्ता के अहंकार में। उसी मदहोशी में तेजस्वी यादव का लालन-पालन हुआ है। उन्हें बिहार और बिहार वासियों से कहां मतलब था? वह तो अपने परिवार के लिए धन संग्रहित कर रहे थे। भाजपा प्रवक्ता ने आगे कहा कि तेजस्वी यादव अपनी टोपी दूसरे के सर पहना रहें हैं, उनके माता-पिता की सरकार में कैसे कुछ नेता और अधिकारी मिलकर सरकार चलाते थे, यह जग जाहिर है। कैसे लालू यादव निरंकुश होकर अधिकारियों को फटकारते थे, यह जग जाहिर है। तेजस्वी यादव शायद भूल रहे हैं उनके माता-पिता की सरकार में जो स्वाभिमानी अधिकारी और ईमानदार अधिकारी थे, उन्होंने अपना तबादला करवा लिया था। वह बिहार में आना नहीं चाहते थे। बिहार कैडर के रहते हुए भी उन्होंने अपनी पूरी नौकरी केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर की थी।

# पूर्व पीएम को अदद समाधि स्थल भी नहीं दे सकी केंद्र सरकार: राठौड़

पटना। पूर्व प्रधानमंत्री एवं कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर प्रदेश कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल में देश के शैक्षणिक, परिवहन, ऊर्जा, रोजगार और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कई विकासात्मक कार्य हुए जिससे देश की आर्थिक प्रगति ने रफ्तार पकड़ी। वें देश के पहले अल्पसंख्यक वर्ग से आने वाले प्रधानमंत्री रहें लेकिन केंद्र की भाजपा सरकार ने उनके निधन पर एक अदद समाधि स्थल भी देना मुनासिब नहीं समझा जो कि ये बताने को काफी है कि किस प्रकार अल्पसंख्यक वर्ग को दोयम दर्जे पर रखने की इस सरकार की कवायद है। ऐसे महान अर्थशास्त्री जिनकी किताबें विश्व के कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है बावजूद इसके एक समाधि स्थल केंद्र की मोदी सरकार ने उन्हें नहीं मुहैय्या कराया। प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता राजेश राठौड़ ने कहा कि भाजपा नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने अपने इस फैसले से साबित किया कि देश के महान सपूतों के प्रति उनके मन में कोई श्रद्धा नहीं है। एक दशक तक देश के प्रधानमंत्री के रूप में सेवाएं देने वाले डॉ मनमोहन सिंह की नीतियां गरीबों और पिछड़े वर्गों के लिए आज भी सहारा है। कम से कम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बड़ा दिल दिखाते हुए उनके गौरवशाली कौम और देश के पूर्व प्रधानमंत्री के प्रति निष्ठा और सम्मान दिखाना चाहिए लेकिन वें इस मौके पर भी अपनी तुच्छ राजनीति कर गए। साथ ही अल्पसंख्यक समुदाय को उन्होंने अपने सरकार में कोई सम्मान देना मुनासिब नहीं समझा ये आज अधिकृत समाधि स्थल न देकर उन्होंने साबित कर दिया।

# 30 को होगा चक्का जाम, बीपीएससी रद्द कर पुनर्परीक्षा हो : शिवप्रकाश

## आज पूरे बिहार में मोमबत्ती जलाकर दी जाएगी श्रद्धांजलि

पटना। भाकपा माले के अगिआंव से विधायक और युवा संगठन आरवाइए के प्रदेश सचिव शिवप्रकाश रंजन ने कहा है कि छात्र युवा संगठन आइसा और आरवाइए ने बीपीएससी अभ्यर्थियों के चल रहे आन्दोलन के पक्ष में आज सरकार को अल्टीमेटम देते हुए घोषणा की है कि यदि रविवार तक पीटी परीक्षा रद्द कर नई तारीखों का ऐलान नहीं हुआ तो 30 दिसंबर को पूरे बिहार का चक्का जाम होगा। उन्होंने कहा कि पटनादिल्ली की डबल इंजन सरकार के बहरे कानों को सुनाने के लिए सड़क और रेलमार्ग जाम होगा। शिवप्रकाश रंजन ने कहा कि बिहार के अनेक केंद्रों पर पेपर लीक व घोर आपत्तिजनक अनियमितता हुई है। परीक्षा रद्द करने की मांग चारो तरफ से उठ रही है। अभ्यर्थी ठंड में धरने पर बैठे हुए हैं लेकिन नीतीशझ्भाजपा सरकार न सिर्फ बहरी बनी हुई है बल्कि उल्टे न्याय की मांग कर रहे नौजवानों पर अंग्रेजी शासन की याद दिलाने वाला बर्बर लाठीचार्ज करवा रही है। नीतीश-मोदी सरकार बिहार में सुशासन के बड़े-बड़े दावे करती है पर एक परीक्षा सुचारु रूप से करा पाने में सफल नहीं है। लोकतांत्रिक मांगें उठाने पर जेल, फर्जी मुकदमे और बर्बर पुलिसिया दमन नियम बनते जा रहे हैं। याद करें कि इसी परीक्षा में नॉर्मलाइजेशन का विरोध कर रहे छात्रझ्छात्राओं पर भी लाठीचार्ज हुआ था। आइसा, आरवाइए ने कहा है कि बिहार इस वक्त शिक्षा और परीक्षा माफियाओं की गिरफ़्त में है। समय पर डिग्री न मिलना, कॉलेज में शिक्षक न होना, परीक्षा में धांधली, पैसे पर बिकती नौकरी और डिग्री बिहार में आम चलन बनता जा रहा है। पर सरकार माफियाओं पर लगाम लगाने की बजाय युवाओं पर लाठियां चला रही है। विदित है कि मुजफ्फरपुर केंद्र पर बीपीएससी परीक्षा देने वाले पटना जिले के पालीगंज के सोनू कुमार नाम के छात्र ने इस तनाव में अपनी जान ले ली। यह आत्महत्या नहीं सांस्थानिक हत्या है जिसका जवाब मोदीझ्नीतीश की जोड़ी को देना होगा। 30 दिसंबर के चक्का जाम की पूर्व संध्या 29 दिसंबर को पूरे बिहार में मोमबत्ती जलाकर सोनू कुमार को श्रद्धांजलि दी जाएगी।

# अड़ियल रवैया छोड़े सरकार, बीपीएससी अभ्यर्थियों की मांगें माने : माले

## विधायक संदीप सौरभ ने लिखा मुख्यमंत्री को पत्र, पुनर्परीक्षा की मांग की

पटना। भाकपा माले राज्य सचिव कुणाल ने कहा है कि बीपीएससी अभ्यर्थियों के चल रहे आन्दोलन के प्रति सरकार का दमनात्मक और अड़ियल रवैया निंदनीय है। हमारी मांग है कि सरकार उनकी मांगों पर गंभीरतापूर्वक विचार करे और पीटी परीक्षा अविलंब रद्द करे। भाकपा झ माले 30 दिसंबर को आयोजित होने वाले चक्का जाम का समर्थन करेगी। दूसरी ओर, माले विधायक संदीप सौरभ ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर बीपीएससी पीटी परीक्षा रद्द करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया के जमाने में यह तर्क हास्यास्पद है कि केवल एक ही परीक्षा केंद्र पर अनियमितता हुई। बापू परीक्षा केंद्र पर लगभग 1200 अभ्यर्थी थे। अब केवल इन 1200 अभ्यर्थियों की पुनर्परीक्षा क्यों ली जाएगी? इससे उन्हें अतिरिक्त समय मिलेगा जो अन्य अभ्यर्थियों के साथ अन्याय होगा। इसलिए पूरी परीक्षा रद्द करके फिर से आयोजित की जानी चाहिए। पूरी परीक्षा ही अनियमितता और गड़बड़ी की शिकार है।

# पूर्व पीएम को अदद समाधि स्थल भी नहीं दे सकी केंद्र सरकार: राठौड़

पटना। पूर्व प्रधानमंत्री एवं कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर प्रदेश कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल में देश के शैक्षणिक, परिवहन, ऊर्जा, रोजगार और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कई विकासात्मक कार्य हुए जिससे देश की आर्थिक प्रगति ने रफ्तार पकड़ी। वें देश के पहले अल्पसंख्यक वर्ग से आने वाले प्रधानमंत्री रहें लेकिन केंद्र की भाजपा सरकार ने उनके निधन पर एक अदद समाधि स्थल भी देना मुनासिब नहीं समझा जो कि ये बताने को काफी है कि किस प्रकार अल्पसंख्यक वर्ग को दोयम दर्जे पर रखने की इस सरकार की कवायद है। ऐसे महान अर्थशास्त्री जिनकी किताबें विश्व के कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है बावजूद इसके एक समाधि स्थल केंद्र की मोदी सरकार ने उन्हें नहीं मुहैय्या कराया। प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता राजेश राठौड़ ने कहा कि भाजपा नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने अपने इस फैसले से साबित किया कि देश के महान सपूतों के प्रति उनके मन में कोई श्रद्धा नहीं है। एक दशक तक देश के प्रधानमंत्री के रूप में सेवाएं देने वाले डॉ मनमोहन सिंह की नीतियां गरीबों और पिछड़े वर्गों के लिए आज भी सहारा है। कम से कम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बड़ा दिल दिखाते हुए उनके गौरवशाली कौम और देश के पूर्व प्रधानमंत्री के प्रति निष्ठा और सम्मान दिखाना चाहिए लेकिन वें इस मौके पर भी अपनी तुच्छ राजनीति कर गए। साथ ही अल्पसंख्यक समुदाय को उन्होंने अपने सरकार में कोई सम्मान देना मुनासिब नहीं समझा ये आज अधिकृत समाधि स्थल न देकर उन्होंने साबित कर दिया।

# मौसम ने ली करवट, राजधानी सहित कई इलाकों में छाए बादल

## सासाराम, कैमूर समेत कई इलाकों में हुई हल्की बारिश

**पटना, प्रात: किरण संवाददाता**

बिहार में अचानक से ठिठुरन बढ़ने लगी है। शनिवार सुबह से ही पटना समेत कई इलाकों में बादल छाए रहे। पश्चिमी विक्षोभ के चलते सासाराम, कैमूर समेत कई इलाकों में हल्की बारिश हुई। पटना मौसम विभाग केंद्र ने आज पटना, शाहाबाद, तिरहुत, मगध, अंग क्षेत्र के जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया है। मौसम वैज्ञानिक के अनुसर, आने वाले दिनों में बिहार में कड़ाके की ठंड पड़ेगी। इस दौरान सुबह में अगले कुछ दिनों तक कई राज्यों में घना कोहरा छाया रहेगा।

**अगले दो दिनों के मौसम का हाल**

मौसम विभाग ने कहा कि 28 दिसंबर को बिहार के 31 और 29 दिसंबर को सात जिलों में बारिश के आसार हैं। आज पटना, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, मुंगेर, बेगूसराय, गोपालगंज, सारण, वैशाली, नालंदा, नवादा, सीवान, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, रोहतास, जहानाबाद, अरवल, गया, औरंगाबाद, कैमूर, भोजपुर, मधुबनी, खगड़िया और दरभंगा के कुछ भागों में बारिश हो सकती है। वहीं सुपौल, अररिया, किशनगंज, मधेपुरा, सहरसा, पूर्णिया और कटिहार में 29 दिसंबर को एक या दो स्थानों पर बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। बाकी जिलों में मौसम के शुष्क रहने के आसार जताएं गए हैं।

**समस्तीपुर में सबसे ज्यादा ठंड**

पिछले 24 घंटे में सबसे अधिक ठंड समस्तीपुर में पड़ी। यहां का न्यूनतम तापमान 9.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं सबसे अधिक गर्मी गया जिले में पड़ी। यहां का अधिकतम तापमान 29.4 डिग्री सेल्यियस दर्ज किया गया। हालांकि, मध्य रात्रि के बाद यहां कनकनी बढ़ गई दी। पारा गिरकर 13.6 डिग्री तक पहुंच गया। वहीं पटना का न्यूनतम तापमान 14.5 सेल्सियस, मुजफ्फरपुर का 10.3 डिग्री सेल्सियस, पूर्णिया का 11.1डिग्री सेल्सियस, भागलपुर का 11.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

**बारिश ने बढ़ाई किसानों की धड़कन**

इधर, बेमौसम बारिश ने किसानों की धड़कनों को भी बढ़ा दिया है। तिलहन, दलहन के साथ-साथ अन्य फसलों के नुकसान की संभावना बढ़ गई है। हल्की हवाओं के साथ जिले के कई स्थानों पर हुई बारिश से फसल को नुकसान होने की संभावना बढ़ गई है और जिले के कई जगहों पर धान की तैयार फसल को भी नुकसान हो सकता है। हालांकि जिले के कई इलाकों में धान की तैयार फसल कट चुकी है लेकिन कई जगहों पर अभी भी फसल खेतों में खड़े हैं। जिससे किसानों की चिंता बढ़ गई है। साथ ही बेमौसम बारिश से चना, आलू, मटर जैसी फसलों को भी नुकसान हो सकता है। जानकार बताते हैं कि बारिश से खरीफ की फसल को अत्यधिक नुकसान हो सकता है।

# सीएम नीतीश के शासनकाल में अमन चैन का माहौल बना : सेतु

पटना। जनता दल यू के प्रदेश महासचिव ओमप्रकाश सिंह सेतु ने कहा कि बिहार में 2005 में एनडीए की नेतृत्व में नीतीश कुमार की सरकार बनने से बिहार की सूरत बदली है और बिहार के लोग अमन चैन के माहौल में जी रहे हैं। श्री सेतु महुआ विधान सभा क्षेत्र के हसनपुर ओसती फुलवरिया फतहपुरपकडी गांव में जदयू कार्यकताओं की बैठक को संबंधित कर रहे थे। इस दौरान श्री सेतु ने कहा की जिस समय 2005 में नीतीश कुमार की सरकार बनी थी उसे समय बिहार का बजट महज 24 हजार करोड़ का था जबकि आज बिहार का बजट 2 लाख 78 हजार करोड़ का है जिससे बिहार में सड़क, पुल पुलिया, बिजली, हर घर नल का जल के साथ-साथ स्कूल एवं अस्पतालों का विकास हो रहा है। उन्होंने कहा कि आपको जानकारी होना चाहिए कि जिस समय 2005 में नीतीश कुमार जी की सरकार बिहार में बनी थी उस समय स्कूल से बाहरं रहने वाले बच्चों की संख्या 12% के करीब थी जबकि आज स्कूल से बाहर रहने वाले बच्चों की संख्या एक प्रतिशत से भी काम है। श्री सेतु ने कहा कि नीतीश कुमार के कार्यकाल में बिहार की राजधानी पटना से कहीं भी जाने में 5 घंटे से अधिक का समय नहीं लगता है जिसकी वजह है बिहार में सड़क एवं सड़क पुल का तेजी से निर्माण होना और यह बिहार के विकास पुरुष मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की ही देन है। जदयू के नेता और कार्यकताओं को सरकार की उपलब्धियों को हर घर तक पहुंचना चाहिए। इस मौके पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जदयू के प्रखंड अध्यक्ष विनोद कुमार सुमन ने कहा कि बिहार में मुख्यमंत्री के शासनकाल में अमन चैन का माहौल बना है जिससे कानून व्यवस्था की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। इस मौके पर जदयू के नेता अनिल कुमार, प्रहलाद ठाकुर, नागेंद्र ठाकुर सहित बड़ी संख्या में जदयू के नेता और कार्यकताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

# तेजस्वी पर खुद सवाल न उठे, इसलिए वह नीतीश पर आरोप लगा रहे: नवल

पटना। बिहार जनता दल यूनाईटेड प्रवक्ता नवल शर्मा ने आरोप लगाया है कि नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव पर खुद सवाल न उठे, इसलिए वह मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर आरोप लगा रहे हैं। श्री शर्मा कहा कि श्री यादव जिस तरह से धकियाकर राष्ट्रीय जनता दल से लालू यादव और उनके लोगों को जबरन बाहर का रास्ता दिखा रहे हैं, वृद्धावस्था में लालू यादव को जैसा मानसिक कष्ट दे रहे हैं, उसपर कहीं लोग उनसे सवाल न पूछने लगे, इसके पहले ही श्री कुमार पर हाईजैक होने का आरोप लगाकर मामले को अलग मोड़ देने की असफल कोशिश कर रहे हैं। जदयू प्रवक्ता ने कहा, ब्यूरोक्रेसी पर आरोप लगाने के पहले श्री यादव को यह जानना चाहिए कि ये वही ब्यूरोक्रेसी है, जिससे उनके पिताजी खैनी मलवाते थे और पीकदान उठवाते थे। चूंकि श्री लालू को पढ़ाई लिखाई और विकास से कोई मतलब नहीं था,इसलिए उनमें इतनी भी समझ नहीं थी कि काबिल अफसरों से कैसे काम लिया जाता है, राज्यहित में उनकी क्षमताओं का कैसे इस्तेमाल किया जाता है। आरोप लगाने के बजाय श्री यादव को सीखना चाहिए कि श्री कुमार ने अपनी काबिलियत से उसी ब्यूरोक्रेसी के सहारे कैसे बिहार को बदल दिया।

# बुद्ध सम्यक दर्शन संग्रहालय सह स्मृति स्तूप को दिया गया आकर्षक रूप : सचिव

पटना। बिहर के भवन निर्माण विभाग के सचिव कुमार रवि ने बताया कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की परिकल्पना के अनुरूप बुद्ध सम्यक दर्शन संग्रहालय-सह-स्मृति स्तूप को आकर्षक वास्तुशिल्प एवं बेमिसाल नक्काशी का रूप दिया गया है। श्री रवि ने बताया कि भगवान बुद्ध की पावन धरती वैशाली में पवित्र पुष्करणी तालाब एवं पौराणिक मिट्टी स्तूप के निकट 550.48 करोड़ की लागत से 72.94 एकड़ के भूखण्ड पर भगवान बुद्ध के स्मृति अवशेषों को सुरक्षित एवं आम जनों के दर्शन के लिये रखने के लिए बुद्ध सम्यक दर्शन संग्रहालय-सह-स्मृति स्तूप का निर्माण कार्य जल्द पूर्ण हो जाएगा। उन्होंने बताया कि स्तूप में 38500 पत्थर लगाने का कार्य पूर्ण हो चुका है। स्तूप को भव्य और आकर्षक बनाने के लिए राजस्थान से गुलाबी पत्थर मंगवाए गए। सचिव ने बताया कि क्रेन से 12 टन तक के पत्थरों को ऊंचाई पर लगाना, इन पत्थरों के एक-एक कर फिट करना भवन निर्माण विभाग के अभियंताओं के लिए नया अनुभव रहा है। सिविल इंजीनियरिंग के दृष्टिकोण से इस संरचना का निर्माण चुनौतीपूर्ण रहा है। यह संरचना पूरी तरह पत्थरों से निर्मित है और पत्थरों को लगाने के लिए किसी प्रकार चिपकाने वाला पदार्थ या अन्य चीजों का प्रयोग नहीं किया गया है।

पूर्व मध्य रेल
निविदा सूचना
सं. डी.एन.आर./एस.एण्ड टी./सिग/2024/18, दानापुर, दि.: 26.12.2024
भारत संघ के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से मंडल रेल प्रबंधक (सिगनल एवं दूर संचार) पूर्व मध्य रेलवे, दानापुर मंडल, निम्नलिखित कार्य हेतु ई-निविदा वेबसाइट पर निविदाएं आमंत्रित करते हैं :- 1. कार्य का नाम एवं स्थान: दानापुर मंडल के किऊल–गया खंड के दोहरीकरण कार्य के संबंध में दोषपूर्ण/क्षतिग्रस्त एस और टी केबल का प्रतिस्थापन और पुनर्वास।, 2. अनुमानित लागत : रूपये 17416741.14, 3. बयाना राशि: रूपये 237100.00, 4. निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि एवं समय : दिनांक 16.01.2025 को 15.00 बजे तक।, 5. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक 16.01.2025 को 15.30 बजे।, 6. वेबसाइट विवरण : www.ireps.gov.in, 7. कार्यालय का पता, जहाँ से निविदा सम्बन्धी विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है : वरीय मंडल संकेत एवं दूर संचार अभियंता कार्यालय, दानापुर, नोट: विवाद की स्थिति में अंग्रेजी नोटिस मान्य होगा। यदि जरूरत हुई, तो शुद्धि पत्र उपरोक्त वेबसाइट पर 14 दिन पहले अपलोड कर दिया जाएगा।
मं. सं. एवं दू. सं. अभि.,
पूर्व मध्य रेल, दानापुर
पीआर/01786/डीएनआर/एस एण्ड टी/24-25/36

बिहार सरकार
विद्युत कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–1 भवन निर्माण विभाग, पटना।
कोटेशन आमंत्रण सूचना सं0–24 वर्ष 2024–25
निम्नलिखित कार्य हेतु निबंधित संवेदकों से मुहरबंद कोटेशन दिनांक–13.01.2025 के 03:00 बजे अपराह्न तक अधोहस्ताक्षरी द्वारा आमंत्रित की जाती है।
कोटेशन प्राप्ति का स्थान (1) विद्युत कार्यपालक अभियंता, विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–1, भवन निर्माण विभाग, पटना, (2) विद्युत अधीक्षण अभियंता, विद्युत कार्य अंचल दक्षिण बिहार, भवन निर्माण विभाग, पटना का कार्यालय होगा। सभी प्राप्त कोटेशनों उसी तिथि को अपराह्न 3:30 बजे कोटेशनदाताओं या उनके द्वारा प्राधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जायेगी।
कोटेशनदाताओं द्वारा अपना कोटेशन संबंधित कनीय विद्युत अभियंता/सहायक विद्युत अभियंता से समन्वय स्थापित कर स्थल निरीक्षण के पश्चात् एवं कोटेशन में उद्धृत दर का विस्तृत दर विश्लेषण के साथ ही समर्पित करेंगे। सभी या कोई भी कोटेशन को बिना कारण बताये रद्द करने तथा कार्य को एक से अधिक कोटेशनदाताओं के बीच बाँटने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी को सुरक्षित रहेगा।
उक्त कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी, रूपरेखा एवं अन्य सूचनाएँ किसी भी कार्य दिवस में अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय या वेबसाइट www.state.bihar.gov.in/prdbihar पर देखा जा सकता है।
कार्य की विवरणी निम्नलिखित है:–

| S.No. | Name of Work | Time of Completion |
|---|---|---|
| 1 | SITC of Split AC and Cassette A.C in newly alloted Ministers Chamber, Ante Room, Guest Room & Minister's Cell of Minor Water Resources Deptt, Bihar Situated at 334/334 A, 3rd Floor of Vikash Bhawan, Patna | 20 Days |

PR- 15708 (BCD) 2024-25
नशे को मार, बर्बाद करे सुखी परिवार।
विद्युत कार्यपालक अभियंता, विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–1, पटना।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com



# सुंदरता को केवल आंखों से देखना ही पर्याप्त नहीं है, इसे महसूस करना जरूरी है : जिलाधिकारी

## 32वाँ दो दिवसीय पुष्प प्रदर्शनी का समारोह पूर्वक जिलाधिकारी ने किया शुभारम्भ

प्रात : किरण संवाददाता



दरभंगा। लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरी दरभंगा में नॉर्थ बिहार हॉर्टिकल्चर सोसायटी द्वारा आयोजित दो दिवसीय 32वाँ पुष्प प्रदर्शनी का उद्घाटन दरभंगा के जिलाधिकारी राजीव रौशन ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने पुष्प प्रदर्शनी के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम मानवता और प्रकृति के बीच के रिश्ते को मजबूत करने का माध्यम है।

मुख्य अतिथि जिलाधिकारी ने कहा, कि मिथिला ने इस समृद्ध परंपरा विकसित की है, और पुष्प प्रदर्शनी के माध्यम से यह परंपरा आज भी जीवंत है। यह प्रदर्शनी वर्तमान पीढ़ी को भविष्य की पीढ़ी से जोड़ने का कार्य करती है और मानवता का संदेश देती है। अगर हम प्रकृति से जुड़े रहते हैं और इसे प्रेम करते हैं, तभी हमारा अस्तित्व और मानवता सुरक्षित रह सकती है। श्री रौशन ने युवाओं में प्रकृति से घटते जुड़ाव पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा, कि आज की पीढ़ी स्क्रीन पर पुष्प प्रदर्शनी देखकर खुश हो जाती है, लेकिन जो आनंद प्रकृति के सानिध्य में है, वह बनावटी स्क्रीन पर नहीं मिल सकता। सुंदरता को केवल आंखों से देखना ही पर्याप्त नहीं है; इसे महसूस करना जरूरी है। प्रकृति से जुड़ाव के बिना यह संभव नहीं है।

कार्यक्रम को समिति की अध्यक्ष डॉक्टर लता खेतान ने कहा कि पुष्प प्रदर्शनी हमें प्रकृति सुंदरता और विविधता का अनुभव करने का अवसर प्रदान करती है।सोसायटी के सचिव राघवेंद्र कुमार ने कहा कि अपने घरों और चाटो पर पौधा लगाने वाले लोगों ने इस प्रदर्शनी का आयोजन किया है हम आयोजन की सफलता की कामना करते हैं उन्होंने कहा कि शहर को साफ सुथरा और प्रदूषण मुक्त रखने में आम लोगों को आगे आना चाहिए।

जिलाधिकारी ने पुष्प प्रदर्शनी में अंकुर नमक स्मारिका का भी विमोचन किया और साथ ही किंग ऑफ शॉ का पुरस्कार रचना बैरोलिया को, क्वीन ऑफ द शॉ डॉ.राजेश द्विवेदी, प्रिंस ऑफ द शॉ विनोद पंसारी, प्रिंसेस ऑफ द शॉ राजीव तुल्सियान को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर उप विकास आयुक्त चित्रगुप्त कुमार नगर आयुक्त राकेश गुप्ता अनुमंडल अधिकारी विकास कुमार समेत उत्तरी बिहार उद्यान समिति के पेट्रोन डॉ.आर.बी.खेतान, शिव भगवान गुप्ता, विनोद कुमार पंसारी,अतुल खंडेलवाल, राजकुमार पासवान, मनोज डोकानिया, विनोद सरावगी, पवन कुमार झा आदि मौजूद थे।

## संक्षिप्त खबरें

### भारी मात्रा में विदेशी शराब बरामद,2 गिरफ्तार

मुजफ्फरपुर पुलिस ने बेला थाना अंतर्गत एक ट्रक में छिपाकर रखे कुल 8431.2 लीटर विदेशी शराब बरामद किया है इस मामले में 2 अभियुक्त गिरफ्तार किए गए हैं। गुप्त सूचना के आधार पर जिला आसूचना इकाई, मुजफ्फरपुर एवं थानाध्यक्ष बेला की टीम द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए बेला थाना क्षेत्र अंतर्गत बेला स्थित फेज-2 के पास एक ट्रक में छिपाकर रखे गये कुल 8431.2 लीटर विदेशी शराब सहित अभियुक्त. दाउद नबी पिता आयुब नबी ग्राम बेलडांगा जिला मुर्शिदाबाद , पश्चिम बंगाल एवं संजय पासवान पिता दशरथ पासवान ग्राम जगरनाथपुर थाना कुढ़नी को गिरफ्तार किया गया है। उधर कांटी थाना क्षेत्र में ट्रक में छिपाकर रखे कुल 5606.250 लीटर विदेशी शराब बरामद किया गया है।

### आंगनबाड़ी केंद्र से गैस सिलेंडर एवं चूल्हा चोरी, सेविका ने थाना में दिया आवेदन

विभूतिपुर/समस्तीपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत सिंघिया बुजुर्ग दक्षिण पंचायत के वार्ड 08 स्थित आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 201 के रसोईघर का ताला तोड़कर शुक्रवार की रात्रि अज्ञात चोरों ने गैस सिलेंडर एवं चूल्हा चोरी कर ली। मामले को लेकर आंगनवाड़ी केंद्र संख्या 201 के सेविका संगीता सिन्हा ने स्थानीय थाना में आवेदन दिया है। आवेदन के माध्यम से सेविका ने बताई की 28 दिसंबर शनिवार को 9:30 बजे केंद्र संचालन हेतु गयी तो देखा की रसोई घर का ताला टूटा हुआ है। तत्क्षण इसकी सूचना पंचायत के सरपंच, वार्ड सदस्य,स्कूल के शिक्षक एवं अन्य ग्रामीणों को दी। सभी की उपस्थिति में देखा गया तो बच्चों के पोषाहार बनाने के लिए रसोई घर में रखा विभाग द्वारा दी गई गैस सिलेंडर एवं चूल्हा अज्ञात चोरों द्वारा रसोईघर का ताला तोड़कर चोरी कर ली गई थी।

### प्रधानमंत्री आवास योजना व मनरेगा मजदूरों की भुगतान को लेकर कि बैठक

कल्याणपुर समस्तीपुर प्रधानमंत्री आवास योजना व मनरेगा मजदूरों के भुगतान को लेकर कर प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रकोष्ठ में शनिवार को बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी देवेंद्र कुमार ने करते हुए उपस्थित आवास सहायकों, पंचायत रोजगार सेवकों को मनरेगा कार्यक्रम पदाधिकारी महेश कुमार भगत व कार्यपालक सहायक की उपस्थिति में निर्देश दिया कि सभी आवास योजना के लाभार्थियों का मजदूरी भुगतान स समन्वय के साथ होनी चाहिए इसमें किसी भी प्रकार की कोताही नहीं बढ़ती जाए। बैठक में काफी संख्या में कर्मी मौजूद थे।

### करोड़ रुपए की गबन का आरोप बुनियाद सभी लाभार्थी का पैसा सुरक्षित : सीएमडी

मधुबनी महिलाओ को स्वरोजगार देने की बाली सत्यकाम फाउंडेशन ट्रस्ट के सीएमडी वैधनाथ कुमार सहनी ने प्रेस को संबोधित करते हुए दिया जानकारी की सभी व्यक्ति का पैसा कंपनी में सुरक्षित है और सभी को पैसा क्रमबद्ध तरीके से वापस किया जाएगा। कंपनी में कार्यरत कर्मी के द्वारा धोखा किया है उनके ऊपर सीजीएम एवं एसडीओ कोर्ट में मामला दर्ज किया गया है और कुछ कार्यरत कर्मी के इशारे पर मुख्य कार्यालय मधुबनी में तोड़फोड़ की गई जिसको लेकर के सीसीटीवी खंगाला जा रहा है सभी दोषी व्यक्ति के ऊपर कारवाई की जाएगी सत्यकाम फाउंडेशन ट्रस्ट के द्वारा 700 व्यक्ति की रोजगार का अवसर पूरे देश में दिया गया था साथ ही एक करोड़ रुपया का फंड महिला सशक्तिके लिए गठित की गई थी सभी पीड़ित व्यक्ति से सीएमडी बैधनाथ कुमार सहनी ने आग्रह किया कि आपकी पैसा सुरक्षित है कृपया धैर्य बनाए रखें जल्द सभी को पैसा लौटाया जाएगा।

### जदयू की बैठक में पार्टी विस्तार एवं नीतीश कुमार के कार्यो को घर-घर तक पहुंचाने का लिया संकल्प

विभूतिपुर/समस्तीपुर प्रखंड अंतर्गत चांदसुरारी पुस्तकालय भवन के प्रांगण में जदयू प्रखंड कमेटी की बैठक प्रखंड अध्यक्ष अशोक पटेल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में सर्वप्रथम उपस्थित लोगों ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह एवं जदयू नेता मिश्री राम के निधन पर शोक व्यक्त किया। बैठक को संबोधित करते हुए विधानसभा प्रभारी क्रांति कुमार ने प्रखंड से लेकर पंचायत तक पार्टी की विस्तार एवं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के कार्यो को घर-घर तक पहुंचाने का संकल्प दिलाया। बैठक को जिला नेता राम बहादुर सिंह, तरुण कुमार सिंह, राम आशीष प्रसाद सिंह, महेंद्र महतो, श्रीनिवास प्रसाद सिंह, रविंद्र कुमार, गौनर दास, अवधेश राय, प्रहलाद कुमार, टुनटुन मिश्र, योगेंद्र सहनी, राजकुमार सहनी, चंदन दास संजीत सहनी आदि ने संबोधित किया।

# बेहतर समाज का निर्माण के लिए धर्मनिरपेक्ष, जनवादी और वैज्ञानिक शिक्षा जरूरी : प्रशांत कुमार




प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर ।धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक और जनवादी शिक्षा के बिना एक बेहतर समाज का निर्माण संभव नहीं है। नवजागरण और आजादी आंदोलन के तमाम मनीषियों एवं क्रांतिकारियों ने ऐसी शिक्षा व्यवस्था के लिए संघर्ष किया था। इन मनीषियों और क्रांतिकारियों के सपनों को साकार करने के लिए एआईडीएसओ अपनी स्थापना के समय से ही संघर्षरत है। ये बातें एलएस कॉलेज के आचार्य जे.बी. कृपलानी सभागार में एआईडीएसओ के 71वें स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संगठन के केंद्रीय परिषद के कार्यालय सचिव प्रशांत कुमार ने कहीं। उन्होंने कहा कि क्रांतिकारियों के जीवन, संघर्ष और आदर्शों से प्रेरित छात्र आंदोलन ही वर्तमान संकटग्रस्त समाज को नई दिशा दे सकता है ।कार्यक्रम की शुरूआत मोतीझील स्थित संगठन कार्यालय में ध्वजारोहण और महान मार्क्सवादी चिंतक कॉमरेड शिवदास घोष के चित्र पर माल्यार्पण से हुई। इसके पश्चात एक सुसज्जित जुलूस संगठन कार्यालय से निकलकर कलमबाग चौक होते हुए एलएस कॉलेज सभागार पहुंचा। सभा को संबोधित करते हुए एलएस कॉलेज के हिंदी विभाग के सेवानिवृत्त प्राध्यापक डॉ. वीरेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि शिक्षा और संस्कृति पर शासक वर्ग द्वारा चौतरफा हमले किए जा रहे हैं। ऐसे समय में छात्रों को वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण अपनाना होगा, और यह केवल सही शिक्षा और संगठित प्रयासों से ही संभव है। एआईडीएसओ के केंद्रीय परिषद के कोषाध्यक्ष समसुल आलम ने कहा कि एआईडीएसओ न केवल छात्रों की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए आंदोलनरत है, बल्कि छात्रों में इंसानियत और चरित्र निर्माण का भी प्रयास कर रहा है। सात दशकों के संघर्ष में यह संगठन देश के 29 राज्यों और 4 केंद्र शासित प्रदेशों में छात्रों के आंदोलन का मजबूत स्तंभ बन चुका है। डॉ. कुमार विरल ने अपने गीतों के माध्यम से वर्तमान संकटग्रस्त समाज में छात्रों को एकमात्र उम्मीद बताया। एआईडीएसओ के बिहार राज्य सचिव विजय कुमार ने कहा कि राज्य की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था बदहाल और अराजकता की शिकार है। वहीं नई शिक्षा नीति 2020 के जरिए शिक्षा का संपूर्ण निजीकरण और व्यापारीकरण किया जा रहा है ।कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष शिवकुमार ने की।

# सिंहवाड़ा प्रखंड प्रमुख पर अविश्वास प्रस्ताव की तैयारी, बीडीओ को सौपा ज्ञापन

प्रात : किरण संवाददाता

सिंहवाड़ा( दरभंगा ) ।प्रखंड प्रमुख पुष्पा झा पर अविश्वास प्रस्ताव लाने की तैयारी के बीच कुल 35 में 17 पंचायत समिति सदस्यों ने मोर्चा खोला है। बीडीओ अमरेंद्र पंडित को हस्ताक्षर युक्त सौंपे आवेदन में पटना उच्च न्यायालय के आदेश की प्रति संलग्न किया गया है। आवेदन सौंपा है। शनिवार को बीडीओ कक्ष में आवेदन के साथ पैरेड में शामिल 17 पंचायत समिति सदस्यों का हस्ताक्षर का मिलान किया गया ।सभी 17 सदस्यों ने अधिकारी के समक्ष वीडियो रिकॉर्डिंग में अविश्वास प्रस्ताव लाने का स्वीकृत ब्यान दर्ज कराया है। बीडीओ ने पूरी प्रकरण का वीडियो फुटेज साक्ष्य के रूप में संग्रहित कराया है। हस्ताक्षर युक्त आवेदन सौंपने वालों में उप प्रमुख साजिद मुजफ्फर, पंचायत समिति मनोज सिंह, कन्हैया मिश्र, मोहम्मद अरशिद, विद्यापति झा, मोहम्मद इम्तेयाज अंसारी, हसरत प्रवीण, जरीना खातुन, लालबाबू पासवान, सीमा देवी, नगीना देवी, राजा पासवान, नजमा खातून, कुसुम देवी, उषा देवी, बिलकिस, श्याम कुमार मौजूद थे। आवेदन में सदस्यों ने कहा है बड़ी आशा के साथ प्रखंड प्रमुख पुष्पा झा को तीन वर्ष पहले विकास व न्याय को लेकर निर्वाचित कराया था। सदस्यों को अपेक्षा थी कि प्रमुख पद की गरिमा के साथ सभी का सम्मान व सहयोग करेगी। प्रखंड के चौमुखी विकास होगा। पद पर आसीन होने के तुरंत बाद से प्रखंड प्रमुख ने पंचायत समिति सदस्यों की आकांक्षाओं के विपरीत कार्य करना प्रारंभ कर दिया। गलत मानसिकता के कारण क्षेत्र में जातीयता एवं राजनीतिक भेदभाव का माहौल उत्पन्न होने की बात कही है ।गया। विकासात्मक कार्य में कोई अभिरुचि नहीं ली और सामाजिक समरसता को तोड़ने का प्रयास किया। अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवं अल्पसंख्यक समुदायों के हितों की अनदेखी की गई। समय पर पंचायत समिति की बैठक नहीं होती है। अल्प अवधि में ही पंस सदस्यों की आस्था नहीं रह गई है। सदस्यों ने आरोप लगाया है कि प्रखंड प्रमुख सदन का विश्वास हो चुकी है। विदित हो कि प्रखंड प्रमुख के खिलाफ छह जनवरी 2024 को अविश्वास प्रस्ताव की बैठक पूर्व में हो चुकी है। जिसमें कोरम के आभाव में बिना मतदान पूर्ण किए बैठक किया गया था।

# गिद्धौर के सेवा गांव में राजद कार्यकर्ताओं एवं समर्थकों ने गृह मंत्री अमित शाह का पुतला फूंक जताया विरोध

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। शनिवार को गिद्धौर प्रखंड के राजद कार्यकताओं अम्बेडकर वादियों एवं समर्थकों द्वारा निचली सेवा गांव प्रदर्शन करते हुए गृह मंत्री अमित शाह का पुतला दहन कर विरोध जताया ।विरोध जता रहे राजद नेता गणेश यादव तुलसी यादव, समाजसेवी रामचंद्र पासवान, रंजीत साव, प्यारे रजक, छोटू रजक, बिनोद यादव, पूर्व प्रमुख बच्चू रजक संजय रविदास अमरिका मांझी आदि ने मौके पर कहा कि सदन सत्र के दौरान गृह मंत्री अमित शाह ने संविधान निमार्ता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर का अपमान किया था, इससे भारत के अम्बेडकर वादियों में आक्रोश है ।उन्होंने कहा कि अमित शाह देश वासियों से माफी मांगे ।उहोने आगे कहा कि बाबा साहब की ही देन है कि अमित शाह मंत्री पद पर हैं, आरक्षण का लाभ लेकर केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान और जीतन राम मांझी भाजपा आरएसएस का गुलाम बनकर सदन में चुपचाप बैठ कर जुल्म देख रहें हैं, आगामी विधानसभा चुनाव में भारी बहुमत से तेजस्वी यादव मुख्यमंत्री बनकर बिहार को विकसित करेंगे। इस मौके दर्जनों राजद कार्यकर्ता बुद्धिजीवी समाजसेवी मौके पर मौजूद थे।

# जरूरत मंद विधवा, दिव्यांग,असहाय व गरीबो के बीच किया गया कम्बल वितरण

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। शरद महोत्सव के तहद कंबल वितरण का आयोजन पंचोभ गॉव में मुखिया के दरवाजे के प्रांगण में शैल विमल स्वास्थ्य एवं समाज सेवा संस्थान के बैनर तले किया गया। जिसमें दर्जन से अधिक पंचायत के चयनित सात सौ से ऊपर लोगों जिसमे विधवा, दिव्यांग, असहाय एवं गरीबो के बीच कम्बल वितरण किया गया । कंबल वितरण समारोह का शुरूआत विनीत कुमार मिश्रा, कैलिफोर्निया ( अमेरिका ) स्थित अंतरराष्ट्रीय कंपनी के चेयरपर्सन एवं संस्था के अध्यक्ष डॉ संजीव कुमार चौधरी के द्वारा दिव्यांग महिला को कंबल ओढ़ाकर किया गया। पंचायत के मुखिया राजीव चौधरी के द्वारा कहा गया कि समाज के सक्षम लोगो को गरीबो एवं निसहाय के सहायता के लिए इसी तरह आगे आना चाहिए। विदित हो कि विगत तीस वर्षों से संस्था के द्वारा जाड़े के समय गरीबो के बीच कंबल एवं बरसात के समय स्वास्थ्य शिविर लगाकर मुफ्त चिकित्सीय सलाह एवं दवा दिया जाता है। मौके पर संस्था के अध्यक्ष डॉक्टर संजीव कुमार चौधरी के द्वारा उपस्थित लोगों को ठंड में कुछ महत्वपूर्ण सावधानी वरतने के बारे में जानकारी देकर ठंड से होनेवाली आकस्मिक रोग एवं दुर्घटना से बचाव करने की सलाह दी। कार्यक्रम में पंचायत समिति प्रतिनिधि रोहित चौधरी, वार्ड सदस्य अभिषेक आनंद वंशी लाल,गौतम कुमार चौधरी, रमेश कुमार, समाजसेवी परिपूणानंद चौधरी,गोढियारी के पूर्व मुखिया लालबाबू राय , तारा लाही मुखिया रूपम सिन्हा, विश्वनाथ मिश्रा,सरोज मिश्रा आदि उपस्थित थे।

# पूर्वी गुगुलडीह पंचायत में 2025-26 के योजनाओं के चयन को ले ग्राम सभा का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। पूर्वी गुगुलडीह पंचायत भवन में मुखिया सुनीता देवी की अध्यक्षता में जीपीडीपी योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर ग्राम सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 2025-26 के विकास योजना जीपीडीपी तैयार करने एवं ई ग्राम स्वराज योजनाओं से जुड़े डेटा को पोर्टल पर प्रविष्टि करने को लेकर आपसी विचार विमर्श किया गया। बैठक में मौजूद मुखिया सुनीता देवी ने क्षेत्र के संबंधित वार्ड सदस्यों एवं ग्रामीणों को जानकारी देते हुए बताया कि जीपीडीपी के तहत प्राथमिकता के आधार पर योजनाओं का चयन किया जाएगा। पंचायत में विकास कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर संधारित करवाने को ले आपसबों की सहभागिता जरूरी है। इस ग्राम सभा में जीपीडीपी को लेकर सभी वार्डों से महत्वाकांक्षी योजनाओं का चयन किया गया। ताकि सरकार के लक्ष्य के अनुसार विकास से जुड़े कार्य को गति दिया जा सके। इस मौके पर पंचायत सचिव संदीप कुमार साहू, कार्यपालक सहायक दीपक कुमार, पूर्व मुखिया बबलू यादव, उपमुखिया संजय यादव सहित दर्जनों की संख्या में ग्रामीण एवं वार्ड सदस्य मौजूद थे।

# 45 करोड़ की लागत वाले प्रेक्षागृह के निर्माण की मिली स्वीकृति ,सीएम करेंगे 5 को शिलान्यास

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले में बहुप्रतीक्षित एवं बहुदेशीय चंपारण सत्याग्रह शताब्दी प्रेक्षागृह के निर्माण की संपूर्ण प्रक्रिया पूरी कर ली गई है। इसके लिए लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के कांटी अंचल स्थित दाउदपुर कोठी मौजा में 3 एकड़ भूमि को न केवल चिन्हित किया बल्कि विभाग से सतत मानिटरिंग कर अनापत्ति प्रमाण पत्र भी प्राप्त कर लिया गया है। जिलाधिकारी द्वारा प्रेक्षागृह के निर्माण के लिए उपयुक्त भूमि के चयन से लेकर एनओसी प्राप्त करने हेतु लगातार प्रयास किया गया। सबसे पहले पुलिस विभाग की जमीन को चिह्नित किया गया था किंतु गृह विभाग से अनुमति नहीं मिल पायी थी। तत्पश्चात जिलाधिकारी द्वारा जिला स्कूल, एमआईटी सहित कई अन्य स्थलों पर प्रेक्षागृह के लिए उपयुक्त भूमि का चयन करने हेतु लगातार प्रयास किया गया। अंततः कांटी अंचल के दाउदपुर कोठी मौजा में पीएचईडी के उपलब्ध भूमि में से 3 एकड़ भूमि को चिह्नित किया। इसके लिए उन्होंने स्वयं स्थल का निरीक्षण किया तथा छः सदस्यीय टीम का गठन कर प्राप्त अनुशंसा के आलोक में उपयुक्त भूमि को चिह्नित किया । तदुपरांत जिलाधिकारी द्वारा जिले के लिए बहुपयोगी प्रेक्षागृह के निर्माण कराने हेतु पीएचईडी से एनओसी प्रदान करने का अनुरोध किया गया। जिलाधिकारी ने विभाग से लगातार समन्वय फॉलो अप कर पीएचईडी से अनापत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त किया। इस प्रकार जिला के लिए बहुपयोगी प्रेक्षागृह के निर्माण को हरी झंडी मिल गई है जो जिला के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि एवं नये वर्ष की महत्वपूर्ण बड़ी सौगात होगी। अगामी 5 जनवरी को मुख्यमंत्री बिहार द्वारा प्रेक्षागृह का कायारंभ किया जाएगा ।45 करोड़ की लागत से 3 एकड़ भूमि पर 2000 क्षमता के चंपारण सत्याग्रह शताब्दी प्रेक्षागृह का निर्माण भवन निर्माण विभाग के द्वारा किया जाएगा। आधुनिक संसाधन एवं नवीन तकनीक पर आधारित इस प्रेक्षागृह में सांस्कृतिक कार्यक्रम, सेमिनार, वर्कशॉप, प्रशिक्षण कार्यक्रम, वृहत बैठक आदि का आयोजन बहुत ही सुगमता से किया जा सकेगा।

# उर्वरक गिरानी समिति की हुई बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

कल्याणपुर समस्तीपुर प्रखंड के ई किसान भवन मे प्रखंड प्रमुख कृष्णा देवी की अध्यक्षता में उर्वरक गिरानी समिति की बैठक हुई ।प्रखंड कृषि पदाधिकारी अशोक कुमार के संचालन में उर्वरक निगरानी समिति की बैठक हुई। जिसमें पूर्व बैठक की कार्यवाही को पढकर सुनाया गया ।तदोपरांत सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया ।प्रखंड कृषि पदाधिकारी द्वारा खाद के उपलब्धता पर बताया कि अभी विभिन्न विक्रेताओं के यहाँ वर्तमान भंडार इस प्रकार है-यूरिया-758.292 एमटी, डीएपी-126.6 एमटी, एमओपी-260.75 एमटी एवं एनपीके-215.55 एमटी। रवि फसल में कुल लक्ष्य का 82 प्रतिशत डीएपी एवं 68 प्रतिशत यूरिया प्राप्त हो चुका है। भाकपा माले प्रखंड सचिव ने कहा कि ईफको काउंटर कल्याणपुर सहित कई खुदरा विक्रेताओं द्वारा यूरिया के साथ किसानों को जबरन नैनों यूरिया या अन्य अनचाहे उत्पाद थोप देते हैं ।तब हीं यूरिया देते हैं । जिसपर रोक लगाया जाय एवं काउंटर पर मौजूद स्टाफ के व्यवहार में सुधार लाने का प्रस्ताव दिया ।सीपीएम नेता उमेश शर्मा ने गैर लाईसेंसी दूकानदारों पर कारवाई का प्रस्ताव दिया ।कांग्रेस अध्यक्ष आशुतोष कुमार ने कहा कि ईफको काउंटर संचालक द्वारा फर्जी तरिके से किसानों के नाम पर बिक्री दर्शाकर दूकानदारों के हाथों कलाबाजारी करते हैं। स्टॉक समाप्त बता कर यूरिया किसानों को उंचे दाम पर बेचा जाता है ।पूर्व किसान सीताराम शर्मा ने किसानों को जबरन नैनो यूरिया नहीं देने संबंधी पत्र जारी करने एवं खाद का स्टॉक प्रखंड कृषि कार्यालय के नोटिस बोर्ड फर प्रतिदिन अपडेट करने का प्रस्ताव दिया ।उपस्थित प्रखंड कृषि पदाधिकारी ने सभी प्रस्ताव पर आवश्यक कारवाई करने का भरोसा दिया। बैठक में कोऑर्डिनेटर राजीव रंजन अर्जुन कुमार मनीष कुमार सिंह घीरेंद्र कुमार धीरज सभी कृषि समन्वयक उपस्थित थे।

# वीर शिवाजी टी ट्वेन्टी : छठे लीग मैच में नवादा ने बीरगंज नेपाल को 34 रनों से पराजित किया



प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी मधवापुर आरएन जे डिग्री कॉलेज ग्राउंड रामपुर मधवापुर में आयोजित वीर शिवाजी टी ट्वेंटी क्रिकेट सीजन 8 के छठे लीग मुकाबले में भारत के नवादा की टीम ने नेपाल के बीवायसिसी बीरगंज की टीम को 34 रनो से हराकर अगले दौर में प्रवेश कर लिया। टॉस जीतकर बीरगंज की टीम ने पहले गेंदबाजी करने का फैसला लिया। जहां पहले बैटिंग करते हुए नवादा की टीम ने निर्धारित 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 233 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया। जिसमे विवेक रंजन 58 दीपक ने 56 रिहान ने 31अनुज ने 29 और रोहित ने 25 रनो का योगदान दिया। गेदबाजी में बीरगंज की ओर से सिराज अनवर ने 3 सलमान अवारीसोनू कुशवाहा आकिब अंसारी और रोहन साह ने 1-1 विकेट लिए। जवाब में लक्ष्य का पीछा करने उतरी बीरगंज की टीम 20 ओवर में 6 विकेट पर 199 रन ही बना सकी। जिसमे सुमित कुंवर ने 106 आकिब अंसारी ने 17दिलरंजन ने 16 और अनूप ने 15 रन बनाए। गेदबाजी में नवादा की तरफ से विवेक रंजन ने 4 वैभव और उत्कर्ष ने 1-1 विकेट लिए। मैच का मैन ऑफ द मैच बीरगंज नेपाल की टीम के सुमित कुंवर को मिला जिन्होने विस्फोटक बल्लेबाजी करते हुए 65 गेंदो में 7 चौकों व 10 छक्को की मदद से 106 रन बनाए। मैच के बाद विजेता टीम के कप्तान एवं मैन ऑफ द मैच को मधवापुर के उप प्रमुख दीपक कुमार सिंह एवं आयोजन समिति के सदस्यों द्वारा ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। मौके पर अंपायर नवीन सिंह बी उज्जमा कमेंटेटर दीपेंद्र स्कोरर जितेंद्र दास सहित दोनों टीम के खिलाड़ियो के अलावा हजारो की संख्या में दर्शक मौजूद थे। टूनामेंट के सातवे लीग मैच में शनिवार को मधवापुर और पलामू की टीमो के बीच भिड़ंत होगी।

# खेल से मिलती हैं अनुशासन में रहने की सीख,खेल मासिक रूप से भी करता है सबलता प्रदान : हरे कृष्ण ईश्वर

प्रात : किरण संवाददाता




विभूतिपुर ।प्रखंड के मध्य विद्यालय राघोपुर के प्रांगण में नेहरू युवा केंद्र समस्तीपुर के तत्वाधान में युवा शक्ति क्लब विभूतिपुर के द्वारा दो दिवसीय खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ शनिवार को किया गया ।कार्यक्रम की शुरूआत सर्वप्रथम भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह जी तैलचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित किया गया, तत्पश्चात अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई ।कार्यक्रम के अध्यक्षता राष्ट्रीय युवा स्वयं सेवक केशव बाबू व संचालन शिक्षक नबो चौधरी ने किया ।वही कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक हरे कृष्ण ईश्वर ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल जीवन का अहम हिस्सा है ।यह हमें न केवल शारीरिक रूप से मजबूत बनाता है, बल्कि मानसिक रूप से भी सबलता प्रदान करता है। पढ़ाई के साथ-साथ खेल प्रतिस्पधाओं में भाग लेने से एक दूसरे से आगे निकलने की प्रतियोगिता का विकास होता है, साथ ही खेल से अनुशासन में रहने की भी सिख मिलती है। खेल को खेल की भावना से खेलना चाहिए हार और जीत तो सिक्के के दो पहलू है। सभी को भाईचारे से खेलना चाहिए ।साथ ही उन्होंने बताया कि गांवों में प्रतिभा की कमी नहीं है. ग्रामीण बच्चों को प्रतिभा दिखाने का मौका मिलें,तो राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकते है ।वही लड़का का 400 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर पिंटू कुमार,द्वितीय स्थान पर आयुष और तृतीय स्थान पर अंकित कुमार रहे,वहीं 200 मीटर लड़की के दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रेनू ,द्वितीय स्थान पर कीर्ति और तृतीय स्थान पर आकृति रही। साथ ही कबड्डी लड़का ए टीम ने बी टीम को 2.0से हराया। कार्यक्रम में प्रधानाध्यापक अरविंद कुमार राम ,युवा शक्ति क्लब के सचिव प्रभाकर ठाकुर, हरे कृष्णा ईश्वर ,अनिल सिंह, बैद्यनाथ सहनी शिक्षक नबो कुमार चौधरी,शिक्षिका पोजी कुमारी ,खेल शैल कुमारी ,कल्पना सिन्हा, हरिओम कुमार चौधरी, अनमोल कुमार, राधिका कुमारी आदि मौजूद थी।

# एसडीएम, डीएसपी के द्वारा चलाया गया सघन वाहन चेकिंग व जागरूकता अभियान

प्रात : किरण संवाददाता



मधुबनी जयनगर अनुमण्डल क्षेत्र में सड़क सुरक्षा ( ट्रैफिक ) यातायात नियम का पालन करने व सड़क दुर्घटना से बचाव को लेकर अनुमण्डल पदाधिकारी वीरेन्द्र कुमार और अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी विप्लव कुमार के द्वारा पुलिस बल के साथ क्षेत्र में सघन वाहन चेकिंग और यातायात नियम का पालन को लेकर वाहन चालको व आम जनो के बीच जागरूकता अभियान चलाया गया ।अनुमण्डल प्रशासन के द्वारा जयनगर स्थित कमला पुल के समीप, वाटर वेज चौक, देवधा उसराही , एन एच सड़क समेत अन्य जगहों पर आम जनो व वाहन चालकों के बीच जन जागरूकता सह सघन वाहन चेकिंग अभियान के तहत चलाया गया। वाहन चालकों को जागरूक करते हुए हेलमेट और सीट बेल्ट का उपयोग अवश्य रूप से करने व वाहन यातायात सम्बंधित कागजात दुरुस्त रख साथ रखने बेतरतीब वाहन न चलाने। बेतरतीब वाहन चलाने व यातायात के नियम का पालन न करने पर सड़क दुर्घटना हो सकती है। सड़क दुर्घटना से बचाव अति आवश्यक है यातयात के नियम का पालन करें क्योंकि आपका जीवन मूल्यवान है आप स्वयं व आम जनो को सुरक्षित रख सकते है। आपका इंतजार परिवार परिजन करते रहते है। इसलिए यातयात के नियमो का पालन अवश्य रूप से करे। यातयात के नियम व निर्देश का पालन करने समेत कई आवश्यक दिशा निर्देश दिए वाहन चालको को दिया गया। यह अभियान सड़क दुर्घटना से बचाव को लेकर चलाया जा रहा है। यातयात के नियम का पालन न करने बिना हेलमेट व वाहन सम्बंधित कागजात दुरुस्त न रखने यातयात के नियम के उलघ्न को ले ई चलान के माध्यम से कई वाहन चालको को जुमार्ना भी लगाया गया। यातायात नियम का पालन करने से वाहन चालक समेत आवागमन कर रहे आम जन लोग भी सुरक्षित रहते है। आम जन को भी यातयात के नियम का पालन करने को लेकर जागरूक किया गया। इसलिए वाहन चालको को आम जनो से यातायात नियम व निर्देश का पालन करने की अपील की गई। यह अभियान के तहत निरन्तर जारी रहेगा। ट्राफिक रूल यातयात के नियम व निर्देश का पालन न करने पर ई चलान के माध्यम से जुमार्ना लगाया जाएगा और निर्देश का उलघ्न करने निश्चित रूप से कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी।

# बाल कल्याण समिति सदस्यों का उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर । जिले के बंदरा प्रखंड परिसर में एक्शन एड व बाल विकास परियोजना के संयुक्त तत्वावधान में बाल कल्याण व संरक्षण समितियों के सदस्यों का एकदिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता सीमा कुमारी, बाल विकास परियोजना अधिकारी ने किया तथा विषयों पर अरविन्द कुमार जिला समन्वयक एक्शन एड ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया। उन्मुखीकरण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को बच्चों के चारों अधिकार जीवन का अधिकार, विकास का अधिकार, संरक्षण का अधिकार व सहभागिता के अधिकारों पर चर्चा की गई तथा इनसे जुड़ी हुई सामाजिक कुरीतियों यथा बाल विवाह के कारणों, परिणामों, बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006, बाल श्रम की स्थिति, बाल श्रम के विरुद्ध कानून, शिक्षा का अधिकार, शादी के नाम पर बेमेल विवाह,बाल व्यापार, ट्रेफिकिंग एक्ट, जिले में विषमलिंगानुपात की स्थिति और पीसीपीएनडीटी एक्ट, एम टी पी एक्ट, दहेज कुप्रथा और संबंधित कानून व सजा का प्रावधान, पॉक्सो एक्ट महिलाओं को कार्यस्थल पर सेक्सुअल हरासमेंट (पॉश एक्ट) के तहत आंतरिक शिकायत समिति तथा स्थानीय शिकायत समिति पर विशेष रुप से चर्चा की गई। उन्मुखीकरण कार्यक्रम में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ सहित सरकार के अतिमहत्वाकांक्षी योजना मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना जिसमें बालिकाओं को 21 किश्तों में 94 हजार एक सौ रुपए मिलते हैं तथा परवरिस योजना सहित स्पॉन्सरशिप योजना पर प्रतिभागियों को जानकारी दी गई।

## संक्षिप्त खबरें

### सुंदरपुर मे ट्रक की चपेट में आ जाने से बाइक सवार की मौत

मुंगेर । हेमजापुर थानांतर्गत सुंदरपुर ग्राम में राष्ट्रीय राजमार्ग 80 पर गुरुवार की देर रात्रि में ट्रक की चपेट में आने से एक बाइक सवार की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। मृतक की पहचान धरहरा थाना अंतर्गत मोहनपुर ग्राम का निवासी अधिक यादव का 21 वर्षीय पुत्र अमरजीत कुमार के रूप में हुई है। घटना के बारे में मिली जानकारी के अनुसार मृतक अमरजीत कुमार लखीसराय जिला के मेदनी चौकी ग्राम में अपने फूफा की मौत खबर जानकार वहां देखने के लिए गया था। मेदनी चौकी से वापस अपने पैतृक घर मोहनपुर लौट के क्रम में सुंदरपुर ग्राम स्थित राजमार्ग 80 पर ट्रक की चपेट में आ जाने से उसकी मृत्यु घटनास्थल पर हो गई। हेमजापुर थाना प्रभारी नीरज कुमार ने सुंदरपुर में सड़क दुर्घटना में बाइक सवार की मौत होने की पुष्टि की है।

# भौराटांड़ बालू घाट से दिन के उजाले में जारी है बालू तस्करी का खेल

- उलाई नदी के भौंराटांड़, कैराकादो व जीएनएम कॉलेज बालू घाट से अवैध बालू का खनन व परिवहन में लगे है स्थानीय बालू तस्कर

प्रात : किरण, संवाददाता

गिद्धौर। एक तरफ जिले भर के तमाम बालू घाटों पर अवैध बालू खनन व इसकी तस्करी पर जिला प्रशासन द्वारा रोक लगाने की पुर जोर कोशिश की जा रही है।तो दुसरी ओर गिद्धौर थाना क्षेत्र के उलाई नदी से तमाम कवायदों के बावजूद स्थानीय बालू तस्कर रात के अंधेरे में तो छोड़िए दिन दहाडे ट्रैक्टरों में बालू भर भर कर अवैध खनन व परिवहन में लगे है। बालू के अवैध खनन व परिवहन में लगे ट्रैक्टर का सोशल मीडिया पर वायरल है।वायरल हो रहे वीडियो की पुष्टि भास्कर नहीं करता।बताते चलें कि थाना क्षेत्र के भौराटांड़ नदी घाट से हर रोज दिन दहाड़े चल रहे अवैध बालू तस्करी को कभी भी देखा जा सकता है। यंहा के बालू स्थानीय बालू तस्करों को न तो स्थानीय प्रशासन का डर है न ही जिला प्रशासन का। बालू तस्कर खुलेआम उलाई नदी के भौराटांड़,कैराकादो व जीएनएम कालेज घाट से दिन दहाडे अवैध बालू का खनन कर इसकी तस्करी करने में मशगूल रहते है।व स्थानीय पुलिस प्रशासन सब कुछ जान कर भी अपनी आंख मुंदे बैठा है। ताज्जुब की बात यह है की ग्रामीणों एवं जन प्रतिनिधियों द्वारा पिछले दिनो से लगातार बालु तस्करी किए जाने की सूचना पुलिस प्रशासन को दी जाती रही है। पर आज तक चल रहे बालू तस्करी के रोकथाम के लिए कोई कार्रवाई नही की गई है।खैर जो भी हो पुलिस प्रशासन व स्थानीय बालू माफिया आपस में सांठ गांठ कर उपरोक्त सभी बालू घाटों से बालू का अवैध खनन व परिवहन करा हर रोज हजारों हजार रुपए की चांदी काट रहे हैं।

## ग्राम सभा आयोजित कर बंगलवा पंचायत की विकास योजनाओं का हुआ अनुमोदन

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। प्रखंड के बंगलवा पंचायत भवन में ग्राम सभा का आयोजन किया गया। पंचायत के मुखिया करमी देवी की उपस्थिति में मुखिया प्रतिनिधि परमानंद मांझी की अध्यक्षता में आयोजित इस ग्राम सभा के माध्यम से पंचायत के कई विकास योजनाओं का अनुमोदन किया गया। ग्राम सभा में वार्ड वाइज विकास योजना को चिन्हित और अनुमोदन किया गया। जीपीडीपी ग्राम पंचायत विकास कार्यक्रम के तहत चयनित सभी योजना को अनुमोदित किया गया। मौके पर मुखिया ने उपस्थित वार्ड सदस्यों को सरकार की संचालित योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी।वहीं मुखिया प्रतिनिधि परमानंद मांझी ने जानकारी देते हुए बताया कि पंचायती राज विभाग ने ग्राम पंचायत व गांवों के सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए योजनाओं को विकसित करने का जो निर्णय लिया है। इसके तहत पंचायतों की प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए पंचायतों को विकास की कार्ययोजना को खुद ही तय कर व जीपीडीपी के माध्यम से पंचायत विकास कार्य की रूप रेखा तैयार की जाएगी।पंचायतों को मिलने वाली राशि अब पंचायत परफार्मेंस ग्रांट यानी जीपीडीपी के आधार पर दी जाएगी अगले वित्तीय वर्ष के लिए ग्राम पंचायतों में जीपीडीपी के माध्यम से योजना चयन किया जाना है। सरकार द्वारा पंचायतों को मिलने वाली राशि अब पंचायत परफार्मेंस ग्रांट यानी जीपीडीपी के आधार पर प्रमुखता से किया जाना है।इसमें 15 वीं वित्त से लेकर सात निश्चय योजनाएं शामिल होगी। साथ ही पंचायत में स्वच्छता नल जल मनरेगा से जिविका दीदी को बकरी पालन सेड नली गली आंगनबाड़ी आवास वृधा पेंशन आदि पर चर्चा कर ग्रामीणों से रूबरू हुए।

## नया साल मनाने जा रहे बेटे बेटियों को करें सावधान

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई / सोनो : केवल भारत ही नहीं पूरी दुनियाँ में नया साल मनाने की तैयारी हो रही है । नदियों झीलों , समन्दर और पहाड़ों के पर्यटन स्थल और महानगरों में बार , होटल रेस्टोरेंट बुक हो चुके हैं । लेकिन एक बात समझ लें कि गत वर्ष सौ से अधिक युवा घर लौट ही नहीं सके थे । वे या तो नशे में गाड़ी चलाने के कारण दुर्घटनाग्रस्त हुये या नशे में हुये झगड़ों का शिकार बने थे । घायलों की संख्या भी सैकड़ों में रहीं । गत वर्ष केवल उत्तराखंड के पर्यटन स्थलों पर छह मौतें ओर पचहत्तर घायल हुये थे । जिसमें आपसी झगड़ों में पुलिस ने आधी रात को 55 युवाओं को बंदी बनाया था । वर्ष 2024 के समापन का पल समीप आ गया है । भारत में यह वर्ष 2024 अनेक उपलब्धियों की सौगात देकर विदा हो रहा है । पूरी दुनियाँ के साथ भारत में भी नववर्ष 2025 के स्वागत का तैयारी की समाचार मीडिया में आने लगे हैं । यह तैयारी पर्यटन स्थलों , होटलों , बार रेस्टोरेंट आदि में अधिक है । अंग्रेज क्रिसमस की इन छुट्टियों में मंसूरी नैनीताल आदि पहाड़ों पर जाया करते थे । अंग्रेज भले ही चले गये लेकिन छुट्टियों में पहाड़ों पर जाने की परंपरा छोड़ गये । पिछले वर्ष तो रास्ते में पाँच-पाँच किलोमीटर तक जाम लगा था । इसके अतिरिक्त बिते वर्ष हजारों लाखों लोगों द्वारा अपने नगर के होटलों में पार्टी देने की ही नहीं, कमरों की बुकिंग भी हो गई है । समय की तेज गति से अब यह प्रश्न पीछे छूट गया कि भारतीय परंपरा में नया साल कब आता है और कैसे मनाया जाता है । भारतीय शासन व्यवस्था और समाज जीवन एक जनवरी को नया साल मनाने की परंपरा में ढल गया है । दैनिक जीवन के कार्य ही नहीं अब तो जन्म पत्रिकाएँ भी अंग्रेजी वर्ष के दिनांक से बनती हैं । कुण्डली दिखाने के लिये भी अंग्रेजी तारीख ही दी जाती है । यह आधुनिक नया साल प्रातः कालीन सूर्योदय से आरंभ नहीं होता । यह आधी रात से होता है । नये साल का उत्सव भी आधी रात को मनाया जाता है । आधी रात के इस उत्सव की दो विशेषताएँ होतीं हैं । प्रथम यह उत्सव बिना शराब पार्टी के पूरा नहीं होता और दूसरा अधिकांश आयोजनों में स्त्री पुरुष साथ होते हैं । हालाँकि कुछ पार्टियों में परिवार और पारिवारिक मित्रों के साथ होती हैं । लेकिन अनेक पार्टियों में भाग लेने वाले जोड़े , पति पत्नि नहीं बल्कि मित्र होते हैं । इनमें अधिकांश वे युवा होते हैं जो पढ़ाई या जॉब के लिये घरों से बहुत दूर रहते हैं । पिछले साल नववर्ष की रात जो घटनाएँ घटीं थीं उनमें अधिकांश इसी प्रकार के समूहों के बीच घटीं थीं । जो हत्या , प्राण घातक मारपीट , बलात्कार एवं बलात्कार का प्रयास और बेहद घटिया छेड़छाड़ से भरीं थीं । वर्ष 2022 और 2023 के बीच एवं वर्ष 2023 और 2024 के बीच मनाये गये नववर्ष उत्सव की मध्य में रात्रि 10 बजे से 2-30 बजे के बीच केवल साढ़े चार घंटे में देश की राजधानी दिल्ली में कुल बत्तीस बड़े अपराध घटे थे । जिसमें उन्नीस बहुत गंभीर थे । इनमें चार मर्डर और बारह बलात्कार एवं बलात्कार का प्रयास थे । यदि इसमें दून , मुम्बई , बंगलूर , हैदराबाद तथा चैन्नई आदि 17 महानगरों के आँकड़े जोड़ें तो बड़े अपराधों की यह संख्या सौ से अधिक होती है । गत वर्ष केवल उत्तराखंड के विभिन्न पर्यटन स्थलों पर झगड़े और दुर्घटनाओं में छह मौतें हुईं थीं । जिसमें दून में चार , लालकुआँ भीमताल में एक और हल्द्वानी में एक मौत हुई थी । शराब के नशे में आधी रात को जो झगड़े हुये उनमें कुल 55

## 75 वर्षिय समाज सेवी गोपाल प्रसाद बरनवाल का निधन

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई / सोनो : बटिया बाजार निवासी समाज सेवी विनोद प्रसाद बरनवाल के पिताजी श्री गोपाल प्रसाद बरनवाल का शुक्रवार की देर रात अचानक निधन हो गया है , वे 79 वर्ष के थे । वे अपने पिछे पत्नी सावित्री देवी , तीन पुत्र , तीन पुत्रवधु एवं छह पोते पोतियों सहित भरा पुरा परिवार को छोड़कर इस दुनिया से सदा के लिए विदा हो गये । अचानक हुई उनके निधन की सुचना पाकर अंतिम दर्शन के लिए बड़ी संख्या में पहुंचे लोगों ने उन्हें नमन कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा को शॉति ओर परिजनों को दुख सहने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से कामना किए । स्वः गोपाल प्रसाद बरनवाल सोनो प्रखंड छेत्र में बिड़ी कंपनी के नाम से प्रसिद्ध थे । उनके द्वारा निर्मित कराये गये बिड़ी की सप्लाई पश्चिम बंगाल , उड़ीसा , मध्यप्रदेश एवं उत्तर प्रदेश आदि राज्यों तक किया जाता रहा है । जिस कारण वे बटिया बाजार में बिड़ी कंपनी के नाम से मसहूर थे । पांच भाईयों मे वे तिसरे नंबर पर थे । वे दहियारी गाँव निवासी स्वः प्रयाग लाल बरनवाल के सुपुत्र थे । उन्होंने अपने जीवन मे कभी अपनी मान सम्मान की रक्षा के लिए किसी के साथ समझौता नहीं किए थे । उनका पार्थिव शरीर की अंतिम दर्शन करने पहुंचे लोगों मे झामुमो केंद्रीय समिति सदस्य सह चकाई विधानसभा छेत्र के पुर्व विधायक प्रत्याशी श्री ओंकारनाथ बरनवाल , बिड़ी मजदूर संघ के प्रदेश अध्यक्ष सह सरपंच संघ के जिला अध्यक्ष दिनदयाल बरनवाल , स्थानीय मुखिया भीम रजक , दहियारी पेक्स सुकदेव प्रसाद यादव , समाज सेवी प्रहलाद बरनवाल , बसंत बरनवाल , प्रकाश बरनवाल , बलभद्र बरनवाल , गंदर पंचायत के पुर्व मुखिया यर्जुन प्रसाद यादव , काली पहाडी गाँव निवासी शिक्षक कपिलदेव प्रसाद माथुरी के अलावा झाझा एवं सोनो बाजार के कई बुद्धिजीवियों सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे ।

## स्कुल में तिथि भोजन का आयोजन बच्चों को खिलाया गया विशेष खाना

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई ई०अलीगंजः-बिहार सरकार ने स्कूलों में तिथि भोजन की शुरूआत की है। जिसमें हर 100 दिनों में विशेष दिन पर बच्चों को पौष्टिक भोजन कराया जाएगा। इसी के तहत अलीगंज प्रखंड स्थित मध्य विद्यालय हाबूनगर में शनिवार को तिथि भोजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे सैकड़ों बच्चों को पूड़ी सब्जी, खीर सलाद परोसा गया।मुख्य अथिति के रूप में दीपक शर्मा डीपीएम मध्याह्न भोजन जमुई, दिव्यांशु कुमार बीपीएम ई.अलीगंज, प्रमुख प्रतिनिधि मुकेश कुमार, बीआरपी सीताराम यादव, नरेश प्रसाद, मुकेश कुमार, सुभाष सक्सेना विक्रम कुमार, समाजसेवी योगेंद्र यादव, राजुमार यादव धीरेंद्र कुमार वार्ड सदस्य सह अध्यक्ष बिरेंद्र यादव सचिव सावित्री देवी मुख्यरूप से उपस्थित हुए, जिसमे छात्र एवं छाताओं सहित पदाधिकारीयों ने पंक्तिबद्ध होकर एक साथ किया भोजन, वहीं दीपक शर्मा डीपीएम मध्याह्न भोजन जमुई, ने उपस्थित ग्रामीण व छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए तिथि भोजन को बढ़ावा देने की बात कही. उन्होंने कहा की शिक्षकों को ससमय विद्यालय पहुंचकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की बात कही.उन्हों ने कहा कि भारत सरकार से मिली दिशा निर्देश के अनुसार निदेशक एमडीएम बिहार सरकार के निदेशानुसार जिले में तिथि भोजन का आयोजन कराया जा रहा है. बिपीएम दिव्यांशु ने कहा कि यह कार्यक्रम जिले के विभिन्न चयनित विद्यालयों में किया जा रहा है, तिथि भोजन खाकर बच्चों में खुशी देखी गयी. बताया कि तिथि भोजन का आयोजन एमडीएम के अंतर्गत विद्यालय में उपस्थित छात्र-छात्राओं के लिए समुदाय का कोई भी व्यक्ति या जनप्रतिनिधि अपने जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ पर आयोजित करा सकते हैं. तिथि भोजन के लिए लोगों को प्रेरित किया जा रहा है. तिथि भोजन के कारण छात्र-छात्राओं की उपस्थिति भी अपेक्षाकृत अधिक बढ़ोतरी होगी .

विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक मृत्युंजय कुमार ने बताया कि इस आयोजन को सफल बनाने एवं क्रियान्वित करने में विद्यालय की शिक्षिका प्रीति कुमारी एवं नीलम कुमारी का योगदान सराहनीय रहा वहीं विद्यालय के बच्चे भी काफी उत्साहित दिखे। स्कूलों में तिथि भोजन का मुख्य उद्देश्य बच्चों के बीच पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना और सामाजिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना है। यह परंपरा समाज के विभिन्न वर्गों को शिक्षा और पोषण के महत्व से जोड़ने का प्रयास करती है। स्कूलों में तिथि भोजन बच्चों महत्व से जोड़ने का काम करता है। मौके पर, शिक्षक संजय कुमार, संजय सिंह, सोनी कुमारी, मो. अफसार आलम सहित रसोईया दीदी उपस्थित थे।

## गजलकार दिलीप के निधन से साहित्यकार व ग्रामीण हुए शोकाकुल

बरियारपुर (मुंगेर)। गजलकार दिलीप कुमार सिंह दीपक के निधन से लक्ष्मीपुर गांव में पसरा सन्नाटा। आज अहले सुबह 62 वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी लीला समाप्त की। दो वर्ष पूर्व रेलवे वर्कशॉप जमालपुर से सेवा निवृत्त होकर अपने गजल को किताब का आकार देने में लगे थे। रोज साहित्यकारों से चर्चा करते। लेकिन भगवान को शायद मंजूर नहीं था। वो अपने पीछे पत्नी, दो बेटी, एक दामाद और एक बेटा छोड़ गए। दीपक जी के निधन पर साहित्यकारों ने शोक व्यक्त किया है जिसमें डॉ, विभुरंजन, डॉ शशि आनंद अलबेला, शत्रुध्न आर्या, भावानंद सिंह, डॉ श्यामल सुंदर आर्य, ब्रह्मदेव, पारस कुंज, कमलकांत पाण्डेय, नारायण झा, छाया पाण्डेय, श्रीनिवासन उपाध्याय, शंभुनाथ मिस्त्री, अधिवक्ता डॉ पुष्पलता, संपादक राजेन्द्र सिंह ह्यगुरु जीह्व, सीतांशु अरूण, प्रो. शुभ कुमार वर्णवाल, ओमप्रकाश जायसवाल, बासा के पूर्व अध्यक्ष सह साहित्यकार सुरेश कुमार शर्मा, अरविंद कुमार मुन्ना, रेल अधिकारी सह साहित्यकार शेखर खगाड़ी, हरिशंकर शुक्ला, कुमार भारतेंदु, दूरदर्शन के पूर्व अधिकारी सह साहित्यकार शंभू प्रसाद सिंह आदि शामिल हैं।

## झाझा पब्लिक स्कूल के बच्चों का लछुआड़ भ्रमण

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई [ झाझा ] शुक्रवार को झाझा पब्लिक स्कूल के द्वारा छात्रों के लिए एक शैक्षिक एवं मनोरंजक यात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्रा के अंतर्गत स्कूल के सभी छात्रों को लछुआड़ ले जाया गया, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। यात्रा का उद्देश्य छात्रों को न केवल प्रकृति के करीब लाना था, बल्कि उन्हें ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों की जानकारी प्रदान करना भी था। इस यात्रा के दौरान छात्रों ने लछुआड़ के प्रमुख स्थलों का भ्रमण किया और वहां के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को समझा साथ ही वहां के जैन गुरु ने सभी बच्चों के लिए 1 घंटे का क्लास भी दिया जिसमें उन्होंने जैन धर्म के सभी 24 तीर्थंकरों के बारे में जानकारी प्रदान की और झाझा पब्लिक स्कूल के सभी बच्चों से यह शपथ दिलाई कि आज से आप सभी बच्चे सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलेंगे। क्योंकि जैन धर्म का मूल मंत्र है ह्यअहिंसा परमो धर्माह्व स्कूल प्रबंधन ने इस यात्रा को सुरक्षित और स्मरणीय बनाने के लिए विशेष प्रबंध किए थे। छात्रों ने भी इस अनुभव का भरपूर आनंद लिया और अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन में विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया। झाझा पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर डॉ सुरेंद्र निराला ने बताया कि इस तरह के शैक्षिक भ्रमण बच्चों के मानसिक और भावनात्मक विकास में सहायक होते हैं। छात्रों के अभिभावकों ने भी इस पहल की सराहना की। यात्रा के समापन पर सभी बच्चे उत्साहित और नई जानकारियों से भरे हुए लौटे। स्कूल प्रबंधन ने भविष्य में इस तरह की और भी यात्राओं के आयोजन का आश्वासन दिया।

## पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर शोक सभा का आयोजन, दो मिनट मौन रख कर दी गई श्रद्धांजलि

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंजः- अलीगंज बाजार स्थित निजी भवन में शनिवार को सर्वदलिय कार्यकताओं एवं नेताओं की उपस्थिति में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर शोक सभा का आयोजन किया गया । जिसकी अध्यक्षता बखोरी पासवान एवं मकेश्वर यादव ने किया। शोक सभा के दौरान दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। वहीं दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। डॉ. मनमोहन सिंह भारत के दो बार प्रधानमंत्री रहे (2004-2014) और उन्होंने देश के हित में कई महत्वपूर्ण कार्य किए। इसके अतिरिक्त, वे एक अर्थशास्त्री और वित्त मंत्री के रूप में भी अपने कार्यकाल के लिए जाने जाते हैं। यहां उनके द्वारा देश के हित में किए गए प्रमुख योगदान है 1991 के आर्थिक सुधार वहीं पूर्व प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष मकेश्वर यादव ने कहा की जब मनमोहन सिंह वित्त मंत्री थे, उन्होंने 1991 में भारत की अर्थव्यवस्था को उदारीकरण, निजीकरण, और वैश्वीकरण के जरिए संकट से बाहर निकाला। उन्होंने लाइसेंस राज को खत्म किया, जिससे व्यापार और उद्योगों के लिए अवसर बढ़े। विदेशी निवेश को प्रोत्साहित किया, जिससे भारत की अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिली। ग्रोथ में सुधार (2004-2014) उनके प्रधानमंत्री कार्यकाल के दौरान, भारत ने विश्व में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में कदम बढ़ाए। उन्होंने ग्रामीण और शहरी विकास के लिए योजनाओं को प्रोत्साहन दिया। मनरेगा 2005 में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम लागू किया, जिसने ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब परिवारों को रोजगार प्रदान किया। यह योजना गरीबी उन्मूलन और ग्रामीण विकास में क्रांतिकारी साबित हुई। भारत-अमेरिका परमाणु समझौता (2008) डॉ. मनमोहन सिंह ने भारत-अमेरिका असैनिक परमाणु समझौते को सफलतापूर्वक लागू किया। शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार शिक्षा के अधिकार को 2009 में लागू किया, जिससे प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य और मुफ्त बनाया गया। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ किया। आर्थिक समावेशन वित्तीय समावेशन की पहल की, जैसे कि जन धन योजनाओं का प्रोत्साहन। सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सशक्त बनाया। आतंकवाद से निपटने के प्रयास मुंबई हमले (2008) जैसी चुनौतियों के बावजूद, उन्होंने कूटनीति और सुरक्षा को मजबूत किया। भारत के सामरिक संबंधों को अन्य देशों के साथ प्रगाढ़ किया। पंचायती राज और विकेंद्रीकरण उन्होंने ग्रामीण विकास के लिए पंचायती राज को मजबूत बनाने पर जोर दिया। डॉ. मनमोहन सिंह के योगदानों ने भारत की अर्थव्यवस्था को स्थिरता और प्रगति की दिशा में अग्रसर किया। उनके नेतृत्व को संतुलित और दूरदर्शी माना जाता है। मौके पर मकेश्वर यादव, बखोरी पासवान, शंभू शरण यादव, शिव बालक पासवान, अवधेश यादव, कांग्रेस नेता जोगन यादव, मुकेश यादव, धीरेन्द्र यादव, नरेश मांझी, रामविलाश पासवान, राजेश पासवान, सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे

## युवा लोजपा की बैठक में 60 से अधिक युवाओं ने लोजपा आर की सदस्यता ग्रहण की

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। लोजपा आर के प्रधान कार्यालय में लोजपा आर युवा प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष प्रेम प्रकाश की अध्यक्षता में संगठन विस्तार को लेकर एक बैठक का आयोजन किया गया । बैठक में तकरीबन 60 से अधिक युवाओं ने लोजपा आर की सदस्यता ग्रहण किया जबकि आधे दर्जन युवा कार्यकर्त्ता को नयी जिम्मेदारी दी गयी । बैठक में संगठन का विस्तार करते हुए सिद्धार्थ कुमार को जिला महासचिव, जबकि प्रेम कुमार को तारापुर प्रखंड अध्यक्ष ,सूरज कुमार को प्रखंड उपाध्यक्ष तो गुडडु कुमार भगत एवं शिवा कुमार को प्रखंड महासचिव वही अमित कुमार को सोशल मीडिया प्रभारी का दायित्व दिया गया हैं । इस मौके पर दर्जनों युवाओं में सुशांत कुमार, राजा, सौरभ ,प्रभु ,राजीव, अजित ,सत्येन्द्र एवं विनोद कुमार सहित तकरीबन 5 दर्जनों युवाओं ने चिराग पासवान के विजन बिहार फर्स्ट बिहारी फर्स्ट से प्रभावित होकर सदस्यता ग्रहण किया ।इस मौके पर जिलाध्यक्ष प्रेम प्रकाश ने कार्यकत्ताओं एवं पार्टी के नवनिर्वाचित पदाधिकारी को कहा कि हमलोगों को मिलकर एनडीए के द्वारा केन्द्र एवं राज्य में जो बिकास की गंगा बहायी जा रही हैं उसे एक एक युवाओं एवं घर घर जाकर लोगो को बताना हैं ।चिराग पासवान बिहार की स्मिता के लिए बिहार फर्स्ट बिहारी फर्स्ट के लिए संकल्पित हैं इसे भी आम लोगो को बताना हैं ।इसके साथ ही युवाओं को अधिक से अधिक लोजपा आर में जोडकर चिराग जी के सपने को साकार करते हुए बिहार की प्रतिष्ठा को फिर से देश में शिखर पर ले जाना हैं ।इन्होने कहा कि आगामी 2 मार्च को पटना के गांधी मैदान में होने वाले बिहार फर्स्ट बिहारी फर्स्ट रैली में मुंगेर जिला से अधिक से अधिक संख्या में जाने का भी आहवान किया । इस मौके पर मुंगेर जिला के प्रधान महासचिव गौरव कुमार, जिला उपाध्यक्ष प्रभात कुमार एवं सोनू कुमार ,आईटी सेल के जिलाध्यक्ष रोहित सिंह ,तारापुर नगर अध्यक्ष विशाल शर्मा मुख्य रुप से उपस्थित थे । कार्यक्रम का समापन रोहित सिंह के धन्यवाद ज्ञापन के साथ की गयी ।

## शिक्षकों के बीच किया गया नियुक्ति पत्र वितरण

### कुल 143 शिक्षकों को मिला औपबंधिक नियुक्ति पत्र

- गिद्धौर संसाधन केन्द्र में सक्षमता उत्तीर्ण शिक्षकों को नियुक्ति प्रमाण पत्र का किया गया वितरण

प्रात : किरण, संवाददाता

गिद्धौर। बिहार सरकार के निर्देश पर जिला शिक्षा पदाधिकारी के आदेशानुसार शनिवार को बीआरसी गिद्धौर में सभी शिक्षकों के बीच औपबंधिक नियुक्ति पत्र का वितरण किया गया।शिक्षकों को नियुक्ति पत्र वितरण करते हुए प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी शमशुल होदा ने कहा कि सरकार आप सभी शिक्षकों को 1 जनवरी 2025 से राज्यकर्मी बना रही है,अब आपलोग नियोजित शिक्षक से सरकारी शिक्षक बन गए हैं।सभी शिक्षकों को शुभकामनाएं देते हुए शिक्षकों से अनुरोध किया कि आपलोग मन लगाकर बच्चों को पढ़ाए आपकी सुविधाओं का सारा ख्याल सरकार कर रही है।नियुक्ति पत्र वितरण के बारे में शिक्षक राजीव वर्णवाल ने बताया कि गिद्धौर प्रखंड से कुल 143 शिक्षकों को औपबंधिक नियुक्ति पत्र दिया गया। जिसमें कक्षा एक से पांच तक 81,छह से आठ तक 18, नौ से दस तक 33, एवं ग्यारह से बारह तक 11 शिक्षकों को औपबंधिक नियुक्ति पत्र दिया गया। नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम में बीपीएम प्रवीण कुमार, बीआरपी राजकिशोर सिंह,केदार प्रसाद,रामनिवास तिवारी,सुधांशु शेखर,राहुल आनंद,रीना कुमारी शिक्षक दिलीप मंडल,वशिष्ठ नारायण यादव,कैलाशपति यादव, दिनेश रजक,अंशुमाला,ममता कुमारी,सुमन कुमार,श्वेता कुमारी,मनीषा कुमारी,आशीष भारती,आशीष कुमार,बबीता कुमारी,राजेश केशरी सहित सैकड़ों शिक्षक उपस्थित थे।

## बच्चों के नामांकन एवं उनके ठहराव सुनिश्चित करने के उद्देश्य से एमजीएस उच्च विद्यालय के प्रांगण में समग्रग सेवा ने कि बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [ झाझा ] शनिवार को समग्र सेवा के तत्वावधान में विद्यालयों में बच्चों के नामांकन एवं उनके ठहराव सुनिश्चित करने के उद्देश्य से नगर क्षेत्र के एमजीएस उच्च विद्यालय के प्रांगण में एक बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रखंड क्षेत्र स्थित पांडेडीह, पताव, एकडारा, ढिबा, फतेहपुर, धोबियाकुरा, बाराजोर, घोरिकवा, एवं जामूखरैया के मध्य विद्यालय शिक्षा समिति के सदस्यों की उपस्थिति हुई। बैठक में किस तरह बच्चों को शिक्षा से जोड़ना है , कैसे बच्चों को विद्यालय में नामांकन करवाना है और उसे विद्यालय में कैसे ठहराव किया जाए इसपर विशेष चर्चा किया गया। समग्र सेवा से आए सचिव मकेश्वर रावत ने बताया कि आज के समय मे शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहा है। आज ग्रामीण क्षेत्र में बच्चे- बच्चियां विद्यालय में शत प्रतिशत नही आ पाते है जिससे उसकी शिक्षा पर गहरा असर पड़ता है इसलिए शिक्षा समिति के सदस्य ग्रामीणों को यह बताए कि जीवन मे शिक्षा कितना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बैठक में शिक्षा समिति के सदस्यों को यह भी कहा गया कि अपने अपने क्षेत्र में वैसे बच्चे जिनका नामांकन विद्यालय में नही हुआ है उनका नामांकन करवाने में विद्यालय प्रशासन को सहयोग प्रदान करे। बैठक में कई लोग मौजूद थे।

## 14वां तीन दिवसीय वार्षिक खेलकूद महोत्सव का समापन शनिवार को भव्य तरीके से हुआ

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर) ।प्रखंड स्थित संत मैरी इंग्लिश स्कूल में आयोजित 14 वां तीन दिवसीय वार्षिक खेल महोत्सव का समापन शनिवार को भव्य तरीके से हुआ। इस मौके पर मुख्य अतिथि अनुमंडल पदाधिकारी (एसडीओ) राकेश रंजन, अंचल अधिकारी निशीथ नंदन और संग्रामपुर थाना एसआई दिगंबर सिंह ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। स्कूल के डायरेक्टर रोशमीन अलोशिएस ने अतिथियों का स्वागत बुके एवं शॉल देकर किया। समापन समारोह में अनुमंडल पदाधिकारी राकेश रंजन ने खेलों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसे जीवन का अभिन्न अंग बताया। उन्होंने कहा कि आज के समय में खेलकूद से ज्यादा युवा मोबाइल फोन कि और आकर्षित हो रहा है जिसके कारण कम उम्र में ही उनके आंख में परेशानी होने लगती है और उन्हें चश्मे की जरूरत पड़ जाती है। हमें बच्चों को मोबाइल का लत छुड़वाकर बाहर मैदान में खेलने की आदत लगानी चाहिए। जिससे उनके शारीरिक और मानसिक रूप का विकास होगा। उन्होंने सरकार द्वारा खेलों को बढ़ावा देने और खिलाड़ियों को दी जा रही सुविधाओं की जानकारी दी। इस वर्ष रेड हाउस ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 353 अंकों के साथ पहला स्थान हासिल किया। येलो हाउस 348 अंकों के साथ दूसरे, ब्लू हाउस 296 अंकों के साथ तीसरे, और ग्रीन हाउस 292 अंकों के साथ चौथे स्थान पर रहा। विजेता रेड हाउस को एसडीओ राकेश रंजन ने ट्रॉफी देकर सम्मानित किया, जबकि उपविजेता येलो हाउस को अंचल अधिकारी निशीथ नंदन ने ट्रॉफी प्रदान की। स्कूल के प्रधानाध्यापक जींस अलोशिएस ने बताया कि यह वार्षिक खेल महोत्सव पिछले 14 वर्षों से सफलतापूर्वक आयोजित किया जा रहा है, और हर साल इसे और बेहतर बनाने का प्रयास होता है। उन्होंने शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों के योगदान की सराहना की। इस अवसर पर मकान मालिक बलराम यादव, प्रवीण कुमार स्कूल के डायरेक्टर, प्रधानाध्यापक, तमाम शिक्षक गण सहित सैकड़ों अभिभावक और अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। तीन दिनों तक चले इस खेल महोत्सव ने न केवल छात्रों की प्रतिभा को मंच दिया बल्कि उनमें खेल भावना और अनुशासन का भी विकास किया।

# आर्थिक आजादी के शिल्पकार

भारत की आर्थिक आजादी के शिल्पकार, लगातार 10 साल तक देश के प्रधानमंत्री रहे, कई मील-पत्थर योजनाओं के सूत्रधार, महान अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह दिवंगत हो गए। उन्होंने 92 साल की भरी-पूरी जिंदगी जी और देश को दूसरी आजादी दिलाई, इससे ज्यादा एक जिंदगी में और क्या किया जा सकता था? लिहाजा उनका देहावसान उनकी पार्थिव नियति ही है। भारत आजाद देश था, लेकिन औसत भारतीय के स्वप्न और आर्थिक आयाम अपेक्षाकृत आजाद नहीं थे। हम एक गरीब और कर्जदार देश थे। बहरहाल आज विकासशील देश हैं और विकसित बनने का लक्ष्य तय किया है। 1991 के दौर में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार मात्र एक अरब डॉलर रह गया था, लिहाजा आयात का घोर संकट था। तत्कालीन चंद्रशेखर सरकार को पेट्रोलियम और उर्वरक के आयात के लिए 40 करोड़ डॉलर जुटाने के लिए 46.91 टन सोना इंग्लैंड और जापान के बैंकों में गिरवी रखना पड़ा था। उस दौर में कांग्रेसी प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने डॉ. मनमोहन सिंह को वित्त मंत्री बनाया और उसी के साथ आर्थिक उदारीकरण ने भारत की दूसरी आजादी का अध्याय लिखना आरंभ कर दिया। हालांकि डॉ. सिंह के पहले बजट के मसविदे को प्रधानमंत्री राव ने खारिज कर दिया था। उनकी उम्मीदें लीक से हटकर थीं। डॉ. सिंह के सामने आर्थिक चुनौतियां रखी गईं और बहुत थोड़े से वक्त में उन्होंने ऐसा बजट तैयार किया, जिसने भारत के आर्थिक भाग्य को ही संकटों और अभावों से मुक्त कर दिया। अर्थव्यवस्था खोल दी गई। विदेशी निवेशकों और कंपनियों के लिए देश के दरवाजे खोल दिए गए। डॉ. सिंह कहा करते थे-भारत किसी से, क्यों डरे? हम विकास के ऐसे चरण में पहुंच चुके हैं, जहां विदेशियों से डरने के बजाय हमें उनका स्वागत करना चाहिए। हमारे उद्यमी किसी से कमतर नहीं हैं। हमें अपने उद्योगपतियों पर पूरा भरोसा है। अंततः 24 जुलाई, 1991 के उस बजट ने आर्थिक उदारीकरण का जो दौर शुरू किया, उसके दो साल के भीतर ही विदेशी मुद्रा भंडार 10 अरब डॉलर, यानी 10 गुना अधिक, हो गया। लाइसेंस और इंस्पेक्टर राज का दौर समाप्त हुआ और 34 क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का ऑटोमैटिक रूट तैयार कर दिया गया। कंपनियों पर कई पाबंदियां उठा ली गईं। कॉरपोरेट के पूंजीगत मुद्दों पर नियंत्रक खत्म किया गया और सेबी को संवैधानिक शक्तियां दी गईं। सॉफ्टवेयर निर्यात के लिए आयकर अधिनियम की धारा 80 एचएचसी के तहत कर-छूट की घोषणा भी की गई। वित्त मंत्री के तौर पर डॉ. मनमोहन सिंह ने जिन आर्थिक सुधारों का सूत्रपात किया, उन्हें प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने भी निरंतर बनाए रखा, नतीजतन भारत दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनता चला गया। उन आर्थिक सुधारों की बुनियाद पर ही आज भारत विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और विदेशी मुद्रा का भंडार 650 अरब डॉलर से अधिक का है। वास्तव में डॉ. मनमोहन सिंह भारत की आर्थिक आजादी के शिल्पकार ही नहीं, कोई फरिश्ता थे, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, भारत सरकार में आर्थिक सलाहकार, रिजर्व बैंक के गवर्नर से लेकर प्रधानमंत्री तक की व्यापक जिम्मेदारियां और भूमिकाएं एक ही व्यक्ति नहीं निभा सकता। यकीनन वह एक दुर्लभ शख्सियत थे। प्रधानमंत्री के तौर पर डॉ. सिंह ने कई मील-पत्थर योजनाओं को क्रियान्वित किया। उस विरासत और जनवादी सोच को कौन भूल सकता है? प्रधानमंत्री सिंह ने 6-14 साल की उम्र के बच्चों के लिए अनिवार्य, मुफ्त शिक्षा का कानून बनाया। सरकारी पारदर्शिता और जवाबदेही के मद्देनजर सूचना का अधिकार कानून बनाया। खाद्य सुरक्षा को कानूनी रूप दिया। साल में कमोबेश 100 दिन के रोजगार की गारंटी वाले मनरेगा का कानून लागू किया। उन्हें नमन।

# नम्रता और कर्मठता की प्रतिबद्धता मनमोहन सिंह

देश के पूर्व प्रधानमंत्री डां मनमोहन सिंह ने 92 वर्ष की उम्र में दिल्ली के एम्स हॉस्पिटल में 26 दिसंबर को अंतिम सांस ली। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह लंबे समय से स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना कर रहे थे। डॉ. मनमोहन सिंह का जन्म 26 सितंबर 1932 को अविभाजित भारत के पंजाब प्रांत के एक गांव में हुआ था। एक साधारण पृष्ठभूमि से आने वाले डॉ सिंह ने अपने जीवन में शिक्षा, अर्थशास्त्र और राजनीति में असाधारण उपलब्धियां हासिल कीं। डॉ मनमोहन सिंह ने 1948 में पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (यूके) से 1957 में अर्थशास्त्र में प्रथम श्रेणी ऑनर्स की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1962 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के नफील्ड कॉलेज से अर्थशास्त्र में डिलिट की उपाधि अर्जित की। शिक्षा के प्रति उनका लगाव उन्हें पंजाब विश्वविद्यालय और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अध्यापन की ओर ले गया। अनुकरणीय, भारतीय राजनीति और आर्थिक सुधारों में उनका योगदान हमेशा याद किया जाएगा। 1971 में डॉ. सिंह भारत सरकार से जुड़े और वाणिज्य मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार बने। 1972 में उन्हें वित्त मंत्रालय का मुख्य आर्थिक सलाहकार नियुक्त किया गया। इसके बाद उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया, जिनमें वित्त मंत्रालय के सचिव, योजना आयोग के उपाध्यक्ष, भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर, प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष जैसे पद शामिल हैं। समर्पण, 1991 से 1996 तक, डॉ. सिंह भारत के वित्त मंत्री रहे। इस दौरान उन्होंने आर्थिक सुधारों की एक व्यापक नीति लागू की, जिसे विश्वभर में सराहा गया। इन सुधारों ने भारत को आर्थिक संकट से उबारकर एक नई दिशा दी। डॉ. मनमोहन सिंह 1991 में पहली बार राज्यसभा के सदस्य बने। उन्होंने असम का प्रतिनिधित्व पांच बार किया और 2019 में राजस्थान से राज्यसभा सदस्य बने। 1998 से 2004 तक, जब भारतीय जनता पार्टी सत्ता में थी, डॉ. सिंह राज्यसभा में विपक्ष के नेता रहे। उन्होंने 1999 में दक्षिण दिल्ली से लोकसभा चुनाव भी लड़ा, लेकिन सफलता नहीं मिली। सेवापथ, 2004 के आम चुनावों के बाद 22 मई को उन्हें भारत के चौदहवें प्रधानमंत्री बने। उन्होंने 2009 में दूसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली और 2014 तक भारत के प्रधानमंत्री के रूप में सेवा की और देश के विकास में अहम भूमिका निभाई। वह जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी और नरेंद्र मोदी के बाद चौथे सबसे लंबे समय तक पीएम पद पर रहने वाले प्रधानमंत्री थे। अभिभूत, मनमोहन सिंह भारत के पहले सिख प्रधानमंत्री भी थे। लेखक, राजनीतिज्ञ, विचारक और विद्वान के रूप में प्रसिद्ध डॉ. मनमोहन सिंह अपनी नम्रता, कर्मठता और कार्य के प्रति प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते रहे। स्तुत्य, अपने सार्वजनिक जीवन में विभिन्न पुस्तकें के डॉ. मनमोहन सिंह को दिए गए कई पुरस्कारों और सम्मानों में से सबसे प्रमुख भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान, पद्म विभूषण (1987) था। इसके अलावा उन्हें भारतीय विज्ञान कांग्रेस का जवाहरलाल नेहरू जन्म शताब्दी पुरस्कार (1995), एशिया मनी अवार्ड (1993 और 1994), यूरो मनी अवार्ड (1993), कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (1956) का एडम स्मिथ पुरस्कार, कैम्ब्रिज के सेंट जॉन्स कॉलेज में विशिष्ट प्रदर्शन के लिए राइट पुरस्कार (1955) भी मिला था। उन्हें जापानी निहोन किजई शिम्बुन एवं अन्य देशों द्वारा सम्मानित किया गया था। डॉ. मनमोहन सिंह को कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड तथा अन्य कई विश्वविद्यालयों द्वारा मानद उपाधियां भी प्रदान की गई थीं। वाहेगुरु जी उनकी आत्मा को सद्गति और देशवासियों को यह दुःख सहने की शक्ति दें।

# नेहरू को छोटा करने की नहीं, उनके काम से होड़ करने की जरूरत

**आजादी के पहले भी मैसूर के राजा कृष्णा वाडियार ने कृष्ण राजा सागर बांध का 1911 में निर्माण शुरू किया था जिसे 1932 में मैसूर की जनता को समर्पित किया गया। इसके बाद ही आजादी के बाद बने बांधों का सिलसिला शुरू होता है। आजादी के प्रथम वर्ष में भारत का कुल बजट मात्र 184 करोड़ रुपए था और पूरे देश में भुखमरी की स्थिति थी। 1943 में ही बंगाल के दुर्भिक्ष में 30 लाख लोग भूख से अपनी जान गँवा चुके थे। भुखमरी के इन हालातों में देश को आजादी मिली थी। यह स्पष्ट था कि खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ाये बिना हम अपने लोगों का पेट नहीं भर सकते। उसके लिए सिंचाई चाहिए, नदियों पर बांध चाहिए किंतु हमारे पास धन भी नहीं था। ऐसे हालातों में भी 1947 में ही जवाहरलाल नेहरू ने उड़ीसा की महानदी पर हीराकुंड बांध की शुरूआत की, जिसे 1957 में देश को समर्पित किया गया।**

भूपेन्द्र गुप्ता

लेखक

देश में आज विकास को लेकर नए-नए नरेटिव गढ़ने के अलावा इतिहास के पन्नों को कलंकित करने का चलन चल पड़ा है। संगठित रूप से आजादी के बाद की सरकारों के कामकाज और योगदान को नीचा दिखाने की आक्रामक कोशिशें हो रही.हैं। नई पीढ़ी में शोध के अभाव को देखकर उसे बरगलाने की चेष्टा की जा रही है। देश को उसके सही स्वरूप में पहचान कर देश के विकास की यात्रा की समझ और विकास की कल्पना को चोट पहुंचाई जा रही है। जिससे वास्तविक इतिहास को जानने से ही रोका जा सके। देश के नेताओं को सुविधानुसार मिस कोट किया जा रहा है। मध्य प्रदेश में केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना के दौरान ऐसी ही बातें रखी गई जिससे महसूस हो कि जवाहरलाल नेहरू के समय से ही विकास की योजनाओं की उपेक्षा की गई। यहां तक कहा गया कि देश में बड़े-बड़े बांध बनाने और जल संरक्षण को समझने का काम देश में अन्य लोगों ने किया है। जल संसाधनों के संदर्भ में प्रधानमंत्री जी ने घुमाकर यह भी बताया कि जलशक्ति को मजबूत करने के दूसरे नेताओं के प्रयासों को जवाहरलाल नेहरू के नाम पर चिपका दिया गया। क्या इस तरह का नेरेटिव बनाया जाना उचित है। क्या यह सत्य है या महज नेहरू जी को नीचा दिखाने और संसद में बाबासाहब का उपहास करने से पैदा हुए संकट से निकलने के लिये भाजपा की रणनीति है। इसे समझने के लिए बेहतर होगा कि हम देश में जल संरचनाओं के इतिहास को जानें और समझें। सभी जानते हैं कि डॉ बाबासाहेब अंबेडकर की मृत्यु 1956 में हो गई थी और वह नेहरू जी के मंत्रिमंडल में कानून मंत्री थे उनकी पूरी शक्ति संविधान की ड्राफ्टिंग, संविधान सभा के सभी सदस्यों के योगदान का संकलन कर संविधान को उसका स्वरूप देना था। न कि बांध बनवाना। तब भाजपा 2024 में बनने वाले दुहान बांध के बहाने युग पुरुषों को लड़वाने का नया काम क्यों शुरू कर रही है। भारत में नदियों को बांधने का इतिहास बहुत पुराना है। देश का सबसे पुराना बांध तमिलनाडु की कावेरी नदी पर बनाया गया था। जिसे कल्लणै बांध कहते हैं। इसे 150 ईश्वी से 100 ईश्वी के बीच में चोल राजा करिकल ने बनवाया था। इसका अर्थ है कि नदियों को बांधने और जल संरचनाओं को बचाने तथा संरक्षित करने के लिए भारत में बांध बनाने की तकनीकी और संकल्प शक्ति हजारों साल पहले ही आ चुकी थी। आजादी के पहले भी मैसूर के राजा कृष्णा वाडियार ने कृष्ण राजा सागर बांध का 1911 में निर्माण शुरू किया था जिसे 1932 में मैसूर की जनता को समर्पित किया गया। इसके बाद ही आजादी के बाद बने बांधों का सिलसिला शुरू होता है। आजादी के प्रथम वर्ष में भारत का कुल बजट मात्र 184 करोड़ रुपए था और पूरे देश में भुखमरी की स्थिति थी। 1943 में ही बंगाल के दुर्भिक्ष में 30 लाख लोग भूख से अपनी जान गँवा चुके थे। भुखमरी के इन हालातों में देश को आजादी मिली थी। यह स्पष्ट था कि खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ाये बिना हम अपने लोगों का पेट नहीं भर सकते। उसके लिए सिंचाई चाहिए, नदियों पर बांध चाहिए किंतु हमारे पास धन भी नहीं था। ऐसे हालातों में भी 1947 में ही जवाहरलाल नेहरू ने उड़ीसा की महानदी पर हीराकुंड बांध की शुरूआत की, जिसे 1957 में देश को समर्पित किया गया। इस बांध से 47 लाख एकड़ फीट जल संग्रहण और 347 मेगावाट बिजली का उत्पादन हुआ। इसके तत्काल बाद 1948 में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने तमिलनाडु में भवानी सागर बांध का शिलान्यास किया जो 1955 में पूरा हुआ। यह एक अर्दन डेम था जिसके माध्यम से 16 मेगावाट बिजली भी पैदा की जानी थी। इसी तरह पंजाब में सतलज नदी पर 1948 में ही भाखड़ा नंगल बांध की नींव डाली गई। यह उस समय तक का सबसे बड़ा बांध था जिसमें 75 लाख एकड़ फीट जल संग्रहण होना था और 1325 मेगावाट बिजली का उत्पादन होना था। जब 1963 में यह बांध देश को समर्पित किया गया तो इसके माध्यम से हरित क्रांति का आगाज हुआ। मैक्सिकन लाल गेहूं पर निर्भर भारत की जनता देशी खाद्यान्न की आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ी। कर्नाटक की तुंगभद्र नदी पर 1949 में कंपोजिट स्पिल वे डेम का शिलान्यास जवाहरलाल नेहरू ने किया जो 1953 में पूर्ण हुआ। इससे 127 मेगावाट बिजली का निर्माण होता था। उत्तरप्रदेश में 1953 में रिहंद बांध की शुरूआत की गई जो 1962 में देश को समर्पित किया गया इससे 300 मेगावाट बिजली का निर्माण शुरू हुआ। तेलंगाना में 1955 में कृष्णा नदी पर नागार्जुन सागर बांध की शुरूआत हुई जिसे 1967 में देश को समर्पित किया गया इस बांध से न केवल 93.72 लाख एकड़ फुट पानी सिंचाई के लिए मिला बल्कि 816 मेगावाट बिजली का भी उत्पादन हुआ। इसी तरह महाराष्ट्र की कोयना नदी पर 1956 में जवाहरलाल नेहरू ने कोयना बांध की शुरूआत की जिसे 1964 में देश को समर्पित किया गया। इस बांध से 24 लाख एकड़ फीट जल संग्रहण और 1960 मेगावाट बिजली का उत्पादन हुआ। आज के झारखंड में 1957 में मैथोन बांध की शुरूआत की गई यह बांध 60 हजार किलोवाट बिजली का उत्पादन भी करता है। मध्य प्रदेश की नर्मदा नदी पर 1956 में ही तवा बांध जो एक स्पिलवे बांध है, का निर्माण शुरू हुआ जो 1974 में देश को समर्पित किया गया। आज देश में जिस सरदार सरोवर बांध की बार-बार चर्चा होती है उस सरदार सरोवर बांध की आधारशिला भी जवाहरलाल नेहरू ने 1961 में सरदार वल्लभ भाई पटेल के नाम पर रख दी थी जिसके माध्यम से आज मध्य प्रदेश महाराष्ट्र को बिजली और गुजरात को पानी मिल रहा है। तीनों प्रदेश इससे बनने वाली बिजली से रोशन हो रहे हैं। प्रथम प्रधानमंत्री मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने दो-दो युद्धों का सामना करने के बावजूद अपने 17 साल के कार्यकाल में उड़ीसा की महानदी, तमिलनाडु की भवानी, कर्नाटक की तुंगभद्रा, उत्तरप्रदेश की रिहन्द, पंजाब की सतलज, मध्यप्रदेश की नर्मदा, महाराष्ट्र की कोयना, झारखंड की बारकार, तेलंगाना की कृष्णा नदियों को बांध दिया था। वे एक मिशनरी की तरह जुनूनी की तरह इस काम में लगे क्या यह आसान काम था?नौ राज्यों की नौ नदियों को बांधकर 17 साल में देश को समर्पित करना भगीरथी कल्प था। नेहरू ने यह काम तब कर दिखाया जब न पोकलेन थी न जेसीबी थी न इतनी उन्नत तकनीकि थी नेहरू के पुरुषार्थ को छोटा करने का कोई भी प्रयत्न देश के पुरुषार्थ को छोटा करने का प्रयत्न है। आज नेहरू को छोटा करने की नहीं उनके काम से होड़ करने की जरूरत है।

# उदारीकरण एवं आर्थिक सुधार के महासूर्य का अस्त होना...

**जिससे एक सशक्त राष्ट्रनायक, स्वप्नदर्शी राजनायक, आदर्श चिन्तक, भारत में नये अर्थ के निमार्ता, कुशल प्रशासक, दार्शनिक के साथ-साथ भारत को आर्थिक महाशक्ति का एक खास रंग देने की महक उठती है। उनके व्यक्तित्व के इतने रूप हैं, इतने आयाम हैं, इतने रंग है, इतने दृष्टिकोण हैं, जिनमें वे व्यक्ति और नायक हैं, दार्शनिक और चिंतक हैं, प्रबुद्ध और प्रधान है, शासक एवं लोकतंत्र उन्नायक हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने डॉ. सिंह के निधन पर कहा है कि जीवन के हर क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल करना आसान बात नहीं है। एक नेक इंसान के रूप में, एक विद्वान अर्थशास्त्री के रूप में उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। दो बार देश के प्रधानमंत्री रहे डॉ. मनमोहन सिंह ने पांच दशक तक सक्रिय राजनीति की, अनेक पदों पर रहे, केंद्रीय वित्त मंत्री व प्रधानमंत्री- पर वे सदा दूसरों से भिन्न रहे, अनूठे रहे।**

ललित गर्ग

लेखक

भारत के धुरंधर अर्थशास्त्री, प्रशासक, कद्दावर नेता, दो बार प्रधानमंत्री रह चुके डॉ. मनमोहन सिंह का 92 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उनके निधन से आर्थिक सुधार का महासूर्य अस्त हो गया, भारतीय राजनीति में एक संभावनाओं भरा राजनीति सफर ठहर गया, जो राष्ट्र के लिये एक गहरा आघात है, अपूरणीय क्षति है। वे निश्चित ही आर्थिक सुधारों एवं उदारीकरण के नींव के पत्थर थे, मील के पत्थर थे। वे आर्थिक सुधार की बुलंद आवाज थे। उन्हें आर्थिक सुधार, भारत में वैश्विक बाजार व्यवस्था एवं उदारीकरण का जनक कहा जा सकता है। जिन्होंने न केवल देश-विदेश के लोगों का दिल जीता है, बल्कि विरोधियों के दिल में भी जगह बनाकर, अमिट यादों को जन-जन के हृदय में स्थापित कर हमसे जुदा हो गये हैं। डॉ. सिंह यह नाम भारतीय इतिहास का एक ऐसा स्वर्णिम पृष्ठ है, जिससे एक सशक्त राष्ट्रनायक, स्वप्नदर्शी राजनायक, आदर्श चिन्तक, भारत में नये अर्थ के निमार्ता, कुशल प्रशासक, दार्शनिक के साथ-साथ भारत को आर्थिक महाशक्ति का एक खास रंग देने की महक उठती है। उनके व्यक्तित्व के इतने रूप हैं, इतने आयाम हैं, इतने रंग है, इतने दृष्टिकोण हैं, जिनमें वे व्यक्ति और नायक हैं, दार्शनिक और चिंतक हैं, प्रबुद्ध और प्रधान है, शासक एवं लोकतंत्र उन्नायक हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने डॉ. सिंह के निधन पर कहा है कि जीवन के हर क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल करना आसान बात नहीं है। एक नेक इंसान के रूप में, एक विद्वान अर्थशास्त्री के रूप में उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। दो बार देश के प्रधानमंत्री रहे डॉ. मनमोहन सिंह ने पांच दशक तक सक्रिय राजनीति की, अनेक पदों पर रहे, केंद्रीय वित्त मंत्री व प्रधानमंत्री- पर वे सदा दूसरों से भिन्न रहे, अनूठे रहे। घाल-मेल से दूर। भ्रष्ट राजनीति में बेदाग। विचारों में निडर। टूटते मूल्यों में अडिग। घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। वे भारत के इतिहास में उन चुनिंदा नेताओं में शामिल हैं जिन्होंने सिर्फ अपने नाम, व्यक्तित्व और करिश्मे के बूते पर न केवल सरकार चलाई बल्कि एक नयी सोच की राजनीति को पनपाया, पारदर्शी एवं सुशासन को सुदृढ़ किया। विलक्षण प्रतिभा, राजनीतिक कौशल, कुशल नेतृत्व क्षमता, बेवाक सोच, निर्णय क्षमता, दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता के कारण कांग्रेस के सभी नेता उनका लोहा मानते रहे, उनके लिये वे मार्गदर्शक ही नहीं, प्रेरणास्रोत भी है। वे बेहद नम्र इंसान थे और वह अहंकार से कोसों दूर थे। उनके प्रभावी एवं बेवाक व्यक्तित्व से भारतीय राजनीति एवं लोकतांत्रिक संस्थान चमकते रहे हैं। डॉ. सिंह ने भारत की अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजारों के लिए खोलने के लिए उदारीकरण सुधार लागू किए। साथ ही, उन्होंने लाइसेंस राज समाप्त कर, निजीकरण और राज्य नियंत्रण में कमी की। डॉ. सिंह द्वारा विदेशी निवेश को आकर्षित करने के साथ निर्यात को प्रोत्साहित किया गया। डॉ. सिंह का जन्म ब्रिटिश भारत के पंजाब में 26 सितम्बर 1932 को हुआ था। उनकी जन्मतिथि भी 26 एवं निधन तिथि भी 26 एक संयोग ही कहा जायेगा। उनकी माता का नाम अमृत कौर और पिता का नाम गुरुमुख सिंह था। देश के विभाजन के बाद सिंह का परिवार भारत चला आया। डॉ. सिंह की पत्न ी का नाम गुरशरण कौर है, जो कि एक गृहिणी और गायिका भी हैं। उनके तीन बेटियां हैं। पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई पूरी की। बाद में वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गये। जहाँ से उन्होंने पीएच. डी. की। तत्पश्चात उन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी. फिल. भी किया। डॉ॰ सिंह ने अर्थशास्त्र के अध्यापक के तौर पर काफी ख्याति अर्जित की। वे पंजाब विश्वविद्यालय और बाद में प्रतिष्ठित दिल्ली स्कूल ऑफ इकनामिक्स में प्राध्यापक रहे। इसी बीच वे संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन सचिवालय में सलाहकार भी रहे और 1987 तथा 1990 में जेनेवा में साउथ कमीशन में सचिव भी रहे। 1971 में डॉ॰ सिंह भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मन्त्रालय में आर्थिक सलाहकार के तौर पर नियुक्त किये गये। इसके तुरन्त बाद 1972 में उन्हें वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार बनाया गया। इसके बाद के वर्षों में वे योजना आयोग के उपाध्यक्ष, रिजर्व बैंक के गवर्नर, प्रधानमन्त्री के आर्थिक सलाहकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष भी रहे हैं। भारत के आर्थिक इतिहास में हाल के वर्षों में सबसे महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब डॉ॰ सिंह 1991 से 1996 तक भारत के वित्त मन्त्री रहे। डॉ. सिंह ने भारत के 13वें प्रधानमंत्री के रूप में लगातार दो कार्यकाल पूरे किए हैं। पहले कार्यकाल के दौरान उन्होंने राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम लागू किया। वहीं सूचना का अधिकार अधिनियम भी उनके कार्यकाल में आया। इसके अतिरिक्त उन्हें ऐतिहासिक भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता पर हस्ताक्षर के लिए भी जाना जाता है। दूसरे कार्यकाल में उन्होंने बुनियादी ढांचे के विकास और सामाजिक कल्याण योजनाओं पर ध्यान केंद्रित किया। हालांकि, इस दौरान उन्हें 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला और राष्ट्रमंडल खेल घोटाले जैसे विवादों का भी सामना करना पड़ा। यह बात हम सभी जानते हैं कि उन्हें मौन पीएम भी कहा जाता था, हालांकि उन्होंने इस पर चुप्पी तोड़ते हुए सार्वजनिक रूप से इसका सटीक जवाब भी दिया था।

# किसी एक की सल्तनत के अंत का आरंभ

पंकज शर्मा

अखिल भारतीय संत समिति के महासचिव जितेंद्रानंद सरस्वती से ले कर रामभद्राचार्य तक और चक्रपाणि जैसों से ले कर देवकीनंदन ठाकुर जैसों तक को मोहन भागवत की कही बात पर त्रिशूल ताने खड़ा देखने के पीछे की नीयत तो कोई भी समझ सकता है, मगर अविमुक्तेष्वरानंद सरीखे चैतन्य मनीषी को इस प्रसंग में भागवत-विरोधी छतरी के नीचे खड़ा देख कर किसी को हैरत हो रही हो, न हो रही हो, मैं तो अवाक हूं। मैं दो.साल से कह रहा था कि हिंदू हृदय सम्राट की पदवी के अलंकरण का सिंगारदान अब तलवार की म्यान में तब्दील हो चुका है, प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत के उस में एक साथ विराजे रहने के दिन लद गए हैं और 2025 में हमारे प्रधानमंत्री द्वारा लालकिले से देश को संबोधित करते-करते दोनों में से एक के लिए विदा लेने की नौबत आ जाएगी। मगर मेरी इस पेशीनगोई पर मुझे परायों की गाली-गलौज तो सुननी ही पड़ रही थी, अपने भी दूर की कौड़ी कह कर नाक-भौं सिकोड़ रहे थे। मैं मुसलसल कह रहा था कि भागवत-कथा के समापन का फैसला तो नरेंद्र भाई सितंबर-2015 के पहले हफ्ते में ही मन-ही-मन ले चुके थे और उस के बाद से तो वे सिर्फ.ह्यदुआ-सलाम बनी रहेह्न का दिखावा कर रहे हैं, लेकिन अपने को दक्षिण, वाम और मध्यमार्गी राजनीति का आचार्य मानने वाले मेरे लिखे-कहे को अयथातथ बता कर खारिज करते रहे। मगर अब आज का दृश्य क्या है? भागवत जी और नरेंद्र भाई के रिश्ते क्या अब आप को सास-बहू मंजिल की कगार तक पहुंच गए नहीं लग रहे हैं? रोज-रोज मंदिर-मस्जिद विवाद उठाने वालों को आड़े हाथों लेने के बाद से जिस तरह हिंदू धर्म के कई सर्वमान्य, अर्धमान्य और स्वयंभू संत-महात्मा भागवत जी पर पिल पड़े हैं, क्या वह आप को सायास नहीं लग रहा है? हर मस्जिद के नीचे मंदिर खोजने की प्रवृत्ति पर संघ-प्रमुख ने प्रहार कोई पहली बार तो किया नहीं है। तो फिर उन की ऐसी सलाह की चदरिया को इसी बार इतना दागदार करने की कोशिशें क्यों हो रही हैं? इसलिए हो रही हैं कि अगले बरस के अंतिम चार महीनों में भारत की राजनीति के करवट लेने के आसार बढ़ते जा रहे हैं। आठ महीने बाद इस महाभारत के अठारहवें दिन के युद्ध की शुरूआत होगी और तब अलग-अलग प्रहरों की उठापटक में यह तय होगा कि संघ आगे भी भाजपा के पितामह की भूमिका में ही बना रहेगा या उसे अपनी संतान का मोहताज बन कर जिंदगी गुजारनी पड़ेगी? अखिल भारतीय संत समिति के महासचिव जितेंद्रानंद सरस्वती से ले कर रामभद्राचार्य तक और चक्रपाणि जैसों से ले कर देवकीनंदन ठाकुर जैसों तक को मोहन भागवत की कही बात पर त्रिशूल ताने खड़ा देखने के पीछे की नीयत तो कोई भी समझ सकता है, मगर अविमुक्तेष्वरानंद सरीखे चैतन्य मनीषी को इस प्रसंग में भागवत-विरोधी छतरी के नीचे खड़ा देख कर किसी को हैरत हो रही हो, न हो रही हो, मैं तो अवाक हूं। स्थूल-बुद्धिधारकों को भी यह अच्छी तरह दीख रहा है कि भागवत के ताजा बयान पर बवाल कौन खड़ा करवा रहा है और क्यों खड़ा करवा रहा है। राजप्रासाद के दालान में चल रहे इस मल्लयुद्ध की परछाइयों के दिग्दर्शन के लिए किसी दिव्यदृष्टि की जरूरत नहीं है। बिना आंखों के भी यह देखा जा सकता है कि भागवत पर हो रही ढेलेबाजी के पत्थर किस छत पर रखे हैं। ऐसे में किसी अविमुक्त का महापातकी रुझान मेरी तो समझ में नहीं आ रहा। मुझे बस इतना समझ में आ रहा है कि संघ-प्रमुख के पास मदमस्त मतंग की चाल-ढाल नियंत्रित करने का जो अंकुश है, वह किसी भी हिंदू धर्म गुरु या उन के समूह के पास नहीं है। इसलिए कि किसी भी हिंदू मठाधीश के पास वह पैदल सेना नहीं है, जो मतदान-प्रबंधन की जमीनी कूवत रखती हो। मुझे नहीं लगता कि भागवत हिंदू धर्म की ठेकेदारी हासिल करने की ख़्वाहिश रखते होंगे, लेकिन हिंदू-मतों के अचला-संयोजन में वे किसी भी रामभद्राचार्य से कहीं ज्यादा प्रभावशाली हैं और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पथ-संचलन शक्ति के सामने अखिल भारतीय संत समिति की कोई संरचित बिसात ही नहीं है। इसलिए हिंदुओं को संगठित करने की ठेकेदारी कोई भागवत को दे-न-दे, यह इजारेदारी तब तक उन्हीं के पास रहेगी, जब यही वजह है कि भागवत को संघ-प्रमुख की आसंदी से धकेलने की कवायद पिछले चार-पांच बरस से अपने उरूज पर है। 2024 के आम चुनाव के समय जब नरेंद्र भाई के इशारे पर भाजपा-अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने संघ की हैसियत यह कह कर कमतर दिखाने का अपकर्म किया कि अब भाजपा स्वयं-सक्षम है और उसे किसी भी चुनाव में संघ के सहारे की जरूरत नहीं है तो हम ने देखा कि किस तरह भागवत ने ऐसा उलट-पुराण पढ़ा कि नरेंद्र भाई धम्म से स्पष्ट बहुमत के नीचे गिर पड़े। रामलला का भव्य-दिव्य मंदिर जब बिना संघ-सहयोग के अयोध्या तक में भाजपा को जीत नहीं दिला पाया तो नरेंद्र भाई का अघोषित दूत बन कर जगत प्रकाश दौड़े-दौड़े नागपुर के संघ मुख्यालय पहुंचे और अपने कहे-कहाए की माफी मांगी। भागवत तब क्षमावंत नहीं होते तो क्या तकनीकी कलाकारी के बावजूद हरियाणा और महाराष्ट्र के चुनाव नतीजे ऐसे आ पाते? संत समाज के बयानवीर भावनात्मक लहरों का कैसा ही उफान उठा दें, लेकिन अगर उन तरंगों को भाजपा के लिए वोट में बदलने का जिम्मा संभालने से संघ के स्वयंसेवक इनकार कर दें तो क्या होता है झ यह नरेंद्र भाई देख चुके हैं।

## संक्षिप्त खबरें

### नवादा मठिया से युवक का शव बरामद

प्रातः किरण, संवाददाता

कोपा / प्रखण्ड के कोपा थाना क्षेत्र के नवादा मठिया के काली स्थान के समीप 42 वर्षीय युवक का शव बरामद किया गया। मृतक मांझी थाना क्षेत्र के सोनवर्षा बिन टोलिया के रामपूजन ठाकुर का पुत्र राजू कुमार ठाकुर बताया गया है। कोपा थाना अध्यक्ष पिन्टू कुमार ने ग्रमीणों ने पूछ ताछ के दौरान बताया कि युवक दो दिनों से मंदिर के समीप ही रह रहा था।ठंड के कारण उसकी मौत हुई है।के पैकेट से आधार कार्ड एव दवाइया भी मिला। जानकारी के अनुसार मृतक कोपा थाना के समीप प्रसाद लाइन होटल में खाना बनाता था। दो माह पहले होटल में काम करना छोड़ दिया था। सुबह में स्थानीय लोगों ने देखा तो पुलिस को सूचित किया।उसके बाद कोपा पुलिस ने शव होने की खबर परिजनों को दी। कोपा पुलिस ने युवक के पैकेट से आधार कार्ड से ही शव को पहचान हुई।शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराकर शव को परिजनों को सौंप दिया।

### दो वारंटियों को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल

प्रातः किरण, संवाददाता

इसुआपुर । थाना क्षेत्र के डटरा पुरसौली गांव के वीरेंद्र प्रसाद तथा उनकी पत्नी ज्ञान्ती देवी जो पूर्व से फरार चल रहे थे, शुक्रवार की रात उनके घर से गिरफ्तार किया गया। वहीं शनिवार को छपरा जेल भेज दिया गया। पुलिस टीम में थानाध्यक्ष कमल राम, एस आई प्रशंसा कुमारी तथा पुलिस बल थी।

### जनता दरबार में चार मामले का हुआ निपटारा

प्रातः किरण, संवाददाता

इसुआपुर । थाना परिसर में शनिवार को आयोजित जनता दरबार में चार मामले आए। जिसमें चारों मामले का निपटारा दोनों पक्षों ने आपसी मतभेद बुलाकर सुलह समझौता कर लिया। पहला मामला मुड़वां एराजी गांव के रवि रंजन कुमार सिंह तथा इस्लाम मियां के बीच दूसरा मामला निपनिया गांव के लक्ष्मण राम तथा चंद्रदेव राम के बीच तथा तीसरा मामला अचितपुर गांव के राकेश कुमार गुप्ता तथा नगराज गांव के राजेंद्र सिंह के बीच, वहीं चौथा मामला मुड़वा एराजी गांव के राजा बाबू तथा लक्ष्मण सिंह के बीच वर्षों से लंबित जमीनी विवाद था। मौके पर सीओ करुण करण, थानाध्यक्ष कमल राम तथा राजस्व कर्मचारी ब्रजनंदन सहाय थे।

### हाथी महोत्सव में बिजलिकली हाथी ने जीता सुंदरी हाथी का ताज

प्रातः किरण, संवाददाता

बगहा। नेपाल स्थित चितवन के सौराहा मे 26 दिसंबर से आयोजित हाथी व पर्यटक महोत्सव के दूसरे दिन शुक्रवार की संध्या मे यूनाइटेड हाथी संचालन सहकारी संस्था की 41 वर्षीय बिजलीकली हाथी ने प्रतियोगिता मे शामिल चार अन्य हाथी को पीछे छोड़,हाथी सुंदरी का ताज अपने नाम कर लिया। महोत्सव मे खेलकूद तथा कला व्यवस्थापन समिति के अध्यक्ष ऋषि तिवारी ने बताया की हाथी सुंदरी प्रतियोगिता के लिए हाथी का व्यवहार, सर सफाई, चाल ढाल,श्रृंगार,नाखून,आंख की सुंदरता,शरीर की बनावट,महावत का निर्देश का पालन करना और बाल की अवस्था के लिए कुल 300 अंक निर्धारित किया गया था। जिसमे यूनाइटेड हाथी संचालन समिति का हाथी बिजलीकली ने 300 अंक मे से 222 अंक हासिल कर प्रतियोगिता मे शामिल पूनम कली,पूजा कली, चंपा कली और एकता कली को पीछे छोड़ कर हाथी सुंदरी का खिताब अपने नाम कर लिया।

# बच्चों को गुणवतापूर्ण भोजन कराएं मुहैया : जिलाधिकारी

## एमडीएम मेन्यू का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करें

- अधार कार्ड/आपार कार्ड निर्माण में अपेक्षित प्रगति लाने हेतु करें ठोस कार्रवाई
- जिलाधिकारी ने शिक्षा कार्यालय द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यों की गहन समीक्षा की
- गुणवतापूर्ण सुधार के लिए कारगर कार्रवाई करने का निर्देश

प्रातः किरण, संवाददाता

बेतिया। जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय ने जिला शिक्षा कार्यालय द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यों की गहन समीक्षा की। समीक्षा के क्रम में उन्होंने कहा कि शिक्षा विभाग के सभी अधिकारी बेहतर तरीके से कार्य करें। गुणवतापूर्ण सुधार के लिए कारगर कार्रवाई करें। ससमय कार्यों को निष्पादित कराना सुनिश्चित करें। लंबित कार्यों को अविलंब निष्पादित करें। उन्होंने कहा कि शिक्षा विभाग द्वारा जारी दिशा-निदेर्शों का शत-प्रतिशत अनुपालन करें। सभी अधिकारी बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए अपने-अपने दायित्वों का बखूबी पालन करें।

उन्होंने कहा कि सीडब्ल्यूजेसी/एमजेसी से संबंधित मामलों के निष्पादन में अच्छा कार्य किया गया है। शेष मामलों का निष्पादन भी ससमय कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिया कि सेवा शिकायत निवारण सहित विभिन्न माध्यमों से प्राप्त शिकायतों का नियमानुकूल समाधान करें। शिकायतों से संबंधित मामले लंबित नहीं रहे, इसका विशेष ध्यान रखें।

विभागीय कार्रवाई की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि अच्छे तरीके से जांच-पड़ताल करने के बाद ही कार्रवाई सुनिश्चित की जाय। निर्दोष पर कार्रवाई नहीं होने पाए, इसे सुनिश्चित करें।

उन्होंने जिला शिक्षा पदाधिकारी को निर्देश दिया कि जिन विद्यालयों की रंगाई-पुताई अबतक नहीं हुई है, वैसे विद्यालयों में शीघ्र रंगाई-पुताई का कार्य पूर्ण करा लें। इसके साथ ही अधार कार्ड/आपार कार्ड निर्माण में अपेक्षित प्रगति लाने हेतु ठोस कार्रवाई करें। प्रतिदिन कार्य प्रगति की मॉनिटरिंग एवं रिव्यू करें।

जिलाधिकारी ने जिला शिक्षा पदाधिकारी एवं डीपीओ, मध्याह्न भोजन को निर्देश दिया कि एमडीएम मेन्यू का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करें। बच्चों को गुणवतापूर्ण भोजन मुहैया कराएं। उन्होंने जिला शिक्षा पदाधिकारी को निर्देश दिया कि अपने अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मियों के कार्यों की निगरानी करें। गड़बड़ी करने वालों के विरूद्ध कार्रवाई करें।

इस अवसर पर उप विकास आयुक्त सुमित कुमार, जिला शिक्षा पदाधिकारी रजनीकांत प्रवीण सहित शिक्षा विभाग के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

# महिला सशक्तिकरण को लेकर जदयू का नारी शक्ति रथ इमरी पंचायत पहुंचा, महिलाओं ने किया भव्य स्वागत

प्रातः किरण, संवाददाता

नगरा।मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में महिलाओं के लिए चलायी जा रही कल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से जदयू का नारी शक्ति रथ शनिवार को मढ़ौरा विधानसभा क्षेत्र के नगरा प्रखंड के इमरी पंचायत के गोपालपुर गांव पहुंचा.जदयू महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश अध्यक्ष डॉ. भारती मेहता के नेतृत्व में महिला संपर्क यात्रा का आयोजन हुआ.इस कार्यक्रम में क्षेत्र के बड़ी संख्या में महिलाओं ने इस कार्यक्रम में भाग लिया.कार्यक्रम के दौरान जिला जदयू महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष कुसुम देवी और जदयू के मुख विंग के जिला अध्यक्ष अल्ताफ आलम राजू सहित अन्य कार्यकताओं ने रथ का भव्य स्वागत किया.कार्यक्रम का संबोधन करते हुए डॉ. भारती मेहता ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में पिछले 19 वर्षों में महिलाओं को मान-सम्मान और अधिकार मिले हैं.सरकार की योजनाओं से महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं.महिला संपर्क यात्रा का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को इन योजनाओं से अवगत कराना और उन्हें जागरूक करना है.साथ ही उन्होंने कहा कि महिलाओं का विश्वास मुख्यमंत्री पर बढ़ा है और यह विश्वास आगामी 2025 के विधानसभा चुनावों में जदयू की ताकत बनेगा.वहीं महिला प्रकोष्ठ के प्रदेश उपाध्यक्ष पूजा एन शर्मा ने कहा कि नीतीश सरकार ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जो कदम उठाए हैं, वे राज्य के विकास में मील का पत्थर साबित हो रहे हैं. महिला संपर्क यात्रा सशक्तिकरण की दिशा में एक और मजबूत पहल है.तथा महिला प्रकोष्ठ के प्रदेश उपाध्यक्ष उषा सिन्हा ने कहा कि महिलाओं को समाज में उनकी सही जगह दिलाने के लिए नीतीश सरकार ने लगातार प्रयास किए हैं.आज महिलाएं जागरूक और आत्मनिर्भर हो रही हैं.वहीं प्रदेश महासचिव सह सारण संगठन प्रभारी रणविजय कुमार ने कहा कि महिला सशक्तिकरण जदयू की प्राथमिकता है. महिलाओं का समर्थन ही नीतीश सरकार की सबसे बड़ी ताकत है. वहीं जदयू जिलाध्यक्ष अल्ताफ आलम राजू ने कहा कि सरकार ने हर क्षेत्र में महिलाओं को आगे बढ़ने का मौका दिया है और साथ लेकर चल रही है. सहित आदि बाते कहीं. इस कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य रूप से महिला प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष कुसुम देवी ,प्रदेश उपाध्यक्ष पूजा एन शर्मा ,उषा सिंहा, अनीता मिश्रा,रेणुका कुशवाहा,शोभा देवी, राजकुमारी विभु, सुनीता देवी,कुमारी गुड्डी जायसवाल,कुसुम रानी, शकीला बानो, चांदनी सिंह , रेणु सिंह,रचना शर्मा ,शीला देवी,प्रदेश महासचिव सह सारण प्रमंडल संगठन प्रभारी रणविजय कुमार, जदयू जिला अध्यक्ष अल्ताफ आलम राजू,नगरा प्रखण्ड अध्यक्ष अनिल कुमार, शंभु मांझी, साजिद आलम सोनू ,वसीम अकरम ,पप्पू सिंह ,संजीत सिंह , सहित सैकड़ों मौजूद थे.सभी ने कहा कि कार्यक्रम ने न केवल महिलाओं को जागरूक किया, बल्कि यह भी स्पष्ट किया कि जदयू महिलाओं के सहयोग से आगामी चुनाव में बेहतर प्रदर्शन की तैयारी कर रही है.नारी शक्ति रथ 30 दिसंबर तक सारण जिले के विभिन्न प्रखंडों का दौरा करेगा,जिसमें सरकार की योजनाओं को लेकर महिलाओं को जागरूक किया जाएगा.

### भूखों को खाना खिलाना सबसे बड़ा नेक कार्य :रिजवी

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय।लायंस क्लब आफ छपरा ग्रेटर के द्वारा 212 गरीबों एवं भूखे को अन्नपूर्णा खिचड़ी-वितरण का कार्यक्रम अंश फ्लैश श्री दावत रेस्टोरेंट के नीचे किया गया। क्लब एडमिनिस्ट्रेटर लायन एस जेड ए रिजवी ने बताया कि खिचड़ी-वितरण का यह कार्यक्रम प्रत्येक शनिवार को दिन में 1:00 बजे से 10 माह से हर शनिवार को किया जा रहा है और इस कार्य को सफल बनाने में सभी मेंबरों का भरपूर सहयोग मिल रहा है

आज के मेहमान खास रणजीत सिंह जी थे जिनके द्वारा शनिवार को खिचड़ी का कार्यक्रम की शुरूआत हुई। इस प्रोग्राम को सफल बनाने में मुख्य भूमिका प्रोग्राम अध्यक्ष रूपेश कुमार एवं एस एम इब्राहिम क्लब उपाध्यक्ष राजेश कुमार उपाध्याय क्लब सचिव जफर हुसैन जैदी दिलीप कुमार चौरसिया की रही । इस कार्यक्रम में क्लब एडमिनिस्ट्रेटर एस जेड ए रिजवी संतोष कुमार सिंह, डॉ वरुण भारद्वाज, ,राजेश कुमार उपाध्याय ,, शेखर कुमार ,मदन कुमार ,रंजीत कुमार सिंह साथी ने कार्यक्रम को सफल बनाया ।

# पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के कार्यों को हमेशा याद किया जाएगा: जिला अध्यक्ष

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा । पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर सारण जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा जिला अध्यक्ष अजय सिंह के नेतृत्व में श्रद्धांजलि सभा आयोजन कर कांग्रेस कार्यकताओं ने मनमोहन सिंह को श्रद्धा सुमन किया ।

इस अवसर पर संबोधन करते हुए जिला अध्यक्ष अजय सिंह ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि आजाद भारत के इतिहास में शैक्षणिक योग्यता और उनके द्वारा देश के लिए किए गए योगदान को हमेशा याद किया जाएगा । अध्यक्ष ने कहा कि डॉक्टर मनमोहन सिंह ने साल 2008 के भीषण आर्थिक मंदी के दौर में न सिर्फ भारत की अर्थव्यवस्था को दुरुस्त रखा बल्कि जब अंतरराष्ट्रीय बैंक रोज दिवालिया हो रहे थे,तब भी भारतीय बैंकिंग व्यवस्था को सुदृढ़ रखा, और किसी भी निवेशक की जमापूंजी पर कोई असर नहीं पड़ा। पूर्व प्रधानमंत्री ने अपने शासनकाल में देश की तरक्की के लिए अनेकों कार्य किया, चाहे मनरेगा कानून लाना हो,या शिक्षा का अधिकार, भूमि अधिग्रहण कानून , सूचना का अधिकार सहित हर क्षेत्र में मनमोहन सिंह ने एक युग दृष्टा और दूरदर्शी सोचे का उदाहरण प्रस्तुत किया।शोक सभा में कांग्रेस जिला उपाध्यक्ष सह मिडिया प्रभारी डा० शंकर चौधरी, विजय कुमार मिश्रा, शिवपूजन राय, जितेन्द्र कुमार सिंह, केदार नाथ सिंह, शैलेश कुमार सिंह, महेश्वर दूबे, सुबोध जयसवाल, संत कुमार सिंह, हरीश कुमार सिंह, हरेश यादव, रमेश कुमार यादव, संदीप रौशन यादव, उदय प्रताप सिंह, मालिक प्रसाद यादव, तारकेश्वर राम, सुमन पाठक, ओम प्रकाश अग्रहरी, शफीउल्लाह कुरैशी, सेराज अहमद, धमेन्द्र कुमार धर्म, ललन सिंह, लालबाबू सिंह, डा० आजाद ब्रजेन्द्र, जयंत सिंह, अब्दुल कादीर खान, सुनीता मिश्रा, बृजानन्द पाठक, फिरोज इकबाल, तरुण तिवारी, बिमल तिवारी, लालबाबू सिंह, याशीन अजाद, अकरम कुरैशी, नुरुल हक अंसारी, ब्रजेश सिंह, मसुदन रविदास, नाज़िर अहमद, प्रशांत तिवारी, फैसल अनवर, शौकत अली, फरहान असरफ, अहमद रजा

## छापेमारी में 50 किलो प्लास्टिक जब्त,8000 जुमार्ना भी लगाया गया

छपरा । नगर निगम द्वारा प्लास्टिक इस्तेमाल के विरुद्ध चलाए गए विशेष अभियान में धावा दल द्वारा लगभग 50 किलो प्लास्टिक एवं 8000 का जुमार्ना वसूला गया ' बता दें कि सिंगल प्लास्टिक यूज पूरी तरह प्रतिबंध है, और इसके विरुद्ध नगर निगम द्वारा बराबर अभियान चलाया जाता रहा है ' शनिवार को सिटी मैनेजर अरविंद कुमार एवं स्वच्छता पदाधिकारी संजीव मिश्रा के नेतृत्व में साहेबगंज में धावा दल द्वारा छापामारी की गई ' छापानी अभियान में लगभग 50 किलो प्लास्टिक को जप्त किया गया और जप्त दुकानदारों को 8000 का जुमार्ना लगाया गया ' और सिटी मैनेजर एवं स्वच्छता पदाधिकारी द्वारा दुकानदारों को हिदायत भी दी गई कि भविष्य में प्लास्टिक का इस्तेमाल न किया जाय ।

# मेडिकल इंजीनियरिंग छात्रों का सपना आकाश ग्रुप छपरा पूरा करेगी: वाईस प्रेसिडेंट

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा ।मेडिकल और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित आकाश ग्रुप की शाखा अब छपरा में शुभारंभ हो चुका है, कोटा और दिल्ली से मेडिकल इंजीनियरिंग की तैयारी करने वाले छात्रों का सपना छपरा में ही पूरा होगा ' उक्त बातें आकाश ग्रुप के वाईस प्रेसिडेंट चंद्रमणि सिंह ने प्रेस मीट कार्यक्रम के तहत सारण मुख्यालय में अवस्थित अपने कार्यालय कक्ष में पत्रकारों से बात करते हुए कही ' प्रेस मीडिया से बात करते हुए चंद्रमणि सिंह ने कहा कि आकाश ग्रुप 36 वर्षों से मेडिकल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में क्वालिटी ऑफ एजुकेशन की गुणवत्ता को बनाए रखा है, दिल्ली और कोटा की सुविधा अब आपके शहर छपरा में मिलेगा ' उन्होंने मीडिया को संबोधित करते हुए यह भी कहा कि आकाश गुप्ता ब्रांच छपरा में इसी सत्र से शुभारंभ होगा ' उन्होंने कहा कि आकाश ग्रुप द्वारा ऑल इंडिया लेवल पर नेशनल टैलेंट हंट एग्जाम 6 वर्ग से लेकर 12वी तक के छात्रों के लिए निःशुल्क आयोजित कर रहा है, बेहतर रैंक हासिल करने वाले छात्रों को 100 प्रतिशत तक स्कॉलरशिप प्रदान किया जाएगा ' आकाश ग्रुप के वाइईस प्रेसिडेंट चांदमणि सिंह ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि एग्जाम ऑनलाईन और ऑफलाइन दोनों की सुविधा रहेगी ।

18 जनवरी से 25 जनवरी के बीच एग्जाम होगा ' इसके लिए छपरा ब्रांच से संपर्क कर ऑनलाइन के माध्यम से फॉर्म सबमिट की जा सकती है ' उन्होंने कहा कि छात्र जिस क्लास में पढ़ रहे हैं,उसी क्लास के सिलेबस के आधार पर टेस्ट होगा ' उन्होंने कहा कि ऑल इंडिया में लगभग 450 आकाश ग्रुप की शाखाएं हैं ' उन्होंने यह भी कहा कि छपरा ब्रांच में नामांकन करने वाले छात्रों को कभी भी ऑल इंडिया के किसी ब्रांच में ट्रांसफर की सुविधा भी उपलब्ध रहेगी ' स्कॉलरशिप टेस्ट में लगभग 3 लाख छात्रों को शामिल होने की संभावना है ' उन्होंने छपरा शाखा में क्लास 8 से 12 तक के छात्रों का नामांकन मार्क्स और टेस्ट बेसिस के

# युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा की बैठक संपन्न

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। शनिवार को युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा की बैठक सर्किट हाउस छपरा में हुई , जिसकी अध्यक्षता युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा के प्रमुख संरक्षक शेख नौशाद ने किया। बैठक में युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा के नई कमेटी का गठन किया गया जिसमें सर्वसहमति से युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा के प्रमुख संरक्षक वरिष्ठ छात्र युवा नेता शेख नौशाद को बनाया गया। युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा के अध्यक्ष राजू कुमार गिरी, उपाध्यक्ष मोहम्मद शमी, पवन गुप्ता , महासचिव अमृत कुमार, सचिव सरताज खान, कोष अध्यक्ष सिम्मी सिंह को बनाया गया। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि जयप्रकाश विश्वविद्यालय में शैक्षणिक अराजकता, भ्रष्टाचार , विश्वविधालय प्रशासन का तानाशाही, छात्रों के साथ लगातार शोषण जारी है। छात्रों के बातों को कोई सुनने वाला नहीं है। इसलिए बहुत जल्द आंदोलन करने का निर्णय लिया गया है। वहीं छात्र युवा नेता शेख नौशाद ने कहा कि बहुत जल्द महाविद्यालयों में नई कमेटी का गठन किया जाएगा। बैठक में उपस्थित युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा के प्रमुख संरक्षक वरिष्ठ छात्र युवानेता शेख नौशाद ।युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा के अध्यक्ष राजू कुमार गिरी ,युवा जिलाध्यक्ष कादिर हुसैन, मोहम्मद शमी, सिम्मी सिंह , सचिव छात्र नेता सरताज खान , जितेश कुशवाहा ,अमृत कुमार, तैयब हुसैन, खुर्शीद अली मोहम्मद आसिफ राजा,नंदन गिरी,इत्यादि लोग उपस्थित है।

## पत्रकार टुन्ना सिंह के श्राद्धकर्म में जुटे पत्रकार गण,सभी ने दी श्रद्धांजलि

माँझी। सारण जिले के रिविलगंज प्रखण्ड से राष्ट्रीय सहारा समाचार पत्र के प्रतिनिधि टुन्ना सिंह ने अपनी मृदुल व्यवहारिकता तथा सजगता एवं सामाजिक सक्रियता से अल्पावधि में जो मुकाम स्थापित किया था वह पत्रकारिता के क्षेत्र में एक मिशाल है। शनिवार को माँझी के मझनपूरा गाँव स्थित दिवंगत पत्रकार टुन्ना सिंह के आवासीय परिसर में आयोजित शोक सभा को सम्बोधित करते हुए सारण जिला पत्रकार संघ के सदस्यों ने यह बातें कही। इससे पहले पत्रकारों ने दो मिनट का मौन रखकर तथा स्व सिंह के चित्र पर फूल माला चढ़ाकर अश्रुपूरित नेत्रों से अपना श्रद्धासुमन अर्पित किया। पत्रकारों ने कहा कि समाज तथा सरकार के बीच सेतु बनकर सटीक तथा सचित्र सूचनाओं के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाने वाले पत्रकारों को वह सम्मान नही मिल पाता जिनके वे हकदार होते है। पत्रकारों ने सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक एवम संवैधानिक सुरक्षा का समर्थन किया। अपने सम्बोधन में पत्रकारों ने दिवंगत पत्रकार साथी के परिजनों के सुख दुःख में हर हमेशा खड़े रहने तथा पत्रकार संघ के सहयोग से उनकी पुत्री की शिक्षा दीक्षा एवम शादी सम्पन्न कराने का संकल्प व्यक्त किया।

सदस्यों ने पत्रकार हितार्थ एक वेलफेयर ट्रस्ट की स्थापना की भी वकालत की ताकि विपरीत ओरिस्थितियों में जरूरतमंद पत्रकार साथियों का यथोचित सहयोग किया जा सके। शोकसभा को सारण जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष डॉ .विद्या भूषण श्रीवास्तव,श्रीराम तिवारी,मनोज कुमार सिंह,राकेश कुमार सिंह,धनंजय सिंह तोमर,संतोष गुप्ता,धर्मेन्द्र रस्तोगी,मनोरंजन पाठक,मुकुंद सिंह,विपिन मिश्रा,चन्द्रशेखर कुमार,मंजीत नारायण सिंह, डॉ .बसंत कुमार सिंह,बीरेश सिंह,मो सोहैल अहमद,पंकज श्रीवास्तव,सुनील गुप्ता, पंकज कुमार श्रीवास्तव ,विशाल कुमार,धनपत कुमार,संजीव शर्मा, एवम स्थानीय मुखियापति उदय शंकर सिंह आदि दर्जनो लोगों ने सम्बोधित किया। शोक सभा का संचालन जाकिर अली ने किया।

# भाजपा की बैठक हुई संपन्न

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। सुशील कुमार मोदी स्मृति शोध संस्थान के तत्वावधान में सुशील मोदी की 5 जनवरी को श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल पटना मे आयोजित जयंती समारोह की सफलता के लिए तथा सुशील कुमार मोदी को व्यक्तित्व एवं कृतित्व को याद करने के लिये सारण जिला में स्व सुशील कुमार मोदी स्मृति सेवा सप्ताह मनाने के लिए छपरा विधायक डॉ सी ऐन गुप्ता के नेतृत्व में भाजपा जिला कार्यालय में बैठक का आयोजन किया गया, जिसमे डॉ सी एन गुप्ता ने बताया कि बिहार के विकास में मोदी जी का अभूतपूर्ण योगदान रहा है, उनके जयंती के अवसर पर छपरा से काफी लोग उक्त आयोजन में भाग लेंगे एवं छपरा में स्व सुशील कुमार मोदी स्मृति सेवा सप्ताह का आयोजन किया जाएगा जिसमें रक्तदान शिविर,स्वास्थ्य शिविर, विचार गोष्ठी एवं जन कल्याण के अन्य कार्यक्रम होंगे इस बैठक में भाजपा जिला अध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह , पूर्व जिला अध्यक्ष रमेश प्रसाद अशोक कुमार सिंह आदि थे।

# नव वर्ष को लेकर पर्यटन नगरी में एसएसबी और पुलिस प्रशासन की संयुक्त गश्ती

प्रातः किरण, संवाददाता

बगहा। इंडो नेपाल सीमा पर स्थित पर्यटन नगरी वाल्मीकिनगर में नव वर्ष के आगमन और सुरक्षा को लेकर वाल्मीकिनगर के गली मोहलों में एसएसबी और बिहार पुलिस के जवानों ने संयुक्त गश्ती किया।

बतादें की वाल्मीकिनगर एक पर्यटन नगरी में सुमार है।जहां वन वर्ष को लेकर लोग अपने परिवार और मित्रों के साथ पिकनिक मनाने के लिए वाल्मीकिनगर पहुंचतें है। बतादें की इस मौके पर वाल्मीकिनगर में पर्यटकों की अप्रत्याशित भीड़ जुटती है। ज्ञात हो कि यह क्षेत्र इंडो नेपाल का सीमावर्ती क्षेत्र है।इसलिए पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा के दृष्टिकोण से वाल्मीकिनगर के गली मोहलों में गश्ती लगाने शुरू कर दिए है।ताकि वन वर्ष के मौके पर किसी भी तरह के असमाजिक तत्वों द्वारा व्यवधान उतपन्न नहीं किया जा सके। एसएसबी और पुलिस प्रशासन की जॉइंट गश्ती का नेतृत्व एसआई राजेश कुमार आनंद और एसएसबी के एएसआई कमल बर्मन ने किया ।

# दहेज उत्पीड़न में विवाहिता की हत्या का मामला आया सामने,पुलिस जांच में जुटी

- ससुराल पक्ष के लोग घर छोड़कर हुए फरार

प्रातः किरण, संवाददाता

बगहा। बगहा के चौतरवा थाना क्षेत्र के पतीलार गांव में दहेज के लिए विवाहिता की हत्या का सनसनीखेज मामला सामने आया है। विवाहिता की मौत के बाद उसके ससुराल पक्ष के लोग घर छोड़कर फरार हो गए हैं। घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया है और पुलिस मामले की गहनता से जांच कर रही है।

मृतका की पहचान गोदावरी देवी के रूप में हुई है।बताया जा रहा है कि मृतका की 10 साल पहले शादी हुई थी, मृतका के दो बच्चे हैं।

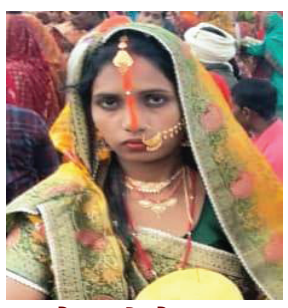

### दहेज को लेकर था विवाद

मृतका के मायके वालों ने ससुराल पक्ष पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि उनकी बेटी पर शादी के बाद से ही दहेज के लिए लगातार दबाव बनाया जा रहा था। बार-बार की मांगों से तंग आकर मायके वालों ने अपनी स्थिति के अनुसार कई बार सहायता की, लेकिन ससुराल पक्ष की लालच खत्म नहीं हुई। बताया जा रहा है कि घटना शुक्रवार की देर शाम की है। मौत कि खबर मिलते ही मौके पर पहुंचे तो उन्होंने बेटी का शव संदिग्ध परिस्थितियों में पाया। मौत के बाद ही ससुराल वाले घर से फरार हो है।

### पुलिस की कार्रवाई हुई तेज

मामले की सूचना पर चौतरवा थाने की पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराने के लिए अनुमंडलीय अस्पताल भेज दिया। फिलहाल पुलिस पूरे मामले को लेकर गहनता से जांच में जुट गई है।।

# कॉमेडी नाइट में भोजपुरी कलाकारों संग अवॉर्ड फंक्शन आयोजित

## भोजपुरी कलाकार संग पटनाइट्स का ठुमका, राजा रैंचो ने किया लोटपोट

प्रातः किरण, संवाददाता

पटना। शनिवार की शाम गुलाबी ठंड में पटनाइट्स के बीच भोजपुरी ठुमके लगे और कॉमेडी से जमकर हंसी के गुब्बारे फूटे।साल की विदाई को लेकर और नए साल आने के उत्साह के बीच हर ओर लोगों का जुटान हो रहा ।आज राजधानी पटना के जगदेव पथ स्थित यूनिक गार्डन में शादी जंक्शन द्वारा आयोजित कॉमेडी नाइट अवॉर्ड फंक्शन में भोजपुरी कलाकार के सा प्रसिद्ध कॉमेडियन राजा और रैंचो पहुंचे थे ।मौका था बिहार में पहली बार शादी जंक्शन की इवेंट की। भोजपुरी फिल्म के कलाकार अभिनेत्री अपर्णा संग अभिषेक ने कार्यक्रम में शिरकत की । कार्यक्रम के दौरान मुंबई से आयी खूबसूरत मॉडलों ने अपनी मनमोहक अंदाज में रैंप वॉक किया । कार्यक्रम का शुभारंभ शादी जंक्शन के सीईओ के के गुप्ता , जीएसटी कमिश्नर राकेश रंजन ,कृष्ण श्रीवास्तव, फिल्म निदेशक धनंजय प्रताप सिंह, अभिनेता अभिषेक , डॉ अंजनेयम, डॉ अमित,अनूप कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया ।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शादी जंक्शन के सीईओ के के गुप्ता ने बताया कि पहली बार शादी जंक्शन उत्तर प्रदेश से अपनी यात्रा को बढ़ाते बिहार में पहुंची है । हमारा उद्देश्य शादी के पवित्र बंधन की संस्कृति और सामाजिकता को बचाए रखना है

। आज शादी जंक्शन जैसे प्लेटफॉर्म समय की मांग है।राजा और रैंचो ने चलती ट्रेन की आवाज के साथ लोगों को यात्रा का अनुभव कराया। राजनीतिक टीका टिप्पणी पर लोग खूब लोट पोट होते रहे । राजा उर्फ राजकुमार सावेकर ने कहा कि बिहार में बार बार आना अच्छा लगता है । यहां जितनी बार आता हूं उतनी बार एनर्जेटिक हो जाता हूं । कार्यक्रम में पहुंचे भोजपुरी फिल्म के अभिनेता अभिषेक गिरी ने भोजपुरी फिल्म में अश्लीलता के सवाल पर कहा कि भोजपुरी फिल्म में अश्लीलता नहीं है , कुछ म्यूजिक एलबम के कारण पूरी भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री बदनाम हो रही है । लोगों को ऐसे गीत का बायकट करना चाहिए। अभिषेक 2023 में हिंदी फिल्म कंजुस मक्खीचूस में अभिनेता कुणाल खेमू के साथ काम कर चुके है । अभी तक फिल्म दिल के बंधन समेत 14 भोजपुरी फिल्म में काम कर चुके है । बिहार सिवान के अभिषेक ने बिहार सरकार से सिंगल विंडो को शुरू करने की मांग की ताकि फिल्म मेकर बिहार आ सके । उन्होंने बिहार की भोजपुरी, मैथिली , अंगिका मगही भाषा की फिल्म को प्रमोट करने के लिए एक पॉलिसी पर विचार करना चाहिए। देश की सभी भाषा की फिल्म बनाने वाले निर्देशक को बिहार आमंत्रित करना चाहिए। अभिषेक बिहार की महान विभूति पर स्थानीय भाषा में बायोपिक बनाने की बात कही ताकि हमारी भाषा संस्कृति,और इतिहास को लोग जान सके ।अभिषेक अभी धनंजय प्रताप सिंह के निर्देशन में बन रही ह्रडोली प्यार की ह्रफिल्म में काम कर रहे है ।

मौके पर फिल्म अभिनेत्री अपर्णा राज भी मौजूद रही ।

# वारदातः गोलीबारी में एक युवक की मौत, दो घायल

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम(रोहतास)। सासाराम नगर थानाक्षेत्र के करगहर मोड़ से सटे श्रीराम-जानकी मंदिर के पास बीते शुक्रवार की देर रात एक बर्थडे पार्टी चल रही थी, जहाँ पुलिस और पार्टी में उपस्थित लोगों के बीच झड़प के बाद गोली चली, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गयी और दो अन्य घायल हो गये।

इस संदर्भ में घटनास्थल की जाँच करने आये पुलिस अधीक्षक रौशन कुमार ने बताया की यहाँ पार्टी चल रही थी।

जहाँ पहुँचे यातायात पुलिस उपाधीक्षक आदिल बिलाल और पार्टी में शामिल लोगों के बीच झड़प के दौरान गोली चली और मारपीट हुई, जिसमें शिवसागर थानाक्षेत्र के सिलारी गाँव निवासी राणा ओमप्रकाश सिंह उर्फ बादल की मौत हो गयी। जबकि एक पुलिसकर्मी भी मारपीट में घायल हो गये।

इधर मृतक के परिजनों का आरोप है की पार्टी में पहुँचे यातायात डीएसपी रुपए की माँग करने लगे,जिसका पार्टी में शामिल लोगों ने विरोध किया। इस पर डीएसपी द्वारा 6-7 चक्र फायरिंग की, जिससे बादल की मौत हो गयी। इसमें अतुल कुमार तथा विनोद कुमार घायल हो गये। एसपी ने जोर देकर कहा है की घटना में जो भी दोषी होगा, उसको बख्शा नहीं जायेगा। उन्होंने कहा की पुलिस इस घटना की जाँच बहुत ही बारीकी से कर रही है। एसपी के अनुसार घटनास्थल से एक टूटा हुआ एयरगन,10 बाइक तथा शराब की बोतलें भी बरामद हुई है। पार्टी में युवकों की काफी संख्या थी, जिसकी पहचान की कोशिश के साथ जब्त बाइक के ऑनर का भी पता लगाया जा रहा है। इधर मृतक के परिजनों द्वारा हत्या के विरुद्ध यातायात डीएसपी के खिलाफ नारे लगाते हुए उन्हें हत्यारोपी मानकर सजा देने की माँग की गयी। शव का पोस्टमार्टम वीडियोग्राफी के साथ दंडाधिकारी की देख-रेख में कराकर परिजनों को सौंप दिया गया है। घटना के बाद परिवार में सन्नाटा पसर गया है।

# पंचायत समिति की बैठक में 50 लाख की योजनाओं की मिली स्वीकृति

प्रातः किरण संवाददाता



संझौली(रोहतास)। संझौली प्रखंड कार्यालय के सभागार में शनिवार को पंचायत समिति की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड प्रमुख समीरचन्द ने किया। बैठक की शुरुआत बीडीओ प्रभा कुमारी के उद्बोधन से शुरू हुआ। बीडीओ ने अपने सम्बोधन में सबसे पहले सभी उपस्थित सदस्यों का अभिवादन करते हुए बैठक के मुख्य एजेंडा के बारे में विस्तृत रूप से बताया। बैठक की कार्यवाही शुरू होने से पहले देश के पुर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के आकस्मिक निधन पर उपस्थित सभी सदस्यों, प्रखंड स्तरीय पदाधिकारियों ने दो मिनट मौन रख संवेदना व्यक्त की। प्रखण्ड स्तरीय सभी विभागों की समीक्षा व अन्य विषयों पर चर्चा किया गया। बैठक में 15 वित्त आयोग अंतर्गत कुल 50 लाख रुपये के योजनाओं की स्वीकृति सदस्यों ने मेज थपथपाकर दी। इस दौरान सदस्यों ने सदन में आवास की सूची उपलब्ध कराने, विभिन्न वार्डों में बंद पड़े नलजल योजना, जन्म-मृत्यु बनवाने में आमजनों को हो रही परेशानी, वार्डों में लगाए जा रहे घटिया स्ट्रीट लाइट, धान अधिप्राप्ति से लेकर स्मार्ट मीटर, विभिन्न वर्डों में खराब पड़े चापाकल सहित अन्य मुद्दा को उठाया। इस पर संबंधित विभाग के अधिकारियों ने जल्द समाधान किए जाने की बात कही। इस दौरान सदस्यों ने आमजनों को जन्म- मृत्यु प्रमाण पत्र में हो रही परेशानी और भ्रष्टाचार को लेकर सदस्यों ने जमकर हंगामा किया। इस पर बीडीओ ने सदस्यों को अवगत कराते हुए जन्म- मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने में आ रही परेशानी को लेकर इसे जल्द समाधान करने की बात कही।

बैठक में मुख्य रूप से सीओ किशोर पासवान, बीपीआरओ श्वेता कुमारी, बीईओ परवेज आलम, मनेरगा पीओ रामा शंकर दुबे, प्रखंड सांख्यकी पदाधिकारी दीपक कुमार दीपांकर, जेई रेशमी कुमारी, उप प्रमुख इंद्रासनी देवी, बीडीसी सदस्य मनोज कुमार, मंटू कुमार उर्फ नरेंद्र सिंह, अरुण कुमार, मधु उपाध्याय, नेहा कुमारी, शैदा खातून, मुखिया संगीता देवी, कमला देवी, मिथलेश सिंह उप प्रमुख प्रतिनिधि वरुण सिंह, सहित अन्य कई अधिकारी व जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

# बीपीएससी परीक्षा पास कर प्रधान शिक्षक बनाने पर विधायक ने किया सम्मानित

प्रातः किरण संवाददाता




काराकाट(रोहतास)। काराकाट प्रखंड के कुरूर स्थित प्लस टू उच्च विद्यालय के शिक्षक प्रमोद पाण्डेय को बीपीएससी द्वारा आयोजित प्रधान शिक्षक की परीक्षा में उत्तीर्ण करने पर काराकाट विधायक अरुण कुमार सिंह, काराकाट मुखिया योगेंद्र सिंह, विद्यालय प्रभारी प्रधानाध्यापक कृष्णा कुमार सहित शिक्षकों ने फूल गुलदस्ता व अंगवस्त्र से सम्मानित किया। सामान्य कार्यक्रम के पश्चात विद्यालय परिसर में विद्यालय प्रबंध समिति की बैठक किया गया। जिसका अध्यक्षता विधायक अरुण कुमार सिंह ने किया। बैठक में विद्यालय में किये गए विकास कार्यों की समीक्षा किया गया। बताया गया की कुछ दिन पूर्व विद्यालय में साइकिल स्टैंड, सीआरसी के लिए विकसित कक्ष व दो अर्धनिर्मित कमरे बनाने को लेकर विधायक द्वारा विधानसभा में सवाल उठाए गए थे। जिसके बाद सरकारी फंड से सभी कार्यों को कराया गया। जिसका काराकाट विधायक सह प्रबंध समिति के अध्यक्ष अरुण कुमार सिंह द्वारा निरीक्षण किया गया। विधायक व उपस्थित अभिभावकों ने विद्यालय में कराए गए कार्यों की समीक्षा करते हुए विकास कार्यों कि सराहना किया। बैठक में विधायक ने छात्र-छात्राओं से संवाद करते हुए उनके शैक्षणिक विकास के लिए हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया। छात्र-छात्राओं द्वारा विद्यालय में चारदिवारी ना होने तथा विद्यालय में कई विषयों के शिक्षक न होने की समस्या से विधायक को अवगत कराया। जहां विधायक की आश्वासन ने दिया की विभागीय अधिकारियों से बात कर छात्रों की सभी समस्याओं को जल्द पूरा किया जायेगा। विधायक ने छात्र-छात्राओं से कहा की बहुत जल्द एक नया कमरा और पुराने जर्जर भवन की मरम्मती विधायक कोष से की जाएगी। छात्र-छात्राएं विधायक बात को सुन काफी खुश दिखी। मौके पर शिक्षक वकील प्रसाद, अनूप कुमार, शैलेंद्र कुमार, मनोरंजन कुमार, रंजन प्रसाद, श्वेता श्रीवास्तव, प्रियंका कुमारी, सुजीत कुमार सहित कई अभिभावक उपस्थित थे।

# कैम्ब्रिज नाईटींगेल पब्लिक स्कूल में पीटीएम का भव्य आयोजन




प्रातः किरण संवाददाता

आरा। कोईलवर प्रखंड के शिक्षा नगर, चाँदी अवस्थित कैम्ब्रिज नाईटींगेल पब्लिक स्कूल में सत्र 2024 - 25 के पीटीएम का भव्य आयोजन किया गया ' जिसका संचालन कार्यक्रम प्रभारी इंचार्ज दिव्यांशु मिश्रा ने किया ' मुख्य वक्ता परीक्षा नियंत्रक सह प्रभारी रितेश कुमार सिंह ने विद्यालय की उपलब्धि पर प्रकाश डालते हुए बताया की इस सेशन में स्कूल का बहुत अच्छा प्रदर्शन रहा इंग्लिश स्पॉकेन,मैथ ओलंपियाड, साइंस प्रोजेक्ट्स, आर्ट एंड कार्फ्ट सहित बच्चों के मार्क्स में काफी सुधार रहा है ' स्कूल ने एक टीम वर्क करते हुए नये - नये तकनीक को अपना कर मार्क्स, अनुशासन, और स्पॉकेन को सुधार पाने में कामयाबी हासिल किया है ' आज सभी अभिभावकों के चेहरे पर विश्वास का भाव दिख रहा है '

पीटीएम को अनुशासन इंचार्ज सह मैथ शिक्षक सबानंद सिंह,जूनियर विंग इंचार्ज रीता वर्मा , अविनाश कुमार सहित कृष्णा देवी, रीता सिंह, डॉ राजन कुमार राय, दीपक कुमार सिंह, अमरनाथ तिवारी एवं अन्य ने संबोधित किया। अभिभावकों के तरफ से भी बहुत सारे सुझाव दिये गए सभी उपस्थित अभिभावकों ने स्कूल के क्रियाकलापों की प्रशंसा की और ग्रामीण क्षेत्र में अच्छी शिक्षा प्रदान करने हेतु स्कूल और शिक्षकों की सराहना की ' धन्यवाद ज्ञापन अरविंद कुमार वर्मा ने किया '

# तृतीय पुण्यतिथि पर याद किए गए व्यावसायी स्व. गोपाल जी यादव



**500 जरूरतमंदों के बीच बांटा गया कंबल एवं खाद्य सामग्री**

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। शहर के मोती टोला मुहल्ले में शनिवार को व्यावसायी सह समाजसेवी स्व. गोपाल जी यादव की द्वितीय पुण्यतिथि मनाई गई। इस मौके पर उपस्थित गणमान्य लोगो ने उनके तैल चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि स्वर्गीय गोपाल जी यादव नेकदिल व सच्चे इंसान थे। उन्होंने समाज के लिए बहुत कुछ कार्य किया। वे हमेशा जरूरतमंदों के सेवार्थ कार्य करते रहते थे। उनके बडे पुत्र रमेश कुमार ने कहा कि बाबूजी के अधूरे कार्यों को पूरा करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। पुण्यतिथि के मौके पर पांच सौ जरूरतमंदों के बीच खाद्य सामग्री एवं कंबल का वितरण किया गया। श्री कुमार ने कहा कि जरूरतमंदों की सेवा करना ही सबसे बड़ा पूण्य का कार्य है। जरूरतमंदों लोगो की सेवा कर लोगों को उनका आशीर्वाद लेना चाहिए। पुण्यतिथि के मौके पर 500 जरूरतमंदों को असहाय लोगों के बीच गर्म कपड़ा एवं कंबल का वितरण किया गया। इस मौके पर पूर्व मेयर अवधेश यादव, उमेश कुमार, दिनेश कुमार, संजय कुमार, अजय कुमार, सोनू सरदार, जय प्रकाश यादव, अमित केसरी, सुशील श्रीवास्तव, सुधीर पांडेय समेत अन्य लोग मौजूद रहें।

## विनायक इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का किया गया शुभारंभ



आरा ।स्थानीय विनायक इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल में दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता की शुरूआत किया गया। आज पहला दिन क्लास प्ले ग्रुप से सीनियर केजी तक के बच्चों का खेल संपन्न हुआ जिसमें नन्हे बच्चों ने जलेबी रस का जलेबी जलेबी खाने के साथ दौड़ लगाई। आने देश में चम्मच रेस सुई धागा रेस 50 मीटर की दौड़ प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों का लिस्ट में नाम लिखा गया जिन्हें आगामी 26 जनवरी को सम्मानित किया जाएगा। कल 1 से 8 तक के बच्चों का खेल खुद प्रतियोगिता आयोजित स्थानीय स्कूल प्रांगण में किया जाएगा।

## अवैध रूप से विद्युत ऊर्जा चोरी को लेकर प्राथमिकी दर्ज, लगा जुमार्ना

दिनारा(रोहतास)। प्रखंड-दिनारा अंतर्गत विद्युत ऊर्जा चोरी एवं बकायेदार उपभोक्ताओं को लेकर चलाये जा रहे विशेष अभियंता के तहत ग्राम-भलूनी के हरेन्द्र पंडित पिता-राम जन्म कुम्हार के व्यवसायिक परिसर का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के क्रम में पाया गया कि श्री पंडित के परिसर में पूर्व से विद्युत सम्बन्ध मौजुद था जो 37188 बकाया रहने के कारण अस्थायी रूप से विच्छेदित था। जॉच के दौरान इनके द्वारा मेन एलटी लाईन में दो फेज पीवीसी तार अवैध रूप से संयोजित कर विद्युत ऊर्जा की चोरी की जा रही थी। इनके इस कृत्य से साउथ बिहार पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड पटना को 68882 रुपए राजस्व की क्षति हुई है। कनीय विद्युत अभियंता दिनारा विकाश कुमार के द्वारा बताया गया की स्मार्ट प्रीपेड मीटर रिचार्ज नही कराने वाले उपभोक्ताओं के परिसर का सघन जाँच की जा रही है। जिनके स्मार्ट प्रीपेड मीटर का लाइन बकाया रहने के कारण स्वतः कटा हुआ है वह अपना बकाया राशि जमा करने के पश्चात ही विद्युत ऊर्जा का उपभोग करें। जो उपभोक्ता स्मार्ट प्रीपेड मीटर या नॉर्मल मीटर बाईपास कर विद्युत ऊर्जा की चोरी कर रहे हैं वह दुरुस्त कर लें तथा जो व्यक्ति बिजली का कनेक्शन नहीं लिए हैं वह कनेक्शन ले लें अन्यथा पकड़े जाने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

## स्मार्ट प्रीपेड मीटर बाईपास कर विद्युत ऊर्जा चोरी करने को लेकर एसटीएफ के नेतृत्व में प्राथमिकी दर्ज

बिक्रमगंज(रोहतास)। प्रखंड-बिक्रमगंज के विभिन्न गावों में एसटीएफ के नेतृत्व में स्मार्ट प्रीपेड मीटर रिचार्ज नहीं कराने वाले उपभोक्ताओं के परिसर का जाँच किया गया। जाँच के दौरान पाया गया की स्मार्ट प्रीपेड मीटर लगे उपभोक्ताओं के परिसर पर विद्युत विपत्र के मद में बकाया राशि रहने के कारण डिसकनेक्ट प्रदर्शित हो रहा था परन्तु कुछ उपभोक्ताओं के द्वारा बिना बकाया राशि जमा किये मीटर से पहले तार में कटिंग करके एवं मीटर बाईपास करते हुए विद्युत ऊर्जा की चोरी की जा रही थी। मीटर बाईपास कर अवैध रूप से विद्युत ऊर्जा चोरी करने को लेकर ग्राम-ठीकहीं टोला के फूलपति देवी पर 8398, गोरख नाथ सिंह पर 10739, ग्राम-महराजगंज के विश्वनाथ यादव पर 6642, राजाराम यादव पर 9885, सुरेंद्र कुमार सिंह पर 13032, राम अयोध्या यादव पर 11339 एवं टेढ़ाकी पुल के सुरेमान देवी पर 2072, ज्ञानती देवी पर 5472 रुपये जुमार्ना लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज की गयी है। सहायक विद्युत अभियंता बिक्रमगंज राज कुमार के द्वारा बताया गया की स्मार्ट प्रीपेड मीटर रिचार्ज नही कराने वाले उपभोक्ताओं के परिसर का सघन जाँच की जा रही है। जिनके स्मार्ट प्रीपेड मीटर का लाइन बकाया रहने के कारण स्वतः कटा हुआ है वह अपना बकाया राशि जमा करने के पश्चात ही विद्युत ऊर्जा का उपभोग करें। जो उपभोक्ता स्मार्ट प्रीपेड मीटर या नॉर्मल मीटर बाईपास कर विद्युत ऊर्जा की चोरी कर रहे हैं वह दुरुस्त कर लें तथा जो व्यक्ति बिजली का कनेक्शन नहीं लिए हैं वह कनेक्शन ले लें अन्यथा पकड़े जाने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। विद्युत आपूर्ति अवर प्रमंडल बिक्रमगंज अंतर्गत चालू माह में कुल 45 लोगों पर प्राथमिकी दर्ज कराई गई है जिसमे 26 लाख 51 हजार 961 रुपये जुमार्ना लगाया गया है।

## सूर्यपुरा पीएचसी में किया गया लिफाफे में मुफ्त दवा वितरण

दावथ(रोहतास)। बिक्रमगंज अनुमंडल क्षेत्र अंतर्गत सूर्यपुरा प्रखंड के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में लिफाफे में मुफ्त दवा वितरण किया गया। इस संदर्भ में जानकारी देते हुए स्वास्थ्य प्रबंधक मोहम्मद इरफान खान ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग बिहार सरकार द्वारा जारी लिफाफे में मुफ्त दवा का वितरण किया जा रहा है। मोहम्मद खान ने बताया कि लिफाफे के ऊपर मरीज का नाम एवं उनका पूरा डिटेल्स अंकित किया जा रहा है। साथ ही साथ लिफाफे के ऊपर मरीज को कब-कब और कैसे दवा खानी है ,उस पर स्वास्थ्य कर्मियों के द्वारा मार्क कर दिया जा रहा है। मौके पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सूर्यपुरा के स्वास्थ्य प्रबंधक मोहम्मद इरफान खान,मरीज सहित स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित रहे।

## मनमोहन सिंह के निधन से एक अर्थ युग का अंत : मनोज केशान



पटना। कांग्रेस नेता मनोज केशान ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. डा. मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा है कि डा. मनमोहन सिंह का जाना देश और दुनिया के लिए बहुत बड़ी क्षति है, जिसको लेकर देश-विदेश के कई राष्ट्रीय अध्यक्षों ने अपने झंडे झुकाए हैं और कइयों ने अपने निजी जीवन के साथ मनमोहन सिंह के व्यक्तित्व को सराहा है। सरदार डॉ मनमोहन सिंह किसानों के लिए भगवान थे, उनके द्वारा उठाए गये कठोर और साहसिक कदम जो इतिहास के पन्नों में दर्ज है अमिट है। 2008 के दौर में 71,000 करोड़ रुपये से अधिक का कर्ज माफ किया था, जो बहुत अतुलनीय और ऐतिहासिक कदम था। आज कांग्रेस ने एक अपना जवान खोया है, जिसकी भरपाई असंभव है। कांग्रेस परिवार के अध्यक्ष खडगे जी, केसी वेणुगोपाल, राहुल गांधी सहित कांग्रेस किसान के वरिष्ठ नेताओं आरसी पाण्डेय, हेमंत कुमार, प्रेम मिश्रा सहित उपाध्यक्ष मनोज केशान व सैकड़ों लोगों ने डॉ मनमोहन सिंह के दिये गये योगदान को याद करते हुए भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की है।

## संक्षिप्त खबरें

### मोबाइल चोर को लोगों ने पकड़ किया पुलिस के हवाले

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास)। स्थानीय शहर के रेलवे स्टेशन बिक्रमगंज से मोबाइल चोर को लोगों ने पकड़ किया पुलिस के हवाले। सूत्रों के मुताबिक भोजपुर जिला अंतर्गत तियर थाना क्षेत्र के सिकरियां गांव निवासी सुनील शर्मा रेलवे स्टेशन बिक्रमगंज पर खड़े थे। तो अचानक मोबाइल चोर उनके हाथों से झपट्टा मारकर मोबाइल छीनकर भागने लगा। तत्पश्चात पीड़ित के द्वारा हो हल्ला किया गया। उक्त दौरान पीड़ित एवं स्टेशन पर मौजूद लोगों ने मोबाइल चोर का पीछा किया। जिस दौरान पीड़ित एवं स्टेशन पर मौजूद लोगों ने मोबाइल के साथ चोर को पकड़ लिया। उसके बाद घटना की सूचना दूरभाष के माध्यम से लोगों ने स्थानीय पुलिस को दी। सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस जैसे ही घटनास्थल पर पहुंची तो पकड़े गए चोर एवं मोबाइल को पीड़ित एवं लोगों द्वारा सुपुर्द किया गया। बिक्रमगंज थानाध्यक्ष ललन कुमार ने बताया कि मोबाइल चोर साकिम व थाना नटवार निवासी हैदर अली के पुत्र अकबर अली बताए जाते हैं। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार मोबाइल चोर के विरुद्ध संबंधित मामला दर्ज करते हुए जांच के उपरांत न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

### 63 पीस फ्रूटी शराब के साथ एक कारोबारी धराया

बिक्रमगंज(रोहतास)। स्थानीय पुलिस फ्रूटी शराब के साथ एक कारोबारी को धर दबोचा। बिक्रमगंज थानाध्यक्ष ललन कुमार ने बताया कि शहर के डुमरांव रोड बस स्टैंड पान गुमटी के समीप से पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर 180 एमएल का 63 पीस एट पीएम फ्रूटी शराब के साथ एक कारोबारी को गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार कारोबारी थाना क्षेत्र अंतर्गत मोरौना गांव निवासी स्वर्गीय दीनदयाल साह के पुत्र अखिलेश कुमार बताए जाते हैं। श्री कुमार ने कहा कि गिरफ्तार कारोबारी के विरुद्ध संबंधित मामला दर्ज करते हुए न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

रींदूँ ङ्ख्ल्ल ध्ु

### ट्रक में टक्कर से बाइक सवार की मौत

बिक्रमगंज(रोहतास)।आरा-बिक्रमगंज मुख्य सड़क पर शुक्रवार की देर रात मोहनी के समीप ट्रक में टक्कर से बाइक सवार की मौत हो गई। मृतक की पहचान बिक्रमगंज थाना क्षेत्र के धनगाई निवासी सुदामा सिंह के 42 वर्षीय पुत्र अजय सिंह उर्फ भूअर के रूप में किया गया। घटना की सूचना पर पहुंचीं पुलिस ने मृतक के पैकेट से प्राप्त आधार कार्ड से पहचान कर परिजनों को सूचना दी।जिसके बाद परिजन घटना स्थल पर पहुंचे।शव को देख सभी चित्कार भरने लगे। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया।

# 30 दिसंबर को होगा बिहार का चक्का जामः शिवप्रकाश रंजन
# आइसा-इंनौस ने सरकार को दिया अल्टीमेटम

प्रातः किरण संवाददाता

आराः भाकपा-माले जिला कार्यालय श्रीटोला आरा में एक आइसा-इंनौस द्वारा प्रेस कांफ्रेंस आयोजित किया गया प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए इंनौस के राज्य सचिव व अगिआंव विधायक शिवप्रकाश रंजन ने कहा कि इढरउ अभ्यर्थियों के चल रहे आन्दोलन के पक्ष में आज सरकार को अल्टीमेटम देते हुए कि किया रविवार तक पीटी परीक्षा रद्द कर नई तारीखों का ऐलान नहीं हुआ तब 30 दिसंबर को पूरे बिहार का चक्का जाम होगा !पटना-दिल्ली की डबल इंजन सरकार के बहरे कानों को सुनाने के लिए सड़क और रेलमार्ग जाम होगा। युवा विधायक शिवप्रकाश रंजन ने कहा है कि इढरउ की 70 वीं पीटी पटना समेत बिहार के अनेक केंद्रों पर पेपर लीक व घोर आपत्तिजनक अनियमितताओं के साथ सम्पन्न हुई !परीक्षा रद्द करने की लोकप्रिय मांग उठी !अभ्यर्थी ठंड में धरने पर बैठे पर नीतीश-भाजपा सरकार न सिर्फ जिद्द में बहरी बनी रही बल्कि उल्टे न्याय की मांग कर रहे नौजवानों पर अंग्रेजी शासन की याद दिलाने वाला बर्बर लाठीचार्ज किया !आगे छात्र-युवा नेताओं ने कहा कि नीतीश-मोदी सरकार बिहार में सुशासन के बड़े बड़े दावे करती है पर एक परीक्षा सुचारु रूप से करा पाने में सफल नहीं है !लोकतांत्रिक मांगे उठाने पर जेल,फर्जी मुकदमे और बर्बर पुलिसिया दमन नियम बनते जा रहा हैं !याद करें कि इसी परीक्षा में नॉर्मलाइजेशन का विरोध कर रहे छात्र-छात्राओं पर भी लाठीचार्ज किया गया था! आइसा-इंनौस ने कहा है कि बिहार इस वक्त शिक्षा और परीक्षा माफियाओं के गिरफ़्त में है !समय पर डिग्री न मिलना,कॉलेज में शिक्षक न होना,परीक्षा में धांधली,पैसे पर बिकती नौकरी और डिग्री बिहार में आम चलन बनता जा रहा है,पर सरकार इन माफियाओं पर लगाम लगाने की बजाय युवाओं पर लाठियां चला रही है !विदित है कि मुजफ्फरपुर केंद्र पर इढरउ-ढळ परीक्षा देने वाले पटना जिले के पालीगंज के सोनू कुमार नाम के छात्र ने इस तनाव में अपनी जान ले ली !यह आत्महत्या नहीं सांस्थानिक हत्या है जिसका जवाब मोदी-नीतीश की जोड़ी को देना होगा !30 दिसंबर के चक्का जाम की पूर्व संध्या 29 दिसंबर को पूरे बिहार में छात्र-नौजवानों के बीच मोमबत्ती जलाकर सोनू कुमार को श्रद्धांजलि दी जाएगी !

आइसा-इंनौस ने सभी विपक्षी राजनीतिक दलों और छात्र-युवा संगठनों से अपील की है कि बिहार के भविष्य के लिए लड़ रहे नौजवानों के पक्ष में एकजुट आंदोलन के लिए आगे आएं और 30 दिसंबर के बिहार का चक्का जाम आंदोलन में सक्रिय हिस्सेदारी करें !प्रेस कांफ्रेंस में इंनौस राज्य सचिव व अगियांव विधायक शिवप्रकाश रंजन के अलावा,इंनौस जिलाध्यक्ष निरंजन केसरी,आइसा जिला सहसचिव रौशन कुशवाहा,आइसा जिला सहसचिव जयशंकर प्रसाद मौजूद थे !

इनकी मांगों में 70वीं ढळ रद्द कर परीक्षा की नई तारीखों की घोषणा जल्द करने,पेपर लीक-परीक्षा माफिया तंत्र खत्म कर सख्त कानून बनाने,पुलिस लाठीचार्ज के दोषियों को दंडित की जाए!

# छात्र प्रकोष्ठ भोजपुर लोजपा रामविलास का जिला का किया गया समीक्षा बैठक



प्रातः किरण संवाददाता

आरा। छात्र प्रकोष्ठ भोजपुर लोजपा रामविलास का जिला संविक्षा बैठक ग्रीन इवेन रिजॉर्ट चंदवा आरा में पार्टी के जिला अध्यक्ष राजेश्वर पासवान की अध्यक्षता में हुई मंच संचाल छात्र नेता विकास सिंह ने की।कार्यक्रम में छात्र प्रकोष्ठ के प्रदेश नव नियुक्त कार्यकारी अध्यक्ष सत्यप्रकाश पासवान जी का भव्य स्वागत किया तथा उन्हें फूल माला एवं अंग वस्त्र से छात्र नेता विकास सिंह ने सम्मानित किया। सत्यप्रकाश ने सर्व प्रथम सभी छात्र नेताओं से परिचय लेने के बाद कहा कि आप सभी चट्टानी एकता के साथ सभी कॉलेज,विश्वविद्यालयों में पार्टी का सदस्यता अभियान चलाकर सभी को जोड़िए ।छात्रों की समस्या को लेकर हमेशा आवाज उठाते रहिए,सक्षम पदाधिकारी से मिलकर समस्या का हल करवाए,छात्र ही भारत के नव निर्माण कर्ता है तथा वे देश के रीढ़ है। कोई भी पार्टी छात्र को कमजोर कर समृद्ध भारत नव निर्माण की परिकल्पना नहीं कर सकती है,हम छात्रों के हर दुख सुख के साथ है। वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय छात्र अध्यक्ष विकाश सिंह को अच्छे कार्य करने पर उन्हें अब छात्र प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष के पद पर मनोनीत किया गया। जिला अध्यक्ष राजेश्वर पासवान ने अपने संबोधन कहा कि छात्र प्रकोष्ठ लोजपा रामविलास का अभिन्न अंग है, कोई प्रकोष्ठ न बड़ा है न छोटा। सभा को संबोधित करने वालो में शिवम सिंह राष्ट्रीय उपाध्यक्ष छात्र प्रकोष्ठ, प्रशांत सिंह चंदेल युवा प्रदेश महासचिव,मनीष बुचुली युवा प्रदेश महासचिव,संतोष पासवान प्रदेश महासचिव अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ,हरिओम गुप्ता प्रदेश सचिव संसदीय बोर्ड आदि थे।

# भोजपुर पुलिस के आदेश पर आरा शहर में किया गया वाहन चेकिंग अभियान

प्रातः किरण संवाददाता



आरा। भोजपुर पुलिस के आदेश पर आरा शहर में चलाया गया वाहन चेकिंग अभियान जिसका नेतृत्व यातायात थाना अध्यक्ष श्रवण कुमार ने आरा शहर के विभिन्न चौक चौराहों पर वाहन चेकिंग अभियान चला यातायात थाना अध्यक्ष से बताया कि जो बिना हेलमेट ट्रिपल लोडिंग वालों पर जुमार्ना लगाया जा रहा है और अपील किया कि आप लोग बिना हेलमेट या ट्रिपल लोडिंग ना चले जुमार्ना से बचें यातायात थाना अध्यक्ष ने बताया कि अभियान लगातार चल रहा है और चलता रहेगा। श्रीनिवास जुली कुमारी अरक,अरविंद कुमार सब इंस्पेक्टर मोहम्मद जलालुद्दीन सब इंस्पेक्टर सरवर कुमार रश्मि कुमारी संजू कुमारी श्रवण कुमार तांती पुलिस बल के सहयोग से यह अभियान चलाया गया।

## छापेमारी के दौरान पुलिस ने 108 लीटर शराब किया बरामद ,दो कारोबारी फरार , मामला दर्ज

दिनारा(रोहतास) : भानस थाना क्षेत्र अन्तर्गत पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर ग्राम चिल्हरुआ में शराब को लेकर छापेमारी की। जिस क्रम में ब्लू लाईन देशी शराब 12 पेटी जिसमें करीब 108 लीटर पुलिस ने बरामद कर लिया। पुलिस की भनक मिलते ही दो शराब कारोबारी भागने में सफल रहे। पुलिस सूत्रों के मुताबिक शराब कारोबारी का पता लगाने हेतु अग्रिम कार्रवाई की जा रही है। फरार दोनों शराब कारोबारी में वकील पासवान पिता स्वङ्ग कृष्ण मूरारी पासवान और अरमान अंसारी पिता हैदर अली अंसारी दोनों ग्राम चिलहरुआ के रहने वाले बताए जाते है। इसकी जानकारी थानाध्यक्ष गुड़िया कुमारी ने दी।

# इथाका सामूहिक समकालीन कला प्रदर्शनी में भोजपुर के कौशलेश कुमार की अनूठी भागीदारी

प्रातः किरण संवाददाता



भोजपुर। प्रतिभाशाली चित्रकार श्री कौशलेश कुमार आगामी ह्लइथाकाह्व सामूहिक समकालीन कला प्रदर्शनी में अपनी नई कला श्रृंखला ह्लहार्ड टू हार्डवेयरह्व प्रस्तुत करेंगे। यह प्रदर्शनी 7 जनवरी से 13 जनवरी 2025 तक ललित कला अकादमी, नई दिल्ली में आयोजित होगी। उनकी इस अद्वितीय कला यात्रा को शुभकामनाएं देते हुए जिलाधिकारी भोजपुर श्री तनय सुल्तानिया, भा०प्र०से० और कला एवं संस्कृति पदाधिकारी श्रीमती अनुप्रिया ने अपने संदेश में कौशलेश के योगदान को भोजपुर के लिए गौरव का क्षण बताया।

इस प्रतिष्ठित प्रदर्शनी में कौशलेश के साथ देशभर से प्रसिद्ध कलाकार जैसे अर्चना सिन्हा, आशीष बोस, मारेडु रामु, पूर्वी शुक्ला, संदीप किंडो और संदेश खुले भाग ले रहे हैं। इस आयोजन को और खास बनाते हुए इसमें देश के जाने-माने कला आलोचक जैसे विनोद भारद्वाज, प्रयाग शुक्ल, ज्योतिष जोशी, सुमन सिंह, जॉनी टछ और राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली के डायरेक्टर जनरल डॉ. संजीव किशोर गौतम एवं ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के अध्यक्ष नागदास जैसे विशिष्ट अतिथि भी उपस्थित रहेंगे।

कौशलेश कुमार के लिए यह प्रदर्शनी इसलिए विशेष है क्योंकि ह्लहार्ड टू हार्डवेयरह्व श्रृंखला उनके द्वारा तैयार की गई बिल्कुल नई शैली का परिचय है। यह श्रृंखला उनके जीवन के अनुभवों और तकनीक के बदलते आयामों के गहरे अध्ययन का नतीजा है। यह कला उनकी रचनात्मक सोच और कौशल का बेजोड़ उदाहरण है, जो उन्हें समकालीन कला जगत में अलग पहचान दिलाती है।

### अन्य प्रदर्शनी भी जारी

प्रदर्शनी के दौरान ही कौशलेश की कृतियां बेंगलुरु (कर्नाटक) और कोच्चि (केरल) में भी प्रदर्शित की जाएंगी, जो उनके कला के प्रति समर्पण और व्यापक प्रशंसा का प्रमाण हैं।

भोजपुर के आरा के निवासी कौशलेश कुमार ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कैथोलिक मिशन स्कूल और हित नारायण क्षत्रिय प्लस टू विद्यालय, आरा से पूरी की। अपने क्षेत्र की मिट्टी से जुड़े रहकर उन्होंने कला के क्षेत्र में एक नई पहचान बनाई है।

यह प्रदर्शनी भोजपुर और पूरे बिहार के लिए गर्व का विषय है। कौशलेश कुमार का सफर यह साबित करता है कि छोटे शहरों के बड़े सपने भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी चमक बिखेर सकते हैं। हम उन्हें उनकी इस कला यात्रा के लिए शुभकामनाएं देते हैं।

## हलवाई समाज ने शिव जोड़ा मंदिर तिलौथू में किया कंबल और साड़ी का वितरण

तिलौथू(रोहतास)। हलवाई समाज, तिलौथू द्वारा स्थानीय शिव जोड़ा मंदिर, किराना मंडी में गरीब, वृद्ध और असहाय लोगों के बीच कंबल और साड़ी वितरण का आयोजन किया गया। इस सेवा कार्य में समाज के प्रमुख सदस्यों ने सक्रिय भूमिका निभाई और कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम के संयोजक दिलीप गुप्ता ने समाज की इस पहल को ठंड के मौसम में जरूरतमंदों के लिए राहत पहुंचाने का प्रयास बताया। अध्यक्ष गुड्डु कुमार, उपाध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता, महामंत्री विनोद गुप्ता, और मीडिया प्रभारी पंकज गुप्ता ने वितरण कार्यक्रम में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।कोषाध्यक्ष अमरदीप गुप्ता, संगठन मंत्री सतीश गुप्ता, और ज्योति गुप्ता के साथ हलवाई समाज के मार्गदर्शक जय नारायण गुप्ता आदि थे।

# सर्दियों में सफाईकर्मियों को आरामदायक और उपयुक्त ड्रेस मुहैया कराना हमारा कर्तव्यः नगर आयुक्त

प्रातः किरण संवाददाता

गया।गया नगर निगम के सभाकक्ष में महापौर विरेन्द्र कुमार, नगर आयुक्त एवं सशक्त स्थाई समिति के सदस्यों मोहन श्रीवास्तव की उपस्थिति में गया नगर निगम के सफाईकर्मियों को शीतकालीन ट्रैक सूट और गर्मी के लिए ड्रेस वितरित किए गए हैं। इस पहल का उद्देश्य सर्दियों के दौरान सफाईकर्मियों की सुविधा और सुरक्षा को सुनिश्चित करना है। प्रथम फेज में 1100 सफाई कर्मियों को उक्त ड्रेस दिया जा रहा है। इस वितरण कार्यक्रम का साफ-सुथरा हो गया अभियान के तहत शुभारंभ किया गया है।

इस अवसर पर महापौर ने कहा कि ष्सफाईकर्मी हमारे शहर के स्वच्छता योद्धा हैं। उनका काम न केवल सराहनीय है, बल्कि हमारे शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाए रखने में अहम भूमिका निभाता है। गया नगर निगम उनका ध्यान रखने के लिए प्रतिबद्ध है ष्।

नगर आयुक्त ने अपने संबोधन में कहा, ष्यह हमारा कर्तव्य है कि सर्दियों में सफाईकर्मियों को आरामदायक और उपयुक्त ड्रेस मुहैया कराएं। सफाईकर्मी निगम के धरातल पर रीढ़ है जो घर घर जाकर एवं पूरे शहर की सफाई व्यवस्था को सुनिश्चित करते हैं। जहां घर वाले लापरवाह होते हैं, और इधर उधर कचड़ा फैला देते हैं, उन सभी जगहों से सफाई कर्मी ही कड़ी परिश्रम करते हुए, ये सुनिश्चित करते हैं कि सफाई व्यवस्था पूरे शहर में सुनिश्चित रहे।

इसी को ध्यान में रखते हुए निगम भी तत्पर है कि सफाई कर्मी को किसी भी तरह की असुविधा नहीं हो।नगर आयुक्त द्वारा अभियान लगाते हुए वैसे सभी लंबित निगम के कर्मियों के सेवांत लाभ जो लगभग चार पांच वर्ष से लंबित थे का निष्पादन किया गया और निरन्तर किया जा रहा है। इसी कार्य प्रणाली को आगे बढ़ाते हुए, अब निगम के सफाई कर्मियों को ट्रैक सूट एवं ड्रेस दिया जा रहा है।

इस वितरण कार्यक्रम का आज शुभारंभ किया गया और साफ सुथरा हो गया अभियान को एक पहल दी गई है। इस दौरान गया नगर निगम ने सैकड़ों सफाईकर्मियों को विशेष शीतकालीन ट्रैक सूट और ड्रेस वार प्रदान किया जाएगा। इस पहल को सभी ने सराहा और इसे सफाईकर्मियों के लिए अत्यधिक लाभदायक बताया है इस आयोजन में गया नगर निगम के अधिकारीगण, महापौर एवं जनप्रतिनिधि और सफाईकर्मी उपस्थित रहे। निगम ने यह भी आश्वासन दिया कि सफाईकर्मियों के हितों और भलाई के लिए भविष्य में भी ऐसे कदम उठाए जाएंगे।

नगर आयुक्त द्वारा यह भी बताया गया कि निगम तत्पर है और सफाई कर्मियों पर ध्यान दे रहे हैं, तो सफाई कर्मियों को भी निष्ठा से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना अपेक्षित है। कई जगहों से गंदगी की शिकायत आती है। जिसकी जवाबदेही उस वार्ड के सफाई कर्मी एवं जमादार की है।

साफ सुथरा हो गया अभियान के अंतर्गत वैसे सभी सफाईकर्मी जो अच्छे से अपने कर्तव्य का सही से निर्वहन करेंगे उन सभी को पुरस्कृत भी किया जाएगा।



# कुर्था नगर पंचायत में पैक्स चुनाव को लेकर तारीखों का हुआ एलान

## 16 से 18 जनवरी को होगा नामांकन व 29 जनवरी को होगा मतदान

- कुर्था नगर पंचायत के खेमकरण सराय में 1586 मतदाता करेंगे मताधिकार का प्रयोग

- 16. जनवरी से 17 जनवरी तक नामांकन
- 18 से 20 जनबरी समीक्षा
- 22. 01.2025 नाम वापसी/ प्रतीक आवंटन
- 29. 01.2025 मतदान और मतगणना

प्रातः किरण संवाददाता

कुर्था (अरवल)। प्राथमिक कृषि सहयोग साख समिति पैक्स चुनाव को लेकर निर्वाचन आयोग ने तारीखों का ऐलान कर दिया है तारीखों के ऐलान होते ही कुर्था प्रखंड के खेमकरण सराय नगर पंचायत में चुनावी सरगमी तेज हो गई है बिहार सहकारिता अधिनियम में किये गये संशोधन एवं सहकारिता विभाग, बिहार सरकार की अधिसूचना संख्या-1273 दिनांक 01.03.2012 के क्रम में उक्त अधिनियम के तहत निर्बंधित सहकारी समितियों के प्रबंधकारिणी समिति, जो या तो अधिक्रमित/ विघटित हैं या जिनकी कालावधि समाप्त होने वाली है, का निर्वाचन बिहार राज्य निर्वाचन प्राधिकार के नियंत्रण, निदेशन एवं पर्यवेक्षण के अधीन कराया जाना है।उक्त परिप्रेक्ष्य में प्राधिकार द्वारा संलग्न अनुलग्नक 1 में अंकित 92 प्राथमिक कृषि साख समिति (पैक्स) का निर्वाचन कराने का निर्णय लिया गया है, जो अवक्रमित है अथवा जिनका निर्वाचन देय है।बिहार राज्य निर्वाचन प्राधिकार अधिनियम, 2008 की धारा 4 एवं बिहार सहकारी समिति अधिनियम, 1935 (यथा संशोधित, 2008) की धारा 14 ह्यकह्न तथा सुसंगत नियमावलियों के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राज्य निर्वाचन प्राधिकार एतद् द्वारा प्राथमिक कृषि साख समितियों के निर्वाचन हेतु सविरोध निर्वाचन की स्थिति में, मतदान दिनांक 29.01.2025 (बुधवार) की तिथि नियत करता है तथा संबंधित समिति के मतदाताओं से अपेक्षा करता है कि वे संगत अधिनियम / नियमावली/ प्राधिकार के निदेशों के अधीन समिति के पदधारकों को निर्वाचित करें। इस उद्देश्य हेतु मतदाता सूची तैयार करने के लिए प्राधिकार के पत्रांक 2178 दिनांक 04.12.2024 एवं पत्रांक 2194 दिनांक 06.12.2024 द्वारा कट-ऑफ तिथि 30.11. 2024 निर्धारित की गयी है, जिसके अनुसार मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन दिनांक 24.12.2024 को हो चुका है।

प्राथमिक कृषि साख समिति (पैक्स) के निर्वाचन हेतु निम्नांकित कार्यक्रम नियत किया जाता है निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा सूचना का प्रकाशन कर दी गई है सूचना के प्रकाशन होते ही प्रखंड क्षेत्र के खेमकरण सराय नगर पंचायत में इन दिनों चुनावी हलचल तेज हो गई है प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी अभय कुमार ने बताया कि कुर्था नगर पंचायत में पैक्स चुनाव को लेकर 1586 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे।

# सीयूएसबी के शोध में कीटनाशक संदूषण का खतरनाक स्तर पाया गया

प्रातः किरण संवाददाता



गया।हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन, विशेष रूप से सब्जियों की सुरक्षा एक बढ़ती हुई चिंता है` दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय सीयूएसबी के पर्यावरण विज्ञान विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. एन.एल. देवी और उनकी शोधार्थी सुश्री आकृति अशेष ने गया जिले पर किए गए हालिया अध्ययन ने इस गंभीर मुद्दे पर प्रकाश डाला है। जन सम्पर्क पदाधिकारी पीआरओ ने बताया कि डॉ. देवी और उनकी शोधार्थी आकृति ने गया क्षेत्र में उगाई जाने वाली सब्जियों में हानिकारक कीटनाशक पाए हैं। अध्ययन में लोकप्रिय सर्दियों की सब्जियां जैसे गोभी, पालक, सरसों का साग, फूलगोभी, लौकी, करेला, टमाटर, बैंगन, हरी मिर्च, भिंडी, मूली और आलू की जाँच की गई है। चंदौती, मानपुर, मोहनपुर, टेकारी और बोधगया सहित गया के विभिन्न क्षेत्रों से नमूने लिए गए हैं। परीक्षणों में डीडीटी, एल्ड्रिन, डाइलड्रिन और एंडोसल्फान सहित 19 प्रकार के ऑर्गेनोक्लोरीन कीटनाशकों के साथ संदूषण पाया गया है।

विस्तृत जानकारी देते हुए डॉ. एन.एल. देवी ने बताया कि शोध के परिणाम चिंताजनक थेः 96% नमूने डाइलड्रिन से दूषित थे, 71% में एल्ड्रिन था, और 25% में एंडोसल्फान के अंश पाए गए हैं। डाइलड्रिन जैसे कुछ कीटनाशक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे कि भारतीय मानक ब्यूरो बीआईएस, खाद्य और कृषि संगठन एफएओ, और विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्ल्यूएचओ द्वारा निर्धारित सुरक्षा सीमाओं से कहीं अधिक स्तर पर पाए गए। इसी तरह, यूनाइटेड स्टेट्स फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन यूएसएफडीए के अनुसार हेप्टाक्लोर और क्लोर्डेन असुरक्षित स्तर पर पाए गए।हमारे शोध से यह निष्कर्ष निकला है कि संदूषण पिछले और वर्तमान दोनों कीटनाशकों के उपयोग से होता है। डीडीटी और एल्ड्रिन जैसे प्रतिबंधित कीटनाशक अभी भी अवैध रूप से उपयोग में हो सकते हैं, जबकि आस-पास के अपशिष्ट डंपिंग स्थल और औद्योगिक गतिविधियां भी समस्या में योगदान दे सकती हैं। इन जहरीले रसायनों से दूषित सब्जियां खाने से स्वास्थ्य पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं। लंबे समय तक संपर्क में रहने से कैंसर, जन्म दोष और अन्य गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं जैसी स्थितियों का जोखिम बढ़ सकता है। दूषित मिट्टी इन विषाक्त पदार्थों को हमारे भोजन में वापस रिसाइकिल कर सकती है।जिससे एक खतरनाक चक्र बन सकता है।

डॉ. देवी ने कहा कि यह अध्ययन हम सभी के लिए एक चेतावनी है। यह टिकाऊ खेती के तरीकों और हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कीटनाशक नियमों के सख्त प्रवर्तन की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

# पूर्व प्रधानमंत्री के निधन पर नवादा विधि कॉलेज के प्राचार्य ने गहरा शोक व्यक्त किया

प्रातः किरण संवाददाता



गया।भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भारतीय अर्थशास्त्र के शिखर पुरुष डॉ मनमोहन सिंह के मृत्यु पर नवादा विधि कॉलेज के प्राचार्य डॉ डी एन मिश्रा ने गहरा शोक व्यक्त किया। उन्होंने डॉ. सिंह के आर्थिक और राजनीतिक योगदान को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनका व्यक्तित्व और कृतित्व भारत के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत रहेगा।डॉ. मनमोहन सिंह का जन्म 26 सितंबर 1932 को हुआ था और उनका जीवन भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुआ है। 1991 में, जब भारत गंभीर आर्थिक संकट से जूझ रहा था, डॉ. सिंह ने वित्त मंत्री के रूप में आर्थिक सुधारों की नींव रखी, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक पहचान मिली है।उनके प्रयासों ने करोड़ों लोगों को गरीबी से बाहर निकाला और देश को आर्थिक रूप से मजबूत बनाया है। डॉ. सिंह की सरलता, विद्वता और कार्यकुशलता उन्हें अन्य नेताओं से अलग बनाती थी। उन्होंने कभी भी राजनीतिक प्रतिस्पर्धा को व्यक्तिगत कटुता में नहीं बदला और हमेशा अपने देशहित को प्राथमिकता दी है।डॉ. मनमोहन सिंह ने प्रधानमंत्री के रूप में देश को स्थिरता प्रदान की और विकास की गति को आगे बढ़ाया है। उनकी नीतियों ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विकास में संतुलन बनाए रखा। डॉ. सिंह का निधन देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है।, उन्होंने कहा कि डॉ. सिंह जैसे महापुरुष का जाना भारतीय राजनीति और समाज के लिए एक युग का अंत है। उन्होंने उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए भगवान से प्रार्थना की उन्हें अपने चरणों में स्थान दें एबं आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति दें।

# बिजली चोरी में एक पर दर्ज हुआ मामला, लगाया गया 39690 रुपए का जुर्माना

कुर्था (अरवल)। साउथ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन लिमिटेड के निर्देश पर विद्युत विभाग द्वारा चलाए जा रहे संघन जांच अभियान के दौरान विद्युत विभाग की टीम ने थाना क्षेत्र के मेरोगंज गांव में सघन चेकिंग अभियान चलाते हुए एक उपभोक्ता पर बिजली चोरी की प्राथमिक की दर्ज करते हुए जुमार्ना लगाया है उक्त बातों की जानकारी देते हुए कुर्था विद्युत पर शाखा के कनिय विद्युत अभियंता सूरज कुमार ने बताया कि विद्युत विभाग के द्वारा चलाए जा रहे हैं छापेमारी अभियान के तहत थाना क्षेत्र के मेरोगंज गांव निवासी चंद्रभूषण सिंह पर बिजली चोरी की प्राथमिक की दर्ज करते हुए 39690 रुपए का जुमार्ना लगाया है।

# जीडी गोयनका स्कूल को मिला ऑक्सफोर्ड क्वालिटी का दर्जा, सर्टिफिकेट देकर किया सम्मानित

प्रातः किरण संवाददाता

गया।गया-पटना रोड के रसलपुर स्थित जी.डी. गोयनका स्कूल को ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने ऑक्सफोर्ड क्वालिटी का दर्जा दिया है। गुरुवार को स्कूल परिसर में ऑक्सफोर्ड क्वालिटी स्कूल के रूप में चयनित स्कूलों के लिए एक वैश्विक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है ।इस दौरान ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का एक विभाग ने स्कूल के उच्च-गुणवत्ता वाली शिक्षण सामग्री का उपयोग करने के लिए बल्कि प्रतिबद्धता का भी प्रतीक बताया है। इसके तहत उन्हें ऑक्सफोर्ड क्वालिटी का दर्जा के सर्टिफिकेट से सम्मानित किया है।इस मौके पर ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के रीजनल मैनेजर सत्यप्रकाश ने बताया कि ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी दुनिया भर में एक कार्यक्रम चलाकर चयनित स्कूलों और संस्थानों का समर्थन करने के लिए डिजाइन किया गया है जो उत्कृष्टता प्राप्त करने की प्रतिबद्धता साझा करते हैं। 157 देशों में उपस्थिति और 80 भाषाओं में उपलब्ध संसाधनों के साथ, ओयूपी

अनुरूप शैक्षिक समाधान प्रदान करने के लिए अनुसंधान-सूचित शिक्षण डिजाइन और शिक्षाशास्त्र को जोड़ती है। उन्होंने कहा कि ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के मापदंडों के अनुसार गया के जीडी गोयंका स्कूल खरा उतरी है जो




ऑक्सफोर्ड के तर्ज पर विद्यालय की व्यवस्था एवं बच्चों को बेहतर शिक्षा के साथ-साथ अन्य सुविधा उपलब्ध कराने में सक्षम है। इसलिए जीडी गोयनका स्कूल के व्यवस्थापक को ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस की ओर से सम्मानित किया जा रहा है।उन्होंने जीडी गोयंका स्कूल के अध्यक्ष आरएस राठौर के साथ-साथ पूरी टीम को शुभकामनाएं एवं बधाइयां दी है।वही इस मौके पर स्कूल के चेयरमैन रवीन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि जी.डी. गोयनका स्कूल ने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से सर्टिफिकेट प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस कार्यक्रम चलाकर स्कूल की विधि व्यवस्था की जानकारी प्राप्त कर बेहतर शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालय का चयन करता है जिसमें हमारा स्कूल का भी किया गया है जिसके लिए ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी एवं उनके सभी सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने हमारा स्कूल को चयन किया है। उन्होंने यह भी कहा कि यह उपलब्धि सिर्फ हमारा प्रयास से संभव नहीं है इस उपलब्धि के पीछे हमारे विद्यालय के सभी शिक्षको एवं कर्मचारियों का भरपूर सहयोग मिला है इसलिए यह संभव हो पाया है ,इसके लिए हम हमारी अपनी पूरी टीम को भी धन्यवाद देते हैं।उन्होंने यह भी कहा कि हमारा प्रयास है कि हमारे विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों को बेहतर और गुणवत्ता शिक्षा प्रदान हो सके इसके लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। इस मौके पर विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिकायें उपस्थित थे।

# सीयूएसबी के रसायन विभाग के शोधार्थी छात्र रजनीश कुमार को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ पोस्टर प्रस्तुति का मिला पुरस्कार

प्रातः किरण संवाददाता

गया।दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय सीयूएसबीके रसायन विभाग के शोधार्थी छात्र रजनीश कुमार को बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी बीआईटी, मेसरा, रांची में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन में सर्वश्रेष्ठ पोस्टर प्रस्तुति का पुरस्कार मिला है` इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो कामेश्वर नाथ सिंह एवं कुलसचिव प्रो नरेंद्र कुमार राणा ने रजनीश कुमार और उनके प्रयवेक्षक प्रो. अमिय प्रियम विभागाध्यक्ष एवं डीन को बधाई और शुभकामनायें दी है` जन सम्पर्क पदाधिकारी पीआरओ ने बताया कि शोधार्थी छात्र रजनीश कुमार द्वारा प्रो. अमिय प्रियम की देखरेख में नैनोमटेरियल के एक नए वर्ग, अर्थात ह्यपीईजीलेटेड अपकन्वर्जन नैनोपार्टिकल्स यूसीएनपी पर किए गए शोध कार्य को एडवांस इन मैटेरियल्स एंड केमिकल साइंसेज एएमसीएस-24 पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया है।उनके शोध के चर्चा का विषय बायोमेडिकल अनुप्रयोगों के लिए पीईजीलेटेड अपकन्वर्जन नैनोक्रिस्टल्स का माइक्रोवेव-असिस्टेड संश्लेषण था।प्रो. प्रियम और उनकी टीम ने पीईजीलेटेड अपकन्वर्जन नैनोपार्टिकल्स नामक नैनोमटेरियल की एक नई श्रेणी को संश्लेषित किया है, जो अद्वितीय ल्यूमिनसेंट गुण दिखाते हैं और कैंसर थेरेपी, दवा वितरण और उच्च सुरक्षा वाले नकली-विरोधी जैसे विभिन्न अनुप्रयोगों में उपयोगी हैं।इस सम्मेलन में भौतिकविदों, रसायनज्ञों और जीवविज्ञानियों के विभिन्न दृष्टिकोणों से इस बहु-विषयक और उभरते क्षेत्र में सबसे हालिया सफलताओं पर चर्चा की गई है। विभाग के संकाय सदस्यों क्रमशः प्रो. अतुल प्रताप सिंह, डॉ. गिरीश चंद्र, डॉ. जगन्नाथ आदि थे।

# समकालीन जवाबदेही संस्मरण अंक का लोकार्पण आज, सारी तैयारियां पूरी

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद के समाहरणालय के समीप अवस्थित नगर भवन में समकालीन जवाबदेही पत्रिका का लोकार्पण आज किया जाएगा।इस आशय की जानकारी देते हुए पत्रिका के प्रधान संपादक प्रधान संपादक डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्रा एवं मीडिया प्रभारी सुरेश विद्यार्थी ने बताया कि 29 दिसंबर को पूर्वाहन में औरंगाबाद से लगातार 8 वर्षों तक निरंतर निकलने वाले समकालीन जवाबदेही का लोकार्पण झारखंड विधानसभा के प्रथम अध्यक्ष इंदर सिंह नामधारी के कर कमलों द्वारा किया जाएगा।जबकि,मुख्य अतिथि के रूप में मगध विश्वविद्यालय के कुलपति शशि प्रताप शाही एवं मुख्य वक्ता प्रकाश शुक्ला की गरिमामई उपस्थिति होगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता पंच देव चपरा के संस्थापक अशोक कुमार सिंह जी करेंगे जबकि संचालन की जिम्मेवारी प्रसिद्ध अधिवक्ता प्रेमेंद्र मिश्रा को दी गई है। लोकार्पण समारोह के सफल क्रियान्वयन के लिए कार्यक्रम की समीक्षा की गई समीक्षोपरांत पाया कि सारी तैयारियां पूर्ण हो चुकी है। इस पत्रिका को सफल प्रकाशन कराने में इलाहाबाद विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के प्रोफेसर डॉ कुमार वीरेंद्र की विशेष भूमिका रही है तो दशरथ प्रसाद रामनंदन पांडेय बी एड कॉलेज चित्रगोपी प्रायोजक की भूमिका में है और मुख्य संरक्षक के रूप में शंभूनाथ पांडेय जी की भूमिका प्रमुख है।वहीं जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के महामंत्री धनंजय पुरी,डॉ रामाधार सिंह, पुरुषोत्तम पाठक,चंदन कुमार, उज्ज्वल रंजन, अवनीश यादव भी लगातार कार्यक्रम को सफल करने में लगे हुए हैं।

# बारुण के केशव हाई स्कूल में सक्षमता औपबंधिक नियुक्ति पत्र का किया गया वितरण

औरंगाबाद।बारुण प्रखंड के प्रखंड संसाधन केंद्र के तत्वावधान में केशव हाई स्कूल के प्रांगण में डीपीओ स्थापना सह बारुण बीईओ दयाशंकर सिंह के निर्देश पर सक्षमता प्रथम परीक्षा उत्तीर्ण सभी शिक्षकों को औपबंधिक नियुक्ति पत्र निर्गत करने के निमित वर्ग 1 से 5 एवं 6 से 8 उर्दू विषय का औपबंधिक नियुक्ति पत्र वितरित किया गया। नियुक्ति पत्र वितरण के मौके पर प्रखंड परियोजना प्रबंधक दीपक कुमार रजक एवं संजीव कुमार पाल,अकाउंटेंट कुश कुमार एमडीएम बीआरपी बजरंगी ठाकुर,बीआरपी रेवती रमन शर्मा एवं सतीश कुमार पांडेय की गरिमामई उपस्थिति रही। नियुक्ति पत्र वितरण करते हुए अतिथियों ने कहा कि इस नियुक्ति पत्र के माध्यम से शिक्षक अपने-अपने विद्यालय में जाएंगे और जनवरी के प्रथम सप्ताह में योगदान को सुनिश्चित करेंगे।साथ ही साथ आगे की विभागीय प्रक्रिया को पूर्णता प्रदान की जाएगी। सक्षमता एडमिट कार्ड एवं अपने आधार कार्ड के साथ पहुंचे शिक्षकों ने बारी-बारी से नियुक्ति पत्र ग्रहण किया।

# पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर जिलाअध्यक्ष ने अर्पित की श्रद्धांजलि

गया। डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर गया जिला कॉंग्रेस कमिटी के तत्वावधान में स्थानीय कॉंग्रेस कार्यालय राजेंद्र आश्रम में विशाल श्रद्धांजलि सभा में जिलाअध्यक्ष डॉ गगन मिश्रा एवं जिला उपाध्यक्ष डॉ देवकी सरयार ने स्व डॉ मनमोहन सिंह के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि के पाश्चात्य एक मिनट का मौन रख कर ईश्वर से प्रार्थना किया कि है।इनके पुण्य आत्मा को अपने चरण श्री में स्थान दें। गया जिला अध्यक्ष ने कहा कि इनकी विद्वता, सज्जनता, सरलता, सर्वहारा स्वभाव, ईमानदारी, व्यक्तित्व भारत की जनमानस हमेशा याद रखेगी। इनके प्रधानमंत्री काल में सूचना का अधिकार, भोजन का अधिकार, रोजगार का अधिकार, शिक्षा का अधिकार देकर देश के 140 करोड़ महान जनता के लिए संजीवनी का काम कर रहा है। जिससे बिहार के गांव में सड़कों का जाल बिछा दिया है। राजीव गांधी विद्युत योजना के तहत गांव गांव तक बिली पहुंचाने का काम किया है।बिहार में दो दो केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना उनकी सरकार के दौरान हीं हुआ है।

# किलकारी के बच्चे एवं प्रशिक्षक ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह को दी श्रद्धांजलि

गया।किलकारी के प्रांगण में बच्चों ने दो मिनट का मौन धारण करके पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह जी को दी श्रद्धांजलि` बच्चों ने उनके बारे में कई अच्छी बातें भी बताई है` गुरुवार रात दिल्ली के एम्स में उनका निधन हो गया है। दस सालों तक देश के प्रधानमंत्री रहे डॉ. मनमोहन सिंह 92 साल के थे। भारत में कई जगहों में उनको श्रद्धांजलि दी गई। राजकीय सम्मान और सिख परंपरा के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया है। प्रियंका कुमारी चित्रकला प्रशिक्षिका ने बताया की डॉ. मनमोहन सिंह का जन्म 26 सितंबर 1932 को ब्रिटिश भारत के पंजाब प्रांत के गाह नामक गांव अब पाकिस्तान में में हुआ था। हालांकि, 1947 में देश आजाद होने के बाद उनका परिवार अमृतसर आकर बस गया है ।

# पंचायत सरकार भवन निर्माण कार्य को अविलम्ब जिलाधिकारी से रोक लगाने की मांग कीः बीरेन्द्र गोप



गया।ओबीसी महासभा बिहार के प्रदेश अध्यक्ष सह प्रदेश महासचिव राष्ट्रीय जनता दल बिहार एडवोकेट बीरेन्द्र कुमार उर्फ बीरेन्द्र गोप ने गया के जिलाधिकारी डॉ० एस एम त्यागराजन को पत्र लिखकर कोंच प्रखंड के ग्राम पंचायत असलेमपुर के ग्राम सभा द्वारा पंचायत सरकार भवन के लिए चयनित स्थल के बजाय दूसरे जगह पर कराये जा रहे निर्माण कार्य को अविलम्ब रोक लगाने की मांग की है। बीरेन्द्र गोप ने बताया कि टिकारी के स्थानीय विधायक के इशारे पर बिहार सरकार पंचायत नियमावली के विरुद्ध ग्राम सभा के निर्णय को दरकिनार करते हुए उनके जाति विशेष के गांव में पंचायत सरकार भवन का निर्माण कार्य कराया जा रहा है जिसका ओबीसी महासभा बिहार पुरजोर तरीके से प्रतिकार करती है। इसके साथ ही बिहार के मुख्यमंत्री पर आरोप लगाते हुए कहा कि न्याय के साथ विकास का नारा देने वाले नीतीश कुमार एक विशेष वर्ग के लिए काम कर रहे हैं जिसका जवाब बिहार व गया जिला के पिछड़ा, अतिपिछड़ा एवं दलित वर्ग के लोग 2025 के विधानसभा चुनाव में देगी। बीरेन्द्र गोप ने कहा कि अगर निर्माण कार्य पर अविलम्ब रोक नहीं लगाया गया तो ओबीसी महासभा आंदोलन करने पर मजबूर होगी।

# एसकेआर कॉलेज, बरबीघा के विकास हेतु 5 करोड़ की सहायता राशि मिलीः सांसद ,विवेक ठाकुर

गया।बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री के नाम से स्थापित महाविद्यालय को प्रधानमंत्री उच्चत्तर शिक्षा अभियान योजना से सांसद विवेक ठाकुर के प्रयास से 5 करोड़ रूपए की राशि प्राप्त हुई है।विवेक ठाकुर ने बताया कि यह राशि प्रधानमंत्री उच्चत्तर शिक्षा अभियान योजना द्वारा प्राथमिकता के आधार पर वैसे जिले अथवा महाविद्यालय को उपलब्ध कराए जाते हैं, जहाँ बाढ़ प्रभावित अथवा नीति आयोग द्वारा प्राथमिकता के आधार पर चयनित जिले शामिल किए जाते हैं। यहां यह बताते चलें कि बिहार के 15 जिलों के 15 महाविद्यालय का चयन किया गया, जिसमें प्रत्येक कॉलेज को 5-5 करोड़ रूपए की राशि निम्नांकित कार्यों हेतु आवंटित की गई है।

इस राशि से कॉलेज के वर्ग कक्ष एवं मल्टीपरपस हॉल, पुस्तकालय का निर्माण होगा, जिसमें 3 करोड़ 50 लाख रुपए का खर्च आएगा। इसके साथ ही साथ 25 लाख की लागत से एक स्मार्ट क्लास एवं 1 करोड़ 25 लाख की लागत से आई.सी.टी. लैब कुर्सी, टेबल, कम्प्यूटर का क्रय किया जाना है। साथ ही साथ आगे भी अन्य कार्यों हेतु महाविद्यालय से मांग प्राप्त होने पर अन्य कार्य भी कराये जा सकेंगे।सांसद विवेक ठाकुर ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा इस सहयोग से कॉलेज के व्यवस्थित और सुदृढ़ होने में काफी सहायक होगा।इसके लिए बरबीघा की समस्त जनता की ओर से देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कोटि-कोटि आभार एवं अभिनंदन।

# नगर आयुक्त द्वारा शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर सुबह में किया गया निरक्षण

प्रातः किरण संवाददाता



गया।गया रेलवे स्टेशन वाले वार्ड 16 से की गई। गया रेलवे स्टेशन एक मुख्य स्थल है शहर का एवं इसके इर्द गिर्द सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करना सफाई अभियान का एक अहम पहलू है।वार्ड 16 में स्वच्छता पदाधिकारियों के साथ भ्रमण किया गया एवं वैसे स्थानों का निरक्षण किया जो स्वच्छता के दृष्टिकोण से संवेदनशील स्थान है। गरबेग भेरब्युल प्वाईंट को देखा गया जहां वार्ड 15 एवं 16 के स्थानीय लोग कचरा डंप कर देते है।एक समस्या पाई गई कि कई लोग गाय पालते हैं परंतु उनके पास गायों को रखने का प्रयाप्त जगह नहीं है। जिस कारण वह गाय को आवारा भ्रमण के लिए छोड़ देते है। गरबेग भेरब्युल प्वाईंट पर भी बीस के लगभग गाय पाई गई। इसके साथ ही, गाय के गोबर को सीधे नाले में बहा देते हैं जिस से की नाला जाम हो जाता है जिसके कारण पूरे इलाके के जल निकासी में संकट पैदा हो जाती है। इसको लेकर नगर आयुक्त द्वारा निर्देश दिया गया कि ऐसे सभी लोगों को वार्ड वार चिन्हित किया जाए एवं वार्ड वार एक सूची तैयार की जाए। पिछले दिनों बैठक में बोर्ड के निर्णय के आलोक में इन सभी लोगों पर निरंतर 1000 रुपए का फाइन किया जाए। इसके साथ ही, वार्ड वार, निगम के द्वारा सूची सार्वजनिक की जाएगी जिसमें वार्ड वार वैसे लोगों का घर और नाम चिन्हित हो जिनके द्वारा अपने घर या संस्थान के कचरे को सीधा नाला या रास्ता में डंप किया जा रहा है और पूरे इलाके में गंदगी फैलाई जा रही है।साथ में ,उन सभी लोगों पे कितना जुमार्ना लगाया गया है वो भी अंकित हो। डोर टू डोर कचरा कलेक्शन का भी निरक्षण किया गया है। कुल 3 टीम पूरे वार्ड में डोर टू डोर कचरा संग्रहण में कारगर पाई गई है। घर भ्रमण के दौरान देखा गया कि कई जगह दफूड्डीं खराब हो गए हैं। वैसे सभी घरों को चिन्हित कराया गया और एजेंसी को निर्देशित किया गया की जल्द से जल्द उन सभी घरों में दफूड्डीं अधिष्ठापित कर दें। सफाई जमादार ने बताया कि कुल 600 घर इस वार्ड में चिन्हित है एवं इन सभी से कचरा का उठाव हो रहा है। घर एवं दुकानों का भ्रमण कर स्थानीय लोगों से नगर आयुक्त द्वारा इसकी जांच की गई है। मोहल्ले के लोगों के द्वारा डोर टू डोर कचरा उठाव का कार्य संतोषजनक बताया गया है। डोर टू डोर में एक सफाई कर्मी अनुपस्थित पाए गए जिसका एक दिन का भुगतान रोकने का निर्देश दिया गया है। स्टेशन स्थित निगम के स्टोर का भी निरक्षण किया गया और वहां गाड़ियों एवं स्वच्छता कर्मियों की उपस्थिति की जांच की गई है।इसके साथ ही देवघाट , विष्णुपद मंदिर एवं फल्गु नदी के घाट की सफाई की भी समीक्षा की गई है। स्वच्छता पदाधिकारी को निर्देश दिया गया कि अभी कैंप मोड में वहां सफाई कराना सुनिश्चित करेंगे ताकि मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की शिकायत ना हो। लेकिन एक बात गया जी के महिलाओं के मार्केट में पुरुष टायलट बंद नही हुआ।

# अनवरत 5 साल एकल रंजन का प्रयास नेशन प्राइड अवार्ड

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। कोई झूमता रहा तो कोई गाता रहा मौका था नेशन प्राइड अवार्ड के 5 वे संस्करण के खुबसूरत शाम कि जहां जाते हुए साल कि सुखद विदाई तो आते हुए साल का स्वागत कविता, नृत्य, संगीत और खूबसूरत शेरों शायरी से कि गई बिहर के अलग-अलग क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले 21 लोगों को नेशन प्राइड अवार्ड 2024 से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के आयोजनकर्ता रंजन कुमार ने बताया कि यह नेशन प्राइड अवार्ड का पांचवा साल है।इस वर्ष यह




आयोजन पटना के द आर्ट एक्टिविटी सेंटर में किया गया। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि समाज सेवी राजू दानवीर मौजूद थे। मौके पर विशिष्ट अतिथि के तौर पर जीएसएटी कमिश्नर समीर परिमल, गुड्डू बाबा, डॉ. राकेश रंजन, भोजपुरी हास्य कलाकार रोहित सिंह मटरू,समाजसेविका सोनिया सिंह ने अपनी बातों को रखा। कार्यक्रम की शुरूआत गणमान्य अतिथियों ने दीप प्रज्जवलित कर की। सभी अतिथियों को मोमेंटो, पौधा देकर सम्मानित किया गया। सभी गणमान्य अतिथियों ने रंजन कुमार के इस पहल की सराहन की। मौके पर राजू दानवीर का जन्मदिन केक काटकर मनाया गया। रंजन कुमार ने बताया कि बिहार का इतिहास गौरवशाली एवं वैभवशाली रहा है।आज ज्ञान बांटने से कहीं ज्यादा जरूरी प्यार बांटने कि है।राज्य के विभिन्न हिस्सों एवं क्षेत्रों में कई लोग अपने स्तर पर निस्वार्थ भाव से निरंतर बिहार को एक बेहतर और समृद्ध राज्य बनाने के लिए प्रयासरत हैं। उन्हीं लोगों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हर वर्ष नेशन प्राइड अवार्ड का आयोजन किया जाता रहा है और आगे भी किया जाएगा। नेशन प्राइड अवार्ड पाने वालो में रोहित सिंह मटरू,रीषभ कुमार,सोनिया सिंह, कुमार पंकज सिन्हा,प्रेम कुमार, सुबोध यादव, समीर परिमल, इरशाद सिद्दीकी शिबू, आराधना प्रसाद,सलमान सिद्दीकी, कुमारी वैष्णवी ,देवराज मुन्ना, प्रवीण कुमार बादल,समेत 21 लोग शामिल रहे।मौके पर संगीतमय कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। प्रस्तुति देने वाले लोगों में सपना राज देवराज मुन्ना, प्रेम कुमार, प्रियंका, प्रवीण कुमार बादल प्रमुख रहें।

# डीडीसी डॉ. अनुपमा सिंह की अध्यक्षता में स्वास्थ्य विभाग की मासिक समीक्षा बैठक हुई आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता



आरा :जिलाधिकारी, भोजपुर के निर्देशानुसार उप विकास आयुक्त डॉ. अनुपमा सिंह (भा.प्र.से.) की अध्यक्षता में स्वास्थ्य विभाग की मासिक समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक में उन्होंने सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार स्वास्थ्य संस्थानों में दवाओं की उपलब्धता, एक्स-रे की सुविधा, पैथोलॉजिकल जांच, और प्रखंडवार ई-संजीवनी के माध्यम से टेली-कंसल्टेशन की अद्यतन स्थिति में सुधार लाने का निर्देश दिया। उन्होंने टेली-कंसल्टेशन में खराब प्रदर्शन करने वाले डॉक्टरों को बेहतर कार्य के लिए प्रोत्साहित करने पर भी जोर दिया।उप विकास आयुक्त ने सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारियों एवं प्रखंड स्वास्थ्य प्रबंधकों को स्वास्थ्य सुविधाओं में गुणात्मक सुधार करते हुए अधिक से अधिक संस्थागत प्रसव सुनिश्चित करने और शत-प्रतिशत बच्चों का पूर्ण टीकाकरण कराने का निर्देश दिया। साथ ही, अनमोल ऐप के माध्यम से सभी गर्भवती महिलाओं और बच्चों की जानकारी अद्यतन करवाने का भी निर्देश दिया।समीक्षा के दौरान जिन स्वास्थ्य केंद्रों में एएनसी की आरसीएच पोर्टल पर एंट्री औसत से कम पाई गई, उन केंद्रों के लिए सिविल सर्जन को संबंधित प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारियों से स्पष्टीकरण मांगने और चेतावनी देने का निर्देश दिया गया। इसके साथ ही, प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारियों को अपने स्तर से कार्यों की नियमित समीक्षा करने का निर्देश दिया गया।जननी एवं बाल सुरक्षा योजना के तहत प्रोत्साहन राशि के समय पर भुगतान पर विशेष ध्यान देने को कहा गया। सभी उपाधीक्षकों और प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारियों को उपलब्ध निधि का उपयोग करते हुए इस योजना के तहत अधिक से अधिक लाभार्थियों को भुगतान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

भव्या पोर्टल पर ओपीडी रजिस्ट्रेशन की समीक्षा के क्रम में यह पाया गया कि कुछ स्वास्थ्य संस्थानों को छोड़कर अधिकांश में काफी कम एंट्री हो रही है। उप विकास आयुक्त ने बताया कि भव्या पोर्टल के माध्यम से मरीजों का इलाज और संबंधित विवरण ऑनलाइन रखा जा सकता है, जिससे मरीजों को किसी प्रकार के पुर्जे या जांच रिपोर्ट के लिए भटकना न पड़े। उन्होंने सभी स्वास्थ्य संस्थानों को मरीजों की संख्या बढ़ाने और पोर्टल का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

### उप विकास आयुक्त ने की सभी विभागों की समीक्षा बैठक

आरा। उप विकास आयुक्त,भोजपुर डॉअनुपमा सिंह द्वारा सामाजिक सुरक्षा, दिव्यांगजन सशक्तिकरण, बाल संरक्षण, अल्पसंख्यक कल्याण, अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण सहित सभी लोक-कल्याणकारी योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई। समीक्षा के दौरान उन्होंने संबंधित पदाधिकारियों को सरकार के निर्देशों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। उन्होंने सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के तहत लंबित पेंशन मामलों का समयबद्ध निष्पादन, दिव्यांगजनों के लिए यूडीआईडी कार्ड निर्माण में तेजी लाने, सरकारी मदरसे से छह प्रपत्र करने, अल्पसंख्यक कल्याण बालक छात्रावास में रिक्तियों को भरने के लिए विशेष अभियान चलाने आदि बात कही।

## जिला पदाधिकारी,भोजपुर ने आरा में रिंग रोड निर्माण को लेकर किया निरीक्षण



प्रातः किरण संवाददाता

आरा। जिला पदाधिकारी,भोजपुर श्री तनय सुल्तानिया (भा.प्र.से) द्वारा आरा में रिंग रोड निर्माण हेतु प्रस्तावित मार्ग का निरीक्षण किया गया।निरीक्षण के दौरान उन्होंने असनी से पातर,पातर से बामपाली,पातर से कायम नगर,चंदवा मोड़ से धनुपरा,भारा, रघुटोला,बगहुतुपुर एवं गांगी, तथा बगहुतुपुर से धरहरा पथ का डीपीआर/प्राक्कलन तैयार कर तीन दिनों के अंदर प्रस्तुत करने का निर्देश कार्यपालक अभियंता, शाहाबाद पथ प्रमंडल, आरा को दिया। उन्होंने बताया कि रिंग रोड के निर्माण से रोहतास, कैमूर और बक्सर से आने वाली सभी गाड़ियां, जो वर्तमान में आरा शहर के अंदर से गुजरती हैं, को जाम से राहत मिलेगी।

इस अवसर पर जिला भू-अर्जन पदाधिकारी, भूमि सुधार उपसमाहर्ता,आरा सदर, कार्यपालक अभियंता शाहाबाद पथ प्रमंडल, बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल,आरा, अंचलाधिकारी, आरा सदर एवं अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

## सुचिता रंजनी बनी निर्विरोध नगर प्रखंड प्रमुख,समर्थकों ने फूल-माला पहनाकर दी बधाई

प्रातः किरण संवाददाता

गया।चंदौती नगर प्रखंड प्रमुख के उपचुनाव में सुचिता रंजनी निर्विरोध प्रखंड प्रमुख चुनी गई. जिसके बाद समर्थकों ने उन्हें फूल-माला पहनाकर बधाई दी। इस दौरान सुचिता रंजनी ने बताया कि विगत एक सालों से हमलोग न्यायालय का दरवाजा खटखटा रहे थे, एक लंबे संघर्ष के बाद आज हम लोगों को न्याय मिला है। पंचायत समिति के सदस्यों ने हमें निर्विरोध चंदौती नगर प्रखंड प्रमुख के पद पर चुना है इसके लिए हम इन्हें बधाई देते हैं। इस उप चुनाव में हमारी जीत हुई है। इससे पहले भी हम प्रखंड प्रमुख रह चुके है। उन्होंने कहा कि विगत एक सालों से पंचायत में कार्य बाधित था।अब हम विकास की धारा बहाने का प्रयास करेंगे, जो काम अवरुद्ध पड़ा था, उसे पूरा किया जाएगा। सरकार की योजनाओं का लाभ जनता को मिले और इन योजनाओं का फलाफल धरातल पर देखने को मिले, ऐसा हमारा प्रयास होगा।

## महादलित युवकों को टूर्नामेंट का अवसर प्रदान कराना सराहनीय:एसडीएम

प्रातः किरण संवाददाता

भोजपुर जिला में पहली बार सामाजिक संस्था द्वारा नई आशा द्वारा महादलित (मुसहर) युवकों के बीच द्वादो दिवसीय माता शबरी फुटबॉल टूर्नामेंट-2024 का आयोजन बिहिया हाई स्कूल के मैदान में किया गया। इस टूर्नामेंट में भोजपुर, बक्सर और रोहतास जिला की कुल 8 टीमें शामिल हुई। मैच का उद्घाटन करते हुए जगदीशपुर अनुमंडल पदाधिकारी संजीव कुमार ने कहा कि महादलित समाज को आगे बढ़ाने के लिए इस टूर्नामेंट का आयोजन एक सार्थक प्रयास है। इस तरह के आयोजन से इन महादलित प्रतिभगियों को समाज के अन्य समूहों से मिलने, उनका रहन-सहन जानने एवं अपनी क्षमता का आंकलन कर समाज के मुख्य धारा में शामिल होने का प्रयास करेंगे। नई आशा द्वारा इस समाज के सर्वांगीण विकास के लिए चैमुखी कार्य किए जाते हैं, जिसमें जिला प्रशासन का भरपुर सहयोग होता है। इनका खेल देखने से प्रतीत होता है कि उनके भीतर क्षमता की कमी नहीं है सिर्फ अवसर और प्रशिक्षण की आवश्यकता है। उन्होंने सभी खिलाड़ियों से अपने समाज में शिक्षा के लिए जागरूकता अभियान चलाने की अपील की। श्री कुमार द्वारा मुसहर जाति के बीच शिक्षा का प्रचार-प्रसार के लिए, सभी खिलाड़ियों को शपथ भी दिलवाया गया। विशिष्ट अतिथि नगर पंचायत बिहिया के मुख्य पार्षद सचिन कुमार गुप्ता ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उन्हें प्रोत्साहित किया। अध्यक्षता नई आशा के डॉ भीम सिंह भवेश ने किया। मौके पर पूर्व खिलाड़ी जय कुमार सिंह, धनजी कुमार, भोला मिश्र, पचन जी, राम बाबू सिंह, आदित्य एवं रोहित आदि थे। आज का क्वार्टर फाइनल मैच में बिहिया ने ढकाईच को 01 गोल से पेनाल्टी में हराया। जबकि पसौर ने कटरिया को 1-0 से, चिलहर ने कटरिया को 2-0 से तथा अलीपुर ने बभनी को 2-0 से हराया। कल का सेमिफाईनल मैच 10 बजे से बिहिया बनाम चिलहर एवं अलीपुर बनाम पसौर के बीच खेला जाएगा। फाईनल मैच 2 बजे से खेला जाएगा।

# बिजली विभाग की उदासीनता से अंधेरे में डूबा है गिद्धौर का गेनाडीह गांव

प्रातः किरण संवादददाता



■ खराब ट्रांसफार्मर के कारण बीते एक सप्ताह से बिजली की समस्या झेल रहे गेनाडीह वार्ड 06 के वार्ड वासी

गिद्धौर। इन दिनों बिजली विभाग के कर्मियों एवं पदाधिकारियों के उदासीन रवैये से कुंधुर पंचायत के गेनाडीह गांव के वार्ड 06 वासी विद्युत समस्या से खासा परेशान है। बताते चलें कि प्रखंड के कुंधुर पंचायत अंतर्गत पड़नेवाले गेनाडीह गांव में बीते एक सप्ताह से विद्युत ट्रांसफॉर्मर जल जाने से पूरा इलाका अंधेरे में डूबा हुआ है। सघन आबादी वाले इस गांव में ट्रांसफार्मर जल जाने के कारण लोगों को इस भीषण शीतलहर में रोजमर्रा से जुड़ी विद्युत आवश्यकताओं की पूर्ति को ले काफी जहमत उठानी पड़ रही है,

वहीं खेती किसानी में भी परेशानी का सामना ग्रामीण विद्युत उपभोक्ताओं को करना पड़ रहा है। बिना बिजली के लोग कई दिनों से अंधेरे में रात बिताने को विवश हैं।वहीं अंधेरे के कारण गांव में चोरी का भी खतरा ग्रामीणों के समक्ष बना हुआ है। स्थिति यह है कि गिद्धौर विद्युत विभाग के पावर सब स्टेशन के जेई इस गांव के ग्रामीणों की समस्या के निदान को ले तत्परता नहीं दिखा रहे हैं। इधर गेनाडीह गांव में विद्युत समस्या झेल रहे वार्ड 06 के ग्रामीण उमाशंकर रावत, नीतीश कुमार, मिथुन कुमार, मनोज मंडल, रवीन्द्र मंडल, टिंकू मंडल, मीना देवी, निर्मला देवी, कलावती देवी सहित दर्जनों ग्रामीणों ने बताया है कि यहां के ट्रांसफार्मर की स्थिति कई महीनों से जर्जर बनी हुई थी। ट्रांसफॉर्मर पर विधुत का अधिक भार होने से ट्रांसफार्मर ओवरलोड के कारण जल गया।लेकिन विभागीय स्तर पर इस जले हुए ट्रांसफार्मर को बदलने को ले अब तक अधिकारी एवं कर्मी गंभीर नहीं दिख रहे हैं। बिजली की समस्या झेल रहे ग्रामीणों ने यहां जर्जर ट्रांसफार्मर को बदल कर बड़ा ट्रांसफार्मर लगाने की मांग विभाग से की है।इधर विद्युत समस्या को लेकर गेनाडीह गांव के वार्ड 06 के वार्ड सदस्य सूरज कुमार प्रताप ने बताया कि विद्युत विभाग को हम ग्रामीणों के द्वारा खराब ट्रांसफार्मर के ठीक करवाने को ले सूचना दी गयी है, लेकिन व्यवस्था को अब तक बहाल नही करवाया जा सका है। इधर इधर इस संदर्भ में खराब टांसफार्मर के बदलने एवं गेनाडीह गांव में विद्युत व्यवस्था बहाल करने की सूचना विद्युत विभाग के एसडीओ लोकनाथ कुमार को भी दी गयी है।

## आईसीडीएस एंव वन स्टॉप सेंटर की समीक्षात्मक बैठक का किया गया आयोजन

मधेपुरा। जिला मुख्यालय स्थित न्यू एन आई सी हाल में शनिवार को आईसीडीएस एंव वन स्टॉप सेंटर की समीक्षात्मक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जिला प्रोग्राम पदाधिकारी, मधेपुरा द्वारा आईसीडीएस अंतर्गत संचालित सभी कार्यों की समीक्षा की गई। जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, मनरेगा, मधेपुरा द्वारा बताया गया कि 59 आंगनबाड़ी केंद्रों का भवन निर्माण कार्य प्रारंभ है, जिसे शीघ्र पूर्ण कर लिया जाएगा। पी एच ई डी के कार्यपालक अभियंता द्वारा बताया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित 2180 आंगनबाड़ी केंद्रों के विरुद्ध 1661 आंगनबाड़ी केंद्रों में नल जल का कनेक्शन लगा दिया गया है। शेष आंगनबाड़ी केंद्र पर शीघ्र ही नल जल का कनेक्शन कर दिया जाएगा। सभी बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, मधेपुरा को अंचल अधिकारी से समन्वय स्थापित करते हुए भूमि का एनओसी प्राप्त करने का निर्देश दिया गया। साथ ही पोषण ट्रैकर के सभी इंडिकेटर में डाटा अपलोड का भी निर्देश दिया गया ।

## आंगनवाड़ी केन्द्र पर टीकाकरण की जांच सोमवार से: प्रभारी

बरियारपुर (मुंगेर)। बरियारपुर पीएचसी में एएनएम दीदीयों के मासिक बैठक का आयोजन हुआ। बैठक की अध्यक्षता प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. विजय कुमार ने की। इस अवसर पर प्रखंड के सभी एएनएम दीदीयों को सख्त हिदायत देते हुए कहा गया कि शत प्रतिशत बच्चों का टीकाकरण होना चाहिए। एक भी बच्चे टीकाकरण से वंचित नहीं रहे। प्रभारी ने कहा कि डीआईसी महोदय ने सख्त आदेश जारी किया है। टीकाकरण से कोई बच्चे छूटे नहीं इसका हिदायत दिया गया है। उन्होंने बताया कि किसी भी आंगनबाड़ी केन्द्र से बच्चों को टीकाकरण से कोताही बदर्शत नहीं की जायेगी। प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. विजय कुमार ने कहा सोमवार से विशेष कैम्प के द्वारा सभी चिन्हित आंगनवाड़ी केन्द्र की समीक्षा और जांच की जायेगी।

## 60 हजार रुपया वापस मांगना पड़ा महंगा, नशे के सौदागर एक दोस्त ने की अपने हीं दोस्त की हत्या

प्रातः किरण संवाददाता



मधेपुरा। नशे के सौदागर एक दोस्त ने अपने हीं दोस्त की रुपयों के लेनदेन में हत्या कर दी। जहां मामले की तफ्तीश में जुटी पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। दरअसल मामला जिले के गम्हरिया थाना क्षेत्र के हरिद्वार टोला से जुडा है। बता दें कि मधेपुरा के भेलवा नहर किनारे शुक्रवार की रात एक युवक का शव एक झारी से बरामद हुआ। सदर थाने की पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर सदर अस्पताल पोस्टमार्टम हाउस में रखवाया। शव को देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि चाकू गोद कर युवक की हत्या की गई है। मृतक युवक की पहचान गम्हरिया थाना क्षेत्र के हरिद्वार टोला वार्ड संख्या 3 निवासी संजय भगत के 21 वर्षीय पुत्र राजदीप कुमार उर्फ बाबू साहब के रूप में हुई। परिजनो के मुताविक राजदीप की हत्या रुपए की लेनदेन में की गयी है। मृत युवक के मौसा बमशंकर भगत ने बताया कि राजदीप ने पड़ोस में रहने वाले एक शिवम कुमार नामक दोस्त को एक महीना पहले 60 हजार रुपए दिए थे। लेकिन कुछ दिनों में वह रुपए वापस कर देने की बात कही थी, लेकिन वह रुपए वापस नहीं कर रहा था। रुपए वापस करने के लिए जब राजदीप ने अधिक दबाव बनाया तो बीते गुरुवार की शाम यानी 26 दिसम्बर को शिवम ने राजदीप को अपने घर के बाहर बुलाया और अपने बाइक पर बैठा कर ले गया। फिर दोस्तों के साथ मिलकर उसकी हत्या कर दी।

साथ हीं शव को ठिकाने लगाने हेतु मधेपुरा सदर थाना क्षेत्र के भेलवा रतनपुरा मुख्य मार्ग के एक झाड़ी में फेंक कर फरार हो गए, हालांकि परिजन लगातार राजदीप के तलाश में इधर उधर भटक रहे थे इतना हीं नहीं परिजन को शिवम् पर पूर्व से संदेह भी था, वहीं घटना को लेकर जाँच मे जुटी पुलिस आरोपी शिवम् को गिरफ्तार कर लिया है। बहरहाल गम्हरिया थाना में आरोपी शिवम् से गहन पूछताछ चल रही है। मृतक परिजन की माने तो आरोपी शिवम नशे के सौदागर हैं। शराब, कोडिन कफ सिरप, स्मैक जैसे मादक पदार्थ का गौरख धंधा भी करता है, इस मामले में आरोपी शिवम कई बार जेल भी जा चूका है। वहीं इस मामले को लेकर मधेपुरा एसपी संदीप सिंह मामले की जाँच कर उचित कार्रवाई का भरोसा दिला रहे हैं।

## बीड़ी रणपाल पंचायत में हुआ जदयू की पंचायत स्तरीय बैठक, कार्रकारिणी सदस्य का किया भौतिक सत्यापन

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। बिहारीगंज विधानसभा क्षेत्र के बीड़ी रणपाल पंचायत में जदयू की पंचायत स्तरीय बैठक शनिवार को आयोजित हुई। बैठक कि अध्यक्षता उदाकिशुनगंज जदयू के प्रखंड अध्यक्ष प्रदीप कुमार मंडल ने किया। बैठक में पंचायत स्तरीय कार्यकारिणी सदस्य का भौतिक सत्यापन के साथ गत बैठक का समीक्षा किया गया। बैठक में पार्टी नेताओं ने एक स्वर में पार्टी-संगठन को बूथ स्तर पर मजबूत करने का आह्वान किया। बैठक को संबोधित करते हुए बिहारीगंज विधानसभा प्रभारी अच्छे झा ने कहा कि संगठन को सबल, सुदृढ़ व धारदार बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार का चहुंमुखी विकास हुआ है। आज बिहार के विकास की चर्चा पूरे देश में है। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता पार्टी की रीढ होती है। जदयू प्रखंड अध्यक्ष प्रदीप कुमार मंडल ने पार्टी के कार्यकताओं को पंचायत से बूथ कमेटी को सशक्त बनाने पर विशेष ध्यान देने की बात कही, साथ ही कहा कि सरकार के कार्यों और सभी योजनाओं की जानकारी हर घर तक पहुंचाएं। मौके पर जदयू नेता राजकुमार शाह, देवनारायण राम, नितेश यादव, अजय मंडल, राजीव कुमार, शंभू मंडल, योगेंद्र मुखिया, रामविलास मंडल, सतनारायण मंडल, खुशी लाल मंडल, कैलाश शर्मा, सुधीर भगत, इतवारी मंडल सहित अन्य लोग मौजूद थे।

## सात दिवसीय टूनार्मेंट के सेमी फाइनल में लालपुर युवा क्लब ने 2 रन से जीत दर्ज कर फाइनल में किया प्रवेश

शंकरपुर (मधेपुरा)। शंकरपुर प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत सुदूर गांव रायभीर में आयोजित सात दिवसीय टूनामेंट के सेमी फाइनल मैच का शुभारंभ एमएस इडियल पब्लिक स्कूल के प्रिंसिपल मिथिलेश दास एवं डायरेक्टर समद हाशमी के द्वारा संयुक्त रूप से फीता काट कर किया गया। यह आरकेसीसी क्रिकेट क्लब रायभीर के द्वारा 20 ओवर का लिग मैच का खेल कराया जा रहा है। मिथिलेश दास ने खिलाड़ियों का हौसला जाहिर करते हुए कहा मैच खेलने से शारीरिक ही नहीं बल्कि मानसिक क्षमता में भी वृद्धि होता है। उन्होंने कहा अब शुद्धरवर्ती इलाको में भी युवाओं खेलों से प्रवाहित हो रहे हैं। अगर इसी तरह से यह रहा तो इंडिया लेवल पर भी शुद्धरवर्ती इलाके के युवा खेल सकते हैं। एमएस इडियल पब्लिक स्कूल डायरेक्टर समद हाशमी ने अपील करते हुए कहा खेलों को शांतिपूर्ण वातावरण से खेले। साथ ही उन्होंने खिलाड़ियों को खेल को खेल की भावना से खेलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि टूनार्मेंट के आयोजन से अब इलाके की खिलाड़ियों में भी प्रतिभा निखारने का अवसर प्रदान होगा। इस महा मुकाबले में दमगड़ा ग्राम लालपुर युवा मैच क्लब के दोनों कप्तान के बीच एमएस इडियल पब्लिक स्कूल के प्रिंसिपल मिथिलेश दास ने टॉस कराया वहीं दमगाड़ा के टिम ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। जिसमें दमगड़ा युवा मैच क्लब के खिलाड़ियों द्वारा 20 ओवर के मैच खेला गया जहां 16 ओवर में ऑल आउट होते हुए कुल 93 रनों का लक्ष्य प्राप्त किया वहीं जवाब में लालपुर युवा क्लब के खिलाड़ियों ने 19 ओवर में ऑल आउट होते हुए कुल 95 रन बनाया। लालपुर के खिलाड़ियों ने अपने विपक्ष को 2 रनों से हराकर जीत हासिल किया। सात दिवसीय आयोजित मैच में लालपुर युवा क्लब के युवाओं द्वारा टी 20 टूनार्मेंट मैच अपने कब्ज में कर जीत हासिल कर फाइनल के लिए स्थान प्राप्त किया। मौके पर अभिषेक कुमार, सोहेल शेख, अमित दास, शिक्षक दुर्गेश दास, संजीत कुमार दास, रंजीत कुमार, भूपेन्द्र दास सहित अन्य ग्रामीण उपस्थित रहे।

## खेल प्रतियोगिता में रायभीर की बेटियों ने दिखाया जलवा, सम्मान समारोह का आयोजन कर किया गया सम्मानित

शंकरपुर (मधेपुरा)। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के अधिनियम संचालित नेहरू युवा केंद्र की ओर से शुक्रवार को सदर प्रखंड के सोनाय महराज खेल मैदान पर आयोजित दो दिवसीय प्रखंड स्तरीय प्रतियोगिता में रायभीर की बेटी ने जलवा दिखाई। पंचायत के ही खेल कोच के संस्थापक अंशु दास के द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। प्रखंड स्तरीय दौर व बैडमिंटन में शंकरपुर प्रखंड क्षेत्र के सुदूर गांव रायभीर वार्ड नंबर 8 निवासी बिपिन साह की पुत्री रानी कुमारी दौर में प्रथम स्थान एवं बैडमिंटन कबड्डी में द्वितीय स्थान प्राप्त कर माता पिता सहित समाज का नाम रोशन की। वहीं वार्ड नंबर 9 निवासी दीपनारायण दास की पुत्री निशा कुमारी बैडमिंटन में प्रथम स्थान एवं कबड्डी में द्वितीय स्थान प्राप्त की है।

इसी तरह बिपिन साह की पुत्री मौसम कुमारी, विभाष बर्मा की पुत्री लक्की कुमारी, अरविंद मलाकार की पुत्री अंशु कुमारी, अरुण शर्मा की पुत्री भारती कुमारी, जय कुमार बर्मा की पुत्री रिबानी कुमारी एवं भूपेन्द्र दास के पुत्र ओम कुमार सभी ने कबड्डी व बैडमिंटन में द्वितीय स्थान प्राप्त कर गुरुजन एवं अपने माता पिता सहित गांव समाज, जिला का नाम रोशन की है। मौके पर पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि सह पंचायती राज भाजपा के प्रकोष्ठ अध्यक्ष प्रभाष चौपाल के द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में विजेता बनी टीमों को फूल माला व अंग वस्त्र एवं नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुखिया प्रतिनिधि ने कहा कि खेल से मानसिक व शारीरिक विकास होता है।

# रचनात्मक बच्चे कभी बेरोजगार नहीं रह सकते : डॉ प्रेम मोहन मिश्रा

■ एमजीएसएस के वाजितपुर शाखा में विज्ञान, कला व शिल्प का प्रदर्शनी आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

दरभंगा। महात्मा गाँधी शिक्षण संस्थान के वाजितपुर शाखा में दोनों शाखाओं का विज्ञान, कला और शिल्प प्रदर्शनी का संयुक्त रूप से आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ प्रो प्रेम मोहन मिश्रा, निदेशक, महिला प्राद्यौगिकी संस्थान, दरभंगा; विशिष्ट अतिथि लेफ्टिनेंट डॉ ममता रानी, प्राध्यापक, भूगोल विभाग सह ए एन ओ, एन सी सी, नागेंद्र झा महिला महाविद्यालय, लहेरियासराय तथा डॉ मनीष कुमार प्रसाद, प्रख्यात फिजिशियन एवं मधुमेह रोग विशेषज्ञ, विद्यालय के निदेशक हीरा कुमार झा, प्राचार्या श्रावणी शिखा और वाजितपुर शाखा के प्राचार्य आलोक कांति दास ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। आगत अतिथियों का स्वागत निदेशक हीरा कुमार झा द्वारा मिथिला परंपरानुसार पाग, अंग वस्त्र, मोमेंटो और पौधा प्रदान कर किया गया।

अपने स्वागत उद्बोधन में बोलते हुए विद्यालय के निदेशक हीरा कुमार झा ने अतिथियों सहित सभी अभिभावकों, मीडिया के बंधुओं, विद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का अभिनन्दन किया। उन्होंने प्रदर्शनी के आयोजन पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को नित नए अनुसंधान की ओर बाल्यकाल से ही जागृत होना चाहिए। विशिष्ट अतिथि डॉ ममता रानी ने कहा कि आज बच्चों की सृजनात्मकता को देखते हुए मैं उन्हें नमन करती हूं।इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉ मनीष कुमार प्रसाद ने अपने संबोधन में कहा कि विज्ञान, कला और शिल्प कला जीवन में मिश्रित है और वर्त्तमान और भविष्य में इसका महत्वपूर्ण भागीदारी रहेगी। स्वास्थ्य पर चर्चा करते हुए विद्यार्थियों को मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने, मोबाईल से दूर रहने की सलाह दी।

मुख्य अतिथि डॉ प्रेम मोहन मिश्रा ने कहा कि आर्ट एवम् क्राफ्ट शिक्षा के साथ साथ एक खेल भी है। रचनात्मक बच्चे कभी बेरोजगार नहीं रह सकते। सफलता पाने वाले का उत्साहवर्धन होता है तो उससे वंचित को हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। बल्कि और अधिक मेहनत करनी चाहिए ताकि अगली बार सफल हो सकें। ऐसे कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्द्धा की भावना जगाना होता है।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्राचार्य श्रावणी शिखा ने कहा कि रचनात्मकता बच्चों के जीवन का भाग है। प्रदर्शन के आधार पर प्रथम, द्वितीय एवम् तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को मेडल, प्रमाण पत्र एवम् पुरस्कार प्रदान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन कुमारी सौम्या चौधरी ने किया वहीं धन्यवाद ज्ञापन प्राचार्य आलोक कांति दास ने किया।

## अनुसूचित जाति जन जाति निवारण को लेकर एसडीओ ने किया बैठक, दी गई कई जानकारियां



प्रातः किरण संवाददाता

शेरघाटी।प्रखंड कार्यालय के सभागार भवन में शनिवार को अनुसूचित जाति एवं जनजाति अत्याचार निवारण को लेकर अनुमंडल स्तरीय सतर्कता एवं अनुसरण समिति की बैठक एसडीओ की अध्यक्षता में हुई. बैठक में मौजूद सदस्यों को एससी एसटी एक्ट के बारे में विस्तृत जानकारी दिया गया. एसडीओ ने कहा कि एससी एसटी एक्ट की आवाज को दबाया जाता है, तो वैसे पीड़ित एसडीओ के पास आकर अपनी शिकायत कर सकते हैं. अगर किसी एससी एसटी एक्ट के परिवार के लोगों की आपसी रंजिश में हत्या हो गई, तो जीविका चलाने में अक्षम उनकी विधवा एफआईआर कॉपी लेकर आवे, उस आवेदन को जिला स्तरीय कमीटी को भेज दिया जाएगा. ताकि जीविका के लिए जिला स्तरीय टीम उसकी मदद कर सके.आपसी रंजिश के कारण हुई घटना के बाद भी थाना में मुकदमा दर्ज नहीं हो रहा हो तो अनुमंडल में आवेदन जमा कर सकते हैं. लेकिन यह ध्यान रहे केस गलत न हो. निर्दोष फंसाया नहीं जा रहा हो. इस मौके पर प्रखंड प्रमुख नरेश कुमार, उप मुख्य पार्षद तारकेश्वर उर्फ भोला चौधरी, जितेंद्र चौधरी के अनुमंडल कल्याण पदाधिकारी अमल किशोर आदि मौजूद रहे.

# बरनवाल समाज ने अपने जनक महाराजा अहिबरन की मनाई जयंती

प्रातः किरण संवाददाता

गया नगर बरनवाल सेवा समिति के द्वारा बरनवाल परिवार सम्मेलन सह बरनवाल अधिकार सम्मेलन का शुभारंभ बरनवाल समाज के आदिपुरुष महाराजा अहिबरन जी का पूजन , दीप प्रज्वलन एवं बरन पताका का झंडा तोलन हमारे समाज के प्रतिष्ठित समाज सेवी श्री नरसिंह बाबु के द्वारा किया गया है ।इस सम्मेलन के माध्यम से इस दो दिनों के लिए आजाद पार्क का नामकरण स्व० बजरंगी लाल , जो टेउसा, गया के रहने वाले थे एवं हमारे बरनवाल जाती रत्न से सम्मानित थे, उनकी स्मृति में वैद्य बजरंगी लाल बरनवाल नगर रखा गया है ।इस सम्मेलन के माध्यम से हमारे समाज के बच्चें, बच्चियों, महिलाओं एवं विवाहित जोड़ियों के द्वारा विभिन्न प्रतियोगिता के माध्यम से समाज के बीच अपना प्रतिभा का प्रदर्शन लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया है। इस प्रतियोगिता में समान्य ज्ञान में 39 बच्चे, चित्र कला में 35 बच्चे, भाषण प्रतियोगिता विद्यालय स्तर में 25 बच्चे, भाषण महा विद्यालय स्तर में 18 बच्चे, रंगोली प्रतियोगिता में 6 बच्चे एवं नृत्य में हमारे परिवार के 55 बच्चे, देवरानी जेठानी प्रतियोगिता में 24, सास बहु प्रतियोगिता में 26 और जोड़ी नम्बर 1 में 22 जोड़ो ने भाग लिया है।

इस प्रतियोगिता में भाषण का टॉपिक लव जिहाद जैसे दुर्गुण आदि जैसे टॉपिक रखा गया ताकि समाज मे इस गम्भीर विषय के प्रति लोगो को जागरूक कर दूर रखा जाए।

सभी प्रतियोगिताओं का प्रमाण कल रविवार को घोषित की जाएगी ।शाम में कोलकाता से आये प्रसिद्ध सोनू डांस ग्रुप के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के द्वारा लोगों को मनमोहक प्रस्तुति दी गयी है ।इस सम्मेलन के अध्यक्ष प्रेम प्रकाश पवन ने बताया कि ये सम्मेलन हर वर्ष होता रहा है, इस बार



ये सम्मेलन विगत 4 साल बाद हो रहा है जिस कारण लोगो के अंदर खुशी उत्साह का माहौल है ।इस मौके पे बिहार प्रदेश बरनवाल वैश्य महासभा के प्रदेश अध्यक्ष राजकुमार प्रसाद उर्फ राजु बरनवाल की भी उपस्थिति रही है। उन्होंने बताया कि हम बरनवाल लोग अब सिर्फ व्यापार में ही न होकर हर क्षेत्रो में अपनी परचम लहराते हुए आगे बढ़ रहे है, चाहे वो सिविल सर्विस में उतीर्ण होना हो , राजनीतिक क्षेत्र हो या शिक्षा जगत हो ।उन्होंने कहा कि प्रखंड एवं जिला स्तर पर बरनवाल अधिकार सम्मेलन का आयोजन हो रहा है ।और अगले एक या दो महीने में प्रदेश स्तर का महासम्मेलन पटना की धरती पर होगी ।सचिव राकेश कुमार ने बताया कि में यौधेय गण के प्रवर्तक एवं बरनवाल जाति के आदिपुरुष महाराजा अहिबरन जी की जयंती के अवसर पर आगामी 28 एवं 29 दिसम्बर 2024 दो दिन बरनवाल परिवार मिलन सह बरनवाल अधिकार सम्मेलन आजाद पार्क में जो आयोजित हो रही है उसमें 29 दिसम्बर दिन रविवार को बरनवाल समाज के द्वारा एक भव्य एवं दिव्य शोभायात्रा निकाला जाएगा जो आजाद पार्क से सुबह 9 बजे निकलकर गया शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए वापस आजाद पार्क पहुचेंगे ।उसके उपरांत उद्घाटन सत्र में अतिथि सम्मान, पुरस्कार वितरण, राजनैतिक चर्चा , एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति होगी ।इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी जी रहेंगे ।

अति विशिष्ट अतिथि के रूप में नगर विधायक एवं मंत्री बिहार सरकार डॉ प्रेम कुमार भी रहेंगे।

# पंच सरपंच संघ के राज्य स्तरीय महाबैठक पटना में आयोजित, लिए गए कई निर्णय

प्रातः किरण संवाददाता

पटना । बिहार प्रदेश पंच सरपंच संघ का राज्य स्तरीय महा बैठक का आयोजन बिहार राज पंचायत परिषद के सभागार में महाजुटान सह मुख्यमंत्री का घेराव धरना प्रदर्शन सभा करने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया।

बैठक में 11 सूत्री मांगों - स्थानीय निकाय के प्रतिनिधियों यथा पंच सरपंच, वार्ड सदस्य मुखिया, पंसस प्रमुख, जिला पार्षद सभापति को एमएलए एमपी एमएलसी मंत्री के तरह कम से कम पांचवीं हिस्सा सम्मानजनक पेंशन चालू करने, पंच सरपंच को एमएलसी चुनाव का वोटर बनाने, ग्राम कचहरी को सर्व सुविधा संपन्न कर सुदृढ़ सशक्त सुलभ बनाने, पिछले सत्र एवं वर्तमान सत्र का लंबित मानदेय जल्द भुगतान करने, प्रतिनिधियों को सुरक्षा की गारंटी देने, अमीन प्रहरी चपरासी न्याय मित्र न्याय सचिव कंप्यूटर ऑपरेटर आदि कर्मी बहाल करने, आदि मांग को पूरा करने का सरकार से अपील किया, अन्यथा 28 जनवरी 2025 के आहूत आंदोलन के बाद सामूहिक इस्तीफा




देने की चेतावनी दिया।

बैठक में पंच सरपंच संघ के प्रदेश अध्यक्ष अमोद कुमार निराला, मुखिया संघ के प्रदेश अध्यक्ष मिथिलेश राय, पंच सरपंच संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष सह खगड़िया जिला अध्यक्ष किरण देव यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष वशिष्ठ निषाद, प्रदेश संयोजक पुष्पेंद्र ठाकुर, महासचिव सुनील तिवारी, कोषाध्यक्ष मनीष , एवं पंचायत राज परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष परिमल सिंह आदि ने संबोधित किया।

कार्यक्रम को संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन किया गया तथा पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई एवं अमर रहे नारों को बुलंद किया गया।

कार्यक्रम में मुजफ्फरपुर जिला अध्यक्ष मनोज सिंह, सहरसा जिला अध्यक्ष विनोद यादव, मधेपुरा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र यादव, बांका जिला अध्यक्ष अमित दुबे, समस्तीपुर जिला अध्यक्ष महेश्वर राय सहित सभी 38 जिला के जिला अध्यक्ष प्रदेश पदाधिकारी गण ने संबोधित करते हुए एक जूटता का परिचय दिया तथा कहा कि पेंशन अविलंब चालू हो अन्यथा आंदोलन तेज किया जाएगा , जिसका जिम्मेदार शासन प्रशासन होगा।

प्रहरी संघ के भागवत एवं मुखिया संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष अरुण, गीतांजलि कुमारी, रीमा भारती, लाल बहादुर साह, वीरेंद्र यादव सहित अन्य सैकड़ों प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

उपस्थित सभी गणमान्य सदस्यों को माला पहनकर स्वागत किया गया।

प्रदेश अध्यक्ष अमोद निराला के निदेर्शालोक में प्रदेश उपाध्यक्ष किरण देव यादव द्वारा मुंगेर जिला संयोजक राकेश रंजन एवं सह संयोजक सन्नी यादव को मनोनीत किया गया।

# मेलबर्न में भारतीय टीम की शानदार वापसी

## ऑस्ट्रेलिया के 474 रन के जवाब में बनाए 358/9, नीतीश का शतक

**मेलबर्न (एजेंसी)।** मेलबर्न में जारी बॉक्सिंग डे टेस्ट के तीसरे दिन का खेल खत्म हो चुका है। टीम इंडिया ने इस मैच में जबरदस्त वापसी की है और खेल खत्म होने तक अपनी पहली पारी में नौ विकेट गंवाकर 358 रन बना लिए हैं। ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 474 रन बनाए थे। इस लिहाज से भारत अभी भी 116 रन पीछे है। नीतीश रेड्डी ने बेहतरीन शतक जड़ा। वह फिलहाल 105 रन बनाकर नाबाद हैं। उन्होंने अब तक 176 गेंद की अपनी पारी में 10 चौके और एक छक्का लगाया है।

## शतक के बाद पिता के सामने बाहुबली अंदाज, फ्लावर नहीं फायर हैं नीतीश रेड्डी..

### भारत ने तीसरे दिन 194 रन जोड़े

भारत ने शनिवार को पांच विकेट पर 164 रन से आगे खेलना शुरू किया और 194 रन जोड़े। इस दौरान भारत ने चार और विकेट गंवाए। शनिवार को ऋषभ पंत, रवींद्र जडेजा, जसप्रीत बुमराह और वॉशिंगटन सुंदर आउट हुए। नीतीश ने नौवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे वॉशिंगटन सुंदर के साथ आठवें विकेट के लिए 127 रन की साझेदारी निभाई। सुंदर और नीतीश दोनों ने 150-150 गेंद खेलीं।टेस्ट क्रिकेट में ऐसा पहली बार हुआ जब किसी टीम के आठवें और नौवें नंबर के बल्लेबाज ने 150+ गेंदें खेली हों। दोनों ने संयुक्त रूप से 285 गेंदें खेलीं यानी करीब 48 ओवर बल्लेबाजी की। सुंदर 162 गेंद में एक चौके की मदद से 50 रन बनाकर आउट हुए। इससे पहले यशस्वी जायसवाल 82 रन, रोहित शर्मा तीन, केएल राहुल 24 रन, विराट कोहली 36 रन और ऋषभ पंत 28 रन और रवींद्र जडेजा 17 रन बनाकर आउट हुए थे। जसप्रीत बुमराह और आकाश दीप खाता नहीं खोल सके।

### नीतीश रेड्डी का पहला अंतरराष्ट्रीय शतक

नीतीश ने 171 गेंद में बोलैंड की गेंद पर चौका लगाकर शतक लगाया। यह उनके अंतरराष्ट्रीय करियर का पहला शतक है। उन्होंने टेस्ट में पहली बार पचास से ज्यादा रन बनाए और उस पारी को शतक में बदल दिया। नीतीश इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट में शतक लगाने वाले तीसरे सबसे युवा भारतीय बन गए हैं। उनसे आगे सिर्फ सचिन तेंदुलकर और ऋषभ पंत हैं। नीतीश के लिए यह शतक इसलिए भी खास है क्योंकि उनके पिता मुतयाला रेड्डी दर्शक दीर्घा में मौजूद हैं और यह मैच देख रहे हैं। अपने पिता के सामने शतक लगाने के बाद नीतीश भावुक भी हो गए।

### दोनों टीमें एक-एक बदलाव के साथ उतरीं

इस मैच के लिए दोनों टीमों में एक-एक बदलाव हुआ था। ऑस्ट्रेलिया ने जोश हेजलवुड की जगह स्कॉट बोलैंड और भारत ने शुभमन गिल की जगह वॉशिंगटन सुंदर को मौका दिया। कंगारुओं की शुरुआत अच्छी रही थी और 19 साल के डेब्यूटांट सैम कोंस्टास ने उस्मान ख्वाजा के साथ पहले विकेट के लिए 89 रन की साझेदारी निभाई। कोंस्टास ने अपने डेब्यू मैच में ही आक्रामक बल्लेबाजी की और बुमराह को निशाने पर लिया। उन्होंने अर्धशतक जमाया। हालांकि, इसके बाद रवींद्र जडेजा की गेंद पर एल्बीडब्ल्यू आउट हो गए। कोंस्टास 65 गेंद में छह चौके और दो छक्के की मदद स 60 रन बनाकर आउट हुए।

● **ख्वाजा-लाबुशेन ने अर्धशतक लगाया** - इसके बाद ख्वाजा ने स्टीव स्मिथ के साथ दूसरे विकेट के लिए 65 रन की साझेदारी निभाई। ख्वाजा ने टेस्ट करियर का 27वां अर्धशतक लगाया। वह 121 गेंद में छह चौके की मदद से 57 रन बनाकर बुमराह की गेंद पर आउट हुए। वहीं, हेड खाता नहीं खोल सके। उन्हें बुमराह ने क्लीन बोल्ड किया। बुमराह ने फिर मिचेल मार्श को भी सस्ते में निपटा दिया। वह चार रन बना सके। लाबुशेन ने 145 गेंद में सात चौके की मदद से 72 रन की पारी खेली। यह उनके टेस्ट करियर का 22वां अर्धशतक रहा।

### ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी

ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 474 रन पर समाप्त हुई। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए ऑस्ट्रेलिया के लिए शुरुआती तीन बल्लेबाजों ने अर्धशतक जड़े। इसके बाद स्टीव स्मिथ ने टेस्ट करियर का 34वां शतक लगाया। कप्तान पैट कमिंस ने 49 रन की पारी खेली। दूसरे दिन ऑस्ट्रेलिया ने छह विकेट पर 311 रन से आगे खेलना शुरू किया। हालांकि, भारतीय गेंदबाजों को दूसरे दिन चार विकेट के लिए काफी मेहनत करनी पड़ी। ऑस्ट्रेलिया ने शुक्रवार को 163 रन जोड़े और चार विकेट गंवाए। स्मिथ 140 रन बनाकर आउट हुए। भारत के लिए जसप्रीत बुमराह ने सबसे ज्यादा चार विकेट लिए। वहीं, रवींद्र जडेजा को तीन विकेट मिले। आकाश दीप को दो विकेट मिले, जबकि सुंदर ने एक विकेट लिया।

● **स्टीव स्मिथ ने 34वां टेस्ट शतक जड़ा** - स्टीव स्मिथ ने गाबा के बाद मेलबर्न टेस्ट में भी शतक जड़ा। उन्होंने टेस्ट करियर का 34वां शतक जड़ा। स्मिथ ने शानदार बल्लेबाजी की। यह भारत के खिलाफ टेस्ट में उनका 11वां शतक रहा और वह टीम इंडिया के खिलाफ सबसे ज्यादा टेस्ट शतक लगाने वाले बल्लेबाज भी बन गए। कमिंस ने स्मिथ के साथ सातवें विकेट के लिए 112 रन की साझेदारी निभाई। कमिंस के साथ-साथ जडेजा ने मिचेल स्टार्क को क्लीन बोल्ड किया। स्टार्क 15 रन बना सके।

### दोनों टीमों की प्लेइंग-11

● **भारत :** रोहित शर्मा (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, नीतीश रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर, आकाश दीप, जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज।
● **ऑस्ट्रेलिया :** उस्मान ख्वाजा, सैम कोंस्टास, मार्नस लाबुशेन, स्टीव स्मिथ, ट्रेविस हेड, मिचेल मार्श, एलेक्स कैरी (विकेटकीपर), पैट कमिंस (कप्तान), मिचेल स्टार्क, नाथन लियोन और स्कॉट बोलैंड।

## नीतीश के शतक से पहले काफी चिंतित थे पिता मुतयाला रेड्डी

● **बोले - यह हमारे परिवार के लिए खास अहसास**

भारतीय टीम के ऑलराउंडर नीतीश रेड्डी ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चौथे टेस्ट मैच के तीसरे दिन पहली पारी में शतक जड़ा और भारतीय टीम को मुश्किल से उबारा। पर्थ टेस्ट से डेब्यू करने वाले नीतीश का इस प्रारूप में यह पहला सैकड़ा है। नीतीश ने जब शतक जड़ा तो दर्शक दीर्घा में उनके पिता मुतयाला रेड्डी मौजूद थे जो अपनी खुशी छिपा नहीं सके। मुतयाला ने कहा कि जब नीतीश शतक के करीब थे, उस वक्त भारत का सिर्फ एक विकेट शेष था और वह इससे चिंतित हो गए थे कि नीतीश ऐसा कर सकेंगे या नहीं। नीतीश के लिए यह शतक इसलिए भी खास है क्योंकि उनके पिता मुतयाला रेड्डी दर्शक दीर्घा में मौजूद रहे। अपने पिता के सामने शतक लगाने के बाद नीतीश भावुक भी हो गए।

### नीतीश रेड्डी है स्टार क्रिकेटर

## सुनील गावस्कर, शास्त्री बोले- उन्हें ऊपर भेजा जाए

महान क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने नीतीश कुमार रेड्डी को भारतीय क्रिकेट का स्टार करार दिया। नीतीश ने मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चल रहे चौथे टेस्ट में अपना पहला टेस्ट शतक जमाकर टीम को मुश्किल स्थिति से उबारा था। बल्लेबाजी ऑलराउंडर तीसरे दिन स्टंप्स तक 105 रन बनाकर नाबाद पवेलियन लौटे। उन्होंने वाशिंगटन सुंदर के साथ 8वें विकेट के लिए 127 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी भी की। ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 474 बनाए थे। जवाब में भारतीय टीम 385/9 रन बना चुकी है। रेड्डी ने शतक लगाकर भारत ने फॉलो-ऑन के खतरे को टाल दिया है। उनका प्रदर्शन देखकर भारत के पूर्व मुख्य कोच और हरफनमौला खिलाड़ी रवि शास्त्री ने टीम इंडिया प्रबंधन से उन्हें ऊपरी क्रम पर बल्लेबाजी देने की मांग की है ।गावस्कर ने कहा कि वह भारतीय क्रिकेट के स्टार हैं। यह पहला टेस्ट शतक है और वह निकट भविष्य में और भी शतक बनाने जा रहा है। मैं भविष्य में उसे रनों के बीच देखने की उम्मीद कर रहा हूं।

## सस्ते में आउट होने के कारण ऋषभ पंत पर भड़के सुनील गावस्कर, बोले - बेवकूफी भरा शॉट खेला

**मेलबर्न (एजेंसी)।** भारतीय टीम के पूर्व दिग्गज बल्लेबाज सुनील गावस्कर भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत पर भड़क गए। पंत ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चौथे टेस्ट मैच के तीसरे दिन पहली पारी में सस्ते पर आउट हुए। इस पर गावस्कर को काफी गुस्सा आया और उन्होंने कमेंट्री करने के दौरान पंत को बेवकूफ तक कह दिया। पंत को बोलैंड ने लियोन के हाथों कैच कराया। पंत 28 रन बना सके।

**शुरुआत से ही घबराए हुए दिखे पंत** - पंत जब आउट हुए उस वक्त भारत मुश्किल स्थिति से गुजर रहा था और उन्होंने बोलैंड की गेंद पर स्कूप शॉट खेला जिस पर कई प्रशंसक और विशेषज्ञों ने सवाल खड़े किए हैं। गावस्कर भी इसलिए पंत पर गुस्सा हुए और उन्होंने इस बल्लेबाज के लिए कठिन शब्दों का प्रयोग किया। पंत तीसरे दिन शुरुआत से ही घबराए हुए लग रहे थे और वह दो बार आउट होने से बचे थे। पंत ने बोलैंड की फूल लैंथ गेंद पर विकेटकीपर के पीछे स्कूप शॉट खेलने का फैसला किया और गेंद बल्ले से ठीक से लगी नहीं और थर्ड मैन पर खड़े फील्डर ने कैच लेकर उन्हें आउट किया।

● **यह विकेट गंवाने जैसा शॉट** - जैसे ही पंत आउट हुए गावस्कर गुस्से से बौखला गए और उन्होंने कहा, बेवकूफ, बेवकूफ, बेवकूफ... वहां पहले से ही दो फील्डर तैनात हैं और इसके बाद भी आपने यह शॉट खेलने का फैसला किया। आपने पिछला शॉट मिस किया था और देखें कि कहां कैच आउट हुए। यह तो अपना विकेट गंवाना जैसा है। वो भी तब जब टीम इन हालात में है। हालात को भी समझना चाहिए था। आप यह नहीं कह सकते कि यह आपका स्वाभाविक खेल है। यह आपका स्वाभाविक खेल नहीं है। यह बेवकूफाना शॉट था। आपने टीम को निराश किया है। उसे ड्रेसिंग रूम में नहीं जाना चाहिए। पंत को दूसरे ड्रेसिंग रूम में जाना चाहिए।

## श्रीलंका ने आखिरी 40 गेंदों में गंवाए 8 विकेट, न्यूजीलैंड से जीता मुकाबला गंवाया

**माउंट माउंगानुई (एजेंसी)।** माउंट माउंगानुई के बे ओवल के मैदान पर कई उतार-चढ़ाव भरे मैच में आखिरकार न्यूजीलैंड की टीम श्रीलंका के खिलाफ पहला टी20 मुकाबला जीतने में सफल रही। न्यूजीलैंड की टीम ने पहले खेलते हुए 20 ओवरों में डेरिल मिचेल के 62 तो माइकल ब्रेसवेल के 59 रनों की बदौलत 172 रन बनाए थे। जवाब में खेलने उतरी श्रीलंकाई टीम एक समय 121 रन पर एक विकेट गंवाकर खेल रही थी। लेकिन कीवी गेंदबाज जैकब डफी ने एक ही ओवर में तीन विकेट लेकर श्रीलंका की लय बिगाड़ दी। श्रीलंकाई बल्लेबाजों पर ऐसा दबाव बनाया कि उन्होंने आखिरी 40 गेंदों में ही 8 विकेट गंवा दिए। इस तरह न्यूजीलैंड ने यह मुकाबला 8 रन से अपने नाम कर लिया।

### न्यूजीलैंड: 172-8 (20 ओवर)

कीवी टीम को ओपनिंग पर आए टिम रॉबिन्सन 11 और रचिन रवींद्र 8 अच्छी शुरूआत नहीं दे पाए। चैपमैन 15 तो ग्लेन फिलिप्स 8 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। स्कोर जब 65 रन पर पांच विकेट हो चुका था तब डेरिल मिचेल ने माइकल ब्रेसवेल ने 100 से ज्यादा की पार्टनरशिप की और स्कोर 172 तक ले गए। मिचेल ने 42 गेंदों पर 62 तो ब्रेसवेल ने 33 गेंदों पर 4 चौके और 4 छक्कों की मदद से 59 रन बनाए।

### श्रीलंका: 164-8 (20 ओवर)

पाथुम निसांका और कुसल मेंडिस ने अपनी टीम को अच्छी शुरूआत दी और पहले विकेट के लिए 121 रन जोड़े। निसांका 60 गेंदों पर 7 चौके और तीन छक्कों की मदद से 90 तो कुसल मेंडिस ने 36 गेंदों पर 6 चौके और 1 छक्के की मदद से 46 रन बनाए। इसके बाद श्रीलंका ने लगातार विकेट गंवाए। कुल परेरा, कुमांदु मेंडिस खाता नहीं खोल पाए। पुछले बल्लेबाज स्कोर 164 तक ही ले जा सके जिससे श्रीलंका को 8 रन से हार झेलनी पड़ी।

मैच जीतकर न्यूजीलैंड के कप्तान मिशेल सैंटनर ने कहा कि ऐसा लग रहा था कि नई गेंद में कुछ कमी थी। उनके बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ने अच्छी गेंदबाजी की। एक बार जब गेंद पुरानी हो गई तो यह थोड़ा बेहतर हो गई। जब आप क्लंप में विकेट खोते हैं तो यह थोड़ा कठिन होता है। हमें पता था कि दूसरी पारी के लिए हमारे पास थोड़ी गति है। उनके सलामी बल्लेबाजों ने वास्तव में अच्छा खेला। मैच गंवाने के बाद श्रीलंकाई कप्तान चरित असालंका ने कहा कि परिणाम से बहुत निराश हूं, हमें वास्तव में बेहतर प्रदर्शन करना चाहिए था। सलामी बल्लेबाजों ने वास्तव में अच्छी बल्लेबाजी की। हमें उम्मीद है कि हम अच्छी वापसी करेंगे। मैंने सोचा कि हम गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण में थोड़ा बेहतर कर सकते थे। वापसी करना चाहता हूं और अगले गेम में वास्तव में अच्छा प्रदर्शन करना चाहता हूं।

### दोनों टीमों की प्लेइंग 11

● **श्रीलंका** - पथुम निसांका, कुसल मेंडिस (विकेटकीपर), कुसल परेरा, कामिंदु मेंडिस, चैरिथ असलांका (कप्तान), भानुका राजपक्षे, वानिंदु हसरंगा, बिनुरा फर्नांडो, महीश थीक्षाना, मथीशा पथिराना, नुवान तुषारा
● **न्यूजीलैंड** - टिम रॉबिन्सन, रचिन रवींद्र, डेरिल मिशेल, मार्क चैपमैन, ग्लेन फिलिप्स, माइकल ब्रेसवेल, मिशेल हे (विकेटकीपर), मिशेल सेंटनर (कप्तान), मैट हेनरी, जैकरी फॉल्क्स, जैकब डफी

## रोहित शर्मा की ओपनिंग पर उखड़े संजय मांजरेकर, कही यह बातें

**मेलबर्न (एजेंसी)।** भारत के पूर्व क्रिकेटर संजय मांजरेकर ने मध्यक्रम में खराब प्रदर्शन के बाद कप्तान रोहित शर्मा के ओपनिंग करने के फैसले की आलोचना की है। उन्होंने साफ कहा कि भारतीय क्रिकेट के साथ यह सबसे बड़ा मुद्दा है कि वह बड़े खिलाड़ी फार्म में आ जाएं, यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। रोहित बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में अब तक तीन पारियों में सिर्फ 19 रन बना पाए हैं। वह ओपनिंग पर आए लेकिन 4 ही रन बनाकर पवेलियन लौट गए।

मांजरेकर ने कहा कि एक मुद्दा जो भारतीय क्रिकेट संस्कृति मार्क से गहराई से जुड़ा हुआ है, वह यह है कि... भारत में वे सभी प्रतिष्ठित

खिलाड़ी, रनों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। फिर हम सुनिश्चित करने के लिए उन्हें ऊपर भेज देते हैं कि वह शायद फॉर्म में वापस आ जाए। हम प्रतिष्ठित खिलाड़ियों को सर्वोत्तम प्रकार का मंच या अवसर देने के लिए सभी प्रकार के समायोजन करते हैं। ऐसी स्थिति जहां केएल राहुल दोनों टीमों के लिए सर्वश्रेष्ठ सलामी बल्लेबाज हैं, को पद से हटा दिया गया। उन्हें नंबर 3 पर बल्लेबाजी करने के लिए उतारा गया ताकि रोहित शर्मा को फॉर्म में आने का मौका दिया जा सके।

उन्होंने कहा कि केएल राहुल ओपनिंग पर बहुत अच्छे रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया में ओपनिंग करना आसान नहीं है। जयसवाल और केएल राहुल ने ऑस्ट्रेलिया में भारत के लिए रिकॉर्ड साझेदारी की थी, लेकिन भारत एक बड़े नाम वाले खिलाड़ी को सफल बनाने के लिए उस साझेदारी को तोड़कर काफी खुश है।

## जसप्रीत बुमराह का दावा- 12 गेंदों में 6 बार कोंस्टास का विकेट लेने से चूका

**मेलबर्न (एजेंसी)।** आस्ट्रेलिया के 19 वर्ष के नए बल्लेबाज सैम कोंस्टास ने भले ही उनके स्पैल में दो छक्के लगाए लेकिन भारत के चैम्पियन तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने शनिवार को कहा कि उन्हें कभी लगा नहीं कि वह विकेट से दूर हैं। बुमराह ने कहा कि चौथे टेस्ट के पहले दिन कोंस्टास से रोचक मुकाबला रहा। उन्होंने कहा कि वह पहले 2 ओवर में छह सात बार ऐसे मौके बने जब वह उसे आउट कर सकते थे। कोंस्टास ने 65 गेंद में 62 रन बनाए और बुमराह को 2 छक्के भी जड़े। टेस्ट क्रिकेट में तीन साल में पहली बार किसी बल्लेबाज ने बुमराह की गेंद पर छक्का लगाया।

बुमराह ने कहा कि मैं चीजों को उस तरह से नहीं देखता। मैं अच्छी गेंदबाजी कर रहा हूं और नतीजे मेरे पक्ष में है लेकिन अलग अलग जगहों पर मैंने बेहतर गेंदबाजी की है। क्रिकेट में यही होता है कि कई बार आपको विकेट मिलते हैं लेकिन कई बार अच्छी गेंदबाजी करने पर भी विकेट नहीं मिलते। सब कुछ बराबर चलता है। उन्होंने कहा कि मैंने 12 साल से अधिक टी20 क्रिकेट खेला है और इसका अच्छा खासा अनुभव है।

बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में इस साल अब तक 24 विकेट ले चुके बुमराह ने कहा कि रोचक बल्लेबाज (कोंस्टास)। मुझे लगा नहीं कि मैं विकेट से दूर हूं। शुरू में मुझे लगा कि पहले दो ओवर में छह सात बार उसे आउट कर सकता हूं लेकिन क्रिकेट में ऐसा ही होता है। कई बार विकेट मिल जाती है और जब नहीं मिलती तो आप उसी व्यक्ति की आलोचना करते हैं। उन्होंने कहा कि मुझे नई चुनौतियों का सामना करना पसंद है।

## केविन पीटरसन ने माना शोमैन है विराट कोहली- उनके बिना यह टेस्ट सीरीज बोरिंग होती

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में बॉक्सिंग डे टेस्ट में विराट कोहली की ऑन-फील्ड नाटकीयता ने सुर्खियां बटोर ली हैं। उनका उग्र टकराव, महंगा रन-आउट मिश्रण और बल्ले के साथ उनका लचीलापन। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान केविन पीटरसन, कोहली के समर्थन में आगे आए और खेल में थिएटर लाने के लिए 36 वर्षीय खिलाड़ी की प्रशंसा की। यह ड्रामा चौथे टेस्ट के शुरुआती दिन शुरू हुआ जब मैदान पर एक उग्र क्षण के दौरान कोहली ऑस्ट्रेलियाई नवोदित सैम कोनस्टास से टकरा गए। 19 वर्षीय कोन्स्टास ने इस घटना से विचलित हुए बिना, कोहली के साथ शब्दों का आदान-प्रदान किया, जिससे तनाव बढ़ गया। जैसे ही कोहली कोनस्टास से भिड़ने के लिए पीछे मुड़े, अंपायर माइकल गफ और उस्मान ख्वाजा को स्थिति को शांत

करने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ा।

पीटरसन ने एक्स पर पोस्ट किया- विराट नीचे थिएटर बना रहे हैं! आइए चलें! कल्पना करें कि शोमैन के बिना यह कितना उबाऊ होगा! और उन्होंने अपने करियर में अपने रनों से सब कुछ अर्जित किया है! कई लोग अपने सफल अंतरराष्ट्रीय करियर का अंत उन्होंने जो हासिल किया है उसके एक-चौथाई के साथ करेंगे...। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने कोहली पर मैच फीस का 20 फीसदी जुर्माना लगाया और उन्हें इस घटना के लिए एक डिमेरिट अंक दिया। हालाँकि जुर्माना अपेक्षाकृत हल्का था, इस घटना ने राय को विभाजित कर दिया, कुछ ने कोहली की आक्रामकता की निंदा की और अन्य ने इसे उनकी प्रतिस्पर्धी भावना के हिस्से के रूप में बचाव किया।

## संक्षिप्त समाचार

### कांकेर में तेज रफ्तार का कहर, 2 लड़कियों समेत 5 छात्रों की मौत; दुर्ग में ट्रेन के आगे कूदा प्रेमी जोड़ा

**कांकेर/दुर्ग, एजेंसी।** छत्तीसगढ़ में अलग-अलग जगहों पर दो दर्दनाक हादसा सामने आया है। कांकेर में सड़क हादसे में 2 लड़कियों समेत 5 लोगों की मौत हो गई। वहीं, दुर्ग जिले में एक प्रेमी जोड़े ने ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी। छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले के भानुप्रतापपुर के अंतागढ़ में सड़क हादसे में शुक्रवार को पांच लोगों की मौत हो गई। तेज रफ्तार स्कॉर्पिओ ने दो बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। इस हादसे में तीन युवक और दो युवतियों की मौत हो गई है। सभी कॉलेज के छात्र बताए जा रहे हैं। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। उधर, छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले की भिलाई के सुपेला थाना क्षेत्र में एक प्रेमी जोड़े ने आत्महत्या कर ली। प्रेमी जोड़े ने गुरुवार देर रात मुंबई हावड़ा रेल मार्ग पर गीतांजलि एक्सप्रेस ट्रेन के आगे कूदकर अपनी जान दे दी। मृतक युवती की पहचान चरोदा की रहने वाली श्रेया फर्नांडिस और युवक का नाम सेक्टर-9 का निवासी राहुल सिंह है। राहुल पहले से शादीशुदा था। श्रेया एयरटेल कंपनी में काम करती थी वहीं राहुल सुपेला में ही मोबाइल फाइनेंस का काम करता था। इसी बीच दोनों एक दूसरे से संपर्क में आ गए थे और एक दूसरे को चाहने लगे थे। इस बीच घर वालों ने राहुल की शादी कहीं और कर दी।

### श्रीनगर-जम्मू राजमार्ग पर फंसे लोगों की मदद के लिए उमर अब्दुल्ला ने अधिकारियों को दिए निर्देश

**श्रीनगर, एजेंसी।** जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने बर्फबारी के कारण श्रीनगर-जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग पर फंसे लोगों की मदद के लिए शुक्रवार को अधिकारियों को निर्देश दिए। बर्फबारी के कारण राजमार्ग पर कई वाहन फंस गए हैं। यह राजमार्ग घाटी को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ने वाला एकमात्र मार्ग है। अब्दुल्ला ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''काजीगुंड और सुरंग के बीच सड़क की वर्तमान स्थिति के बारे में डीसी अनंतनाग से बात की। बर्फीले मौसम के कारण यातायात बाधित हो गया है। दोनों दिशाओं में फंसे वाहन धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं और जहां आवश्यक है वहां सहायता की जा रही है।'' उन्होंने कहा कि उपायुक्त अपनी टीम के साथ मौके पर हैं और स्थिति पर नजर रख रहे हैं। उन्होंने कहा, '' मैंने उन्हें यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि परिवारों और बच्चों को ले जाने वाले वाहनों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। अगर जरूरत पड़ी तो रात भर रहने की व्यवस्था की जाएगी...।'' इससे पहले मुख्यमंत्री जम्मू से राजमार्ग के रास्ते यहां आए और कहा कि सड़क की स्थिति काफी खतरनाक है। उन्होंने कहा, ''बनिहाल से श्रीनगर तक लगातार बर्फबारी हो रही थी। स्थिति काफी खतरनाक थी। मुझे पता चला है कि सुरंग और काजीगुंड के बीच करीब 2000 वाहन फंसे हुए हैं। उन्होंने कहा, ''मेरा कार्यालय दक्षिण कश्मीर में प्रशासन के संपर्क में है। बर्फ हटाने का काम पूरा हो चुका है लेकिन सड़कों पर बर्फ है भारी वाहनों को जाने की अनुमति दी जा रही है और बाकी फंसे वाहनों को निकालने के प्रयास जारी हैं।

### किसानों का 30 दिसंबर को 'पंजाब बंद' का ऐलान, सड़क, रेल सेवाओं पर पड़ेगा असर

**पटियाला, एजेंसी।** न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी को लेकर लगातार प्रदर्शन कर रहे किसानों ने किसान मजदूर संघर्ष समिति के बैनर तले पंजाब बंद का ऐलान किया है। समिति के नेता श्रवण सिंह पंढेर ने गुरुवार को कहा कि 30 दिसंबर को पंजाब बंद का आह्वान किया गया है। इस बंद में हमें विभिन्न लोगों और समूहों का समर्थन मिल रहा है। खन्नूर बॉर्डर पर मीडिया से बात करते हुए पंढेर ने कहा कि पंजाब बंद 30 दिसंबर की सुबह 7 बजे से शाम 4 बजे तक मनाया जाएगा। हमें कई यूनियनों और समूहों से समर्थन मिल रहा है। 30 तारीख को पूरे दिन पंजाब में सरकार और निजी कार्यलय दोनों बंद रहेंगे। इसके अलावा रेल और सड़क यातायात भी रोका जाएगा। इससे पहले मंगलवार को पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने केंद्र सरकार पर किसानों की तरफ ध्यान न देने को लेकर जमकर निशाना साधा।

# हरियाणा राज्य चुनाव आयोग ने कांग्रेस को दिया झटका, अब ईवीएम से ही होंगे निकाय चुनाव

**चंडीगढ़, एजेंसी।** हरियाणा के राज्य चुनाव आयुक्त धनपत सिंह ने स्पष्ट कर दिया है कि निकाय चुनाव ई.वी.एम. से ही होंगे। हरियाणा कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष उदयभान ने कुछ दिन पहले कहा था कि पार्टी को ई.वी.एम. पर कोई भरोसा नहीं है, इसलिए निकाय चुनाव बैलेट पेपर से करवाए जाने चाहिए। राज्य चुनाव आयुक्त कहा कि किसी भी राजनीतिक दल ने इस मांग को लेकर कोई मांगपत्र नहीं दिया है। राज्य में शहरी निकाय चुनाव ई.वी.एम. से ही होंगे। राज्य चुनाव आयोग को एम-टू ई.वी.एम. मिली हैं, जिनका प्रयोग पिछले लोकसभा और विधानसभा चुनाव में किया गया था। उन्होंने इस बात को खारिज किया कि ई.वी.एम. में किसी तरह की छेड़छाड़ की जा सकेगी। जून 2022 में शहरी निकाय और अक्तूबर-नवम्बर 2022 में पंचायत चुनाव भी ई.वी.एम. के माध्यम से ही कराए गए थे।

राज्य चुनाव आयुक्त ने शहरी निकाय चुनाव की तैयारियों के मद्देनजर सभी जिला उपायुक्तों से कहा है कि वे 6 जनवरी तक हर हाल में मतदाता सूचियों का अंतिम प्रकाशन सुनिश्चित कर लें, ताकि चुनाव कार्यक्रम घोषित करने में किसी तरह का विलंब नहीं हो सके। धनपत सिंह ने बताया कि 27 शहरी निकायों में वार्डबंदी और आरक्षण की प्रक्रिया को पूरा कर लिया गया है। वोटर लिस्ट तैयार करने की प्रक्रिया जिला उपायुक्तों के माध्यम से पूरी की जा रही है। पहले चरण में गुरुग्राम, फरीदाबाद व मानेसर के सामान्य तथा अम्बाला व सोनीपत नगर निगमों के उपचुनाव होंगे। रोहतक और हिसार नगर निगमों में

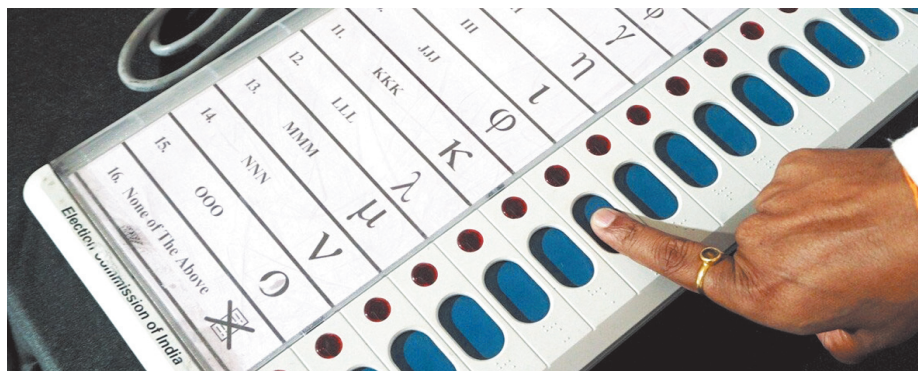


वार्डबंदी का काम हालांकि पूरा हो चुका है, लेकिन करनाल, यमुनानगर, पानीपत के साथ इन दोनों नगर निगमों के चुनाव दूसरे चरण में करवाए जाएंगे। राज्य चुनाव आयुक्त ने बताया कि थानेसर नगर परिषद की वार्डबंदी का काम पूरा हो गया है, लेकिन इसके चुनाव दूसरे चरण में होंगे। कालांवाली के चुनाव भी दूसरे चरण में होंगे, जबकि सोहना के उपचुनाव पहले चरण में कराए जाएंगे। सोहना का केस हाईकोर्ट में चल रहा था, जो कि पीड़ित के पक्ष में नहीं गया है। अम्बाला, पटौदी, जाखल मंडी और सिरसा नगर परिषदों के चुनाव पहले चरण में होंगे। हरियाणा में निकाय चुनाव से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों के स्थानांतरण पर प्रदेश सरकार ने रोक लगा दी है। मतदाता सूचियों को अंतिम रूप देने में जुटे किसी कर्मचारी-अधिकारी को अब स्थानांतरित नहीं किया जाएगा। स्थानांतरण जरूरी हुआ तो हरियाणा राज्य चुनाव आयोग से अनुमति के बाद ही ऐसा किया जाएगा। मुख्य सचिव कार्यालय की राजनीतिक शाखा ने इस संबंध में सभी प्रशासनिक सचिवों, विभागाध्यक्षों, बोर्ड-निगमों के प्रबंध निदेशक, मंडलायुक्त और उपायुक्तों को निर्देश जारी कर दिए हैं। हरियाणा में पहले चरण में होने वाले शहरी निकाय चुनाव के लिए 6 जनवरी को अंतिम मतदाता सूचियां प्रकाशित कर दी जाएंगी। शुक्रवार को रिवाइजिंग अथॉरिटी एस.डी.एम., डी.आर.ओ. और नगराधीश द्वारा आपत्तियों का निपटान का काम पूरा कर लिया गया। अब 31 दिसम्बर तक रिवाइजिंग अथॉरिटी के निर्णय के विरुद्ध उपायुक्तों के पास अपील की जा सकेगी। उपायुक्त 3 जनवरी तक इन अपीलों का निपटान करेंगे तथा 6 जनवरी को फाइनल मतदाता सूचियां जारी कर दी जाएंगी।

## नए साल पर महाराष्ट्र में शिक्षकों को झटका, देरी से मिलेगी सैलरी; लड़की बहिन योजना बना कारण

**मुंबई, एजेंसी।** महाराष्ट्र में नए साल पर शिक्षकों को बड़ा झटका लगने जा रहा है। दिसंबर का वेतन देरी से मिलने की संभावना है। इसका एक कारण लड़की बहिन योजना से सरकार पर पड़ने वाला वित्तीय बोझ बताया जा रहा है। आपको बता दें कि शिक्षकों को 1 से 5 तारीख के बीच वेतन का भुगतान किया जाता है। प्राथमिक शिक्षकों, माध्यमिक शिक्षकों के साथ-साथ अर्ध-सरकारी स्कूलों और सरकारी स्कूलों के सभी शिक्षकों को एकसाथ वेतन दिया जाता है। इसके लिए सभी आवश्यक दस्तावेज 15 तारीख तक पूरे कर लिए जाता है।

न्यूज रिपोर्ट के मुताबिक, शिक्षकों के वेतन के लिए कल प्रावधान किया गया है। इससे पहले योजनाओं पर होने वाले खर्च के लिए प्रावधान किया जा रहा है। यही कारण है कि शिक्षकों के वेतन में देरी हो सकती है। इसका मतलब यह है कि नए साल में शिक्षकों के वेतन में 2 से 3 दिन की देरी हो सकती है। आमतौर पर 1 से 5 तारीख के बीच सैलरी दी जाती है।

नये साल में शिक्षकों के वेतन में दो से तीन दिन की देरी होने की संभावना है। लड़की बहिन योजना के कारण राज्य के खजाने पर वित्तीय बोझ पड़ने के कारण शिक्षकों के वेतन का प्रावधान रुका हुआ था। यह राशि देर रात स्थानांतरित की गई। शिक्षकों का वेतन हमेशा 15 तारीख तक स्थानांतरित कर दिया जाता है। बताया जा रहा है कि बेटी बचाओ योजना की दिसंबर की किस्त के भुगतान में देरी हुई है। शिक्षा विभाग अब जल्द से जल्द वेतन भुगतान करने में जुट गया है। नए साल की शुरुआत में सोलापुर जिले के माध्यमिक विभाग के लगभग 13,000 शिक्षकों को एक ही तारीख पर वेतन का भुगतान नहीं किया जाएगा। 13,000 शिक्षकों के वेतन पर लगभग 90 करोड़ रुपये का खर्च आएगा। सामान्यतः वेतन की राशि 20 तारीख को वेतन अधीक्षक को प्राप्त हो जाती है। इसके बाद, इन वेतन का बंटवारा किया जाता है। एक निश्चित तिथि तक शिक्षकों को भुगतान कर दिया जाता है।

## दिल्ली में आप-कांग्रेस की तनातनी में कूदे संजय राउत, बताया असली दुश्मन कौन; सलाह भी दी

**मुंबई, एजेंसी।** दिल्ली में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच जारी तनातनी में शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत भी कूद पड़े हैं। उन्होंने दोनों दलों को सलाह देते हुए कहा कि उन्हें समझना चाहिए कि उनका असली दुश्मन कौन है।

दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले 'इंडिया' गठबंधन के दो सहयोगी दल आप और कांग्रेस आमने-सामने आ गए हैं। दोनों दलों के बीच जारी गतिरोध के बीच शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत ने दोलों दलों को सलाह दी है। राउत ने कहा कि दोनों दलों को यह समझना चाहिए कि उनका असली दुश्मन कौन है। उनका यह इशारा भाजपा की ओर माना जा रहा है।

राउत ने पत्रकारों से कहा कि कांग्रेस और आप राज्य स्तर पर अलग-अलग चुनाव लड़ते हैं और उनके विचार भिन्न हो सकते हैं। लेकिन, उन्हें विपक्षी गठबंधन के हिस्से के रूप में अपने रिश्तों को ध्यान में रखना चाहिए। राउत ने कहा कि आप और कांग्रेस की लड़ाई पुरानी है। दोनों दलों को दिमाग में रखना चाहिए कि वे 'इंडिया' गठबंधन के घटक के रूप में मिलकर कुछ चुनाव लड़ चुके हैं। कहा कि दोनों दलों को यह बात दिमाग में रखनी होगी कि उनकी लड़ाई एक दूसरे के खिलाफ है या भाजपा से है। हमारा दुश्मन कौन है, कांग्रेस या भाजपा अगर

किसी को यह बात नहीं पता तो सबकुछ बेकार है। दिल्ली कांग्रेस ने बुधवार को 12-सूत्री श्वेतपत्र जारी किया था। इसमें अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी और भाजपा पर वादे पूरे नहीं करने और कुप्रबंधन को लेकर निशाना साधा गया था।

इस परआप ने बृहस्पतिवार को कहा था कि अगर कांग्रेस अपने नेताओं के बयानों को लेकर उनके खिलाफ 24 घंटे में अनुशासनात्मक कार्रवाई नहीं करती तो उसे 'इंडिया' से बाहर निकलवाने पर जोर दिया जाएगा। दिल्ली में सत्तारूढ़ पार्टी ने कांग्रेस पर राजधानी में होने वाले चुनाव के लिए भाजपा से सांठगांठ करने का आरोप भी लगाया।

राउत ने कहा कि कांग्रेस को राष्ट्रीय राजधानी में पिछले तीन लोकसभा और विधानसभा चुनावों में कोई सफलता नहीं मिली है।

## राम मंदिर की तर्ज पर बन रहा हनुमान गढ़ी का पश्चिमी द्वार, चौखट पर पहुंचते ही दिखेगा दिव्य नजारा

**अयोध्या, एजेंसी।** राम मंदिर के तर्ज पर हनुमान गढ़ी मंदिर का पश्चिमी द्वार को तैयार किया जा रहा है. इसे प्राचीन इतिहास और वैदिक परंपरा के मुताबिक स्वरूप दिया जा रहा है. यह राम मंदिर के सिंह द्वार के ठीक सामने होगा. इसकी चौड़ाई लगभग 20 फीट और ऊंचाई 51 फीट रखी गई है. इसके साथ ही इस मार्ग से होकर गुजरने के लिए श्रद्धालु सभी सुविधा उपलब्ध होगी. इसके लिए के.टी.प्रोजेक्ट कंपनी को जिम्मेदारी दी गई है. राम मंदिर के निर्माण के बाद श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या में आवागमन जारी है. राम मंदिर में दर्शन करने के लिए लाखों श्रद्धालु प्रतिदिन अयोध्या पहुंचते हैं. इस दौरान प्रसिद्ध हनुमानगढ़ी मंदिर में भी भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है. इस भीड़ के चलते दर्शन के दौरान श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना एक बड़ी चुनौती बन गई है.

इसको देखते हुए मंदिर परिसर के विस्तार की योजना पर काम शुरू कर दिया गया. मंदिर के पश्चिम दिशा का द्वार विकसित किया जा रहा है. धार्मिक मान्यता है कि त्रेता युग में श्रीराम जब लंका पर विजय प्राप्त कर अयोध्या पहुंचे थे, तो उनके साथ हनुमान जी भी आए थे. वहां श्रीराम ने राजमहल की सुरक्षा के लिए उन्हें रामकोट के मुख्य द्वार पर स्थित इस टीले पर रहने के लिए जगह दी थी. हनुमान जी श्री राम

जन्मभूमि की ओर देखते हुए विराजमान हैं.

हनुमानगढ़ी मंदिर गद्दी नशीन के उत्तराधिकारी महेश दास ने कहा कि श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए मंदिर प्रशासन हनुमानगढ़ी का विकास तीन चरणों में करा रहा है. पहले चरण में निकास द्वार के निर्माण का काम चल रहा है. इसमें सीढ़ियों का चौड़ीकरण 20 फीट तक किया जा रहा है. निकास द्वार को भी चौड़ा किया जाएगा. साथ ही 51 फीट ऊंचे नए निकास द्वार का निर्माण किया जाएगा. इसमें रामानंदीय संप्रदाय के संस्थापक रामानंद की मूर्ति भी रहेगी. इसकी अनुमानित लागत लगभग 5 करोड़ है. उन्होंने कहा कि दूसरे चरण में हनुमान जी के गर्भगृह के पास की परिक्रमा को 20 फीट चौड़ा किया जाएगा. साथ ही मंदिर परिसर में स्थित अन्य मंदिरों को किले की आखिरी दीवार तक शिफ्ट किया जाएगा, जिससे गर्भगृह के पास 20 से 25 फीट का अतिरिक्त दायरा मिल सकेगा. वहीं तीसरे चरण में गद्दी नशीन द्वारा आरती के दौरान एक कर्व आकार की चौड़ाई दी जाएगी और प्रवेश द्वार को भी विकसित करेंगे. इसके साथ ही विकलांग और बुजुर्ग श्रद्धालुओं के लिए लिफ्ट भी बनाई जा रही है.

## टेक्नोवेशन अबू धाबी में इनोवेशन से स्मोक-फ्री फ्यूचर का लक्ष्य पाने की दर पर जोर डाला गया

**अबू धाबी, एजेंसी।** फिलिप मॉरिस इंटरनेशनल (पीएमआई) ने हाल ही में अबू धाबी में अपने 10वें टेक्नोवेशन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में इनोवेशन, टेक्नोलॉजी और विज्ञान द्वारा धूम्रपान (स्मोकिंग) की दरों को तेजी से कम करने में निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका पर फोकस किया गया। यदि ऐसा होगा, तो सभी का भविष्य बेहतर बनेगा। पीएमआई के एक्जीक्यूटिव्स ने बताया कि नो-कम्बस्टन टेक्नोलॉजी के जरिये पारंपरिक तंबाकू की तुलना में कम नुकसान पहुंचाने के लिए डिजाइन किये गये विकल्पों तक पहुंच होने से स्मोक-फ्री फ्यूचर को पाने में मदद मिलेगी।

आयोजन में बात करते हुए, फिलिप मॉरिस इंटरनेशनल के सीईओ यासिक ओल्ज़ाक ने कहा, ''सिगरेट के विकल्पों को प्रतिबंधित करना 'समय की बर्बादी' है, क्योंकि इसके प्रमाण हमारे सामने हैं कि उत्पाद के विभिन्न प्रारूप इस समस्या को तेजी से दूर करने में मददगार होते हैं। सिगरेट की बिक्री को जारी रखते हुए, लोगों को कम हानिकारक विकल्पों से वंचित रखना लगभग अनैतिक है। दुनिया के 1 बिलियन स्मोकर्स को सूचना का अधिकार होना चाहिये और यह भी कि वे कम हानिकारक विकल्प चुन सकें। ऐसे विकल्पों को अपनाने वाले देशों, जैसे कि उदाहरण के लिये जापान में पिछले 10 वर्षों में सिगरेट पीने में 45त्न से भी ज्यादा कमी आई है। अब से 10 वर्ष बाद जापान धूम्रपान से मुक्त होगा, जबकि भारत में ज्यादा स्मोकर्स होंगे। भारत तेजी से धूम्रपान छोड़ने का मौका गंवा देगा और इसका कारण होगा विज्ञान पर आधारित नीतियों को नहीं अपनाना।''

उनकी बात को आगे बढ़ाते हुए, फिलिप मॉरिस इंटरनेशनल में कॉमनवेल्थ ऑफ इंडिपेंडेन्ट स्टेट्स एण्ड मिडिल ईस्ट एण्ड अफ्रीका रीजन के साउथ एण्ड साउथईस्ट एशिया प्रेसिडेंट फ्रेड डे विल्डे ने कहा, ''अपनी युवा और बढ़ती आबादी के साथ ग्लोबल साउथ का भविष्य को आकार देने में बड़ा योगदान रहेगा। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, दुनिया के 1 बिलियन स्मोकर्स में से 80त्न उभरते देशों में रहते हैं। धुएं से मुक्त भविष्य की ओर बढ़ने में तेजी लाने और पारंपरिक तंबाकू के इस्तेमाल से होने वाला नुकसान कम करने के लिये हम इन क्षेत्रों में सिगरेट पीने के कम हानिकारक विकल्पों को किफायती एवं सुलभ बनाकर उन्हें उपभोक्ताओं की पसंद के मुताबिक बनाना चाहते हैं। जून 2024 तक 27 देशों के लगभग 6.1 मिलियन लोगों ने कम हानिकारक विकल्पों को अपना लिया था। हालांकि यह सिर्फ शुरूआत है, क्योंकि दुनिया के वैध आयु वाले आधे से ज्यादा निकोटिन कंज्यूमर इन क्षेत्रों में रहते हैं।'' धुएं से मुक्त दुनिया की कल्पना बताते हुए, फिलिप मॉरिस इंटरनेशनल में ग्लोबल कम्युनिकेशंस के वाइस प्रेसिडेंट तोमासो डी जियोवन्नी ने कहा, ''पीएमआई जल्दी से जल्दी सिगरेट की जगह कम हानिकारक विकल्पों को देना चाहती है। यह विकल्प सिगरेट की तुलना में वैज्ञानिक आधार पर ज्यादा सुरक्षित प्रमाणित हुए हैं। यह पूरी तरह से जोखिम से मुक्त नहीं हैं, लेकिन सिगरेट के मुकाबले हानिकारक रसायनों से संपर्क में आना काफी कम कर सकते हैं। हमारा मानना है कि अगर आप धूम्रपान नहीं करते हैं।

## जयशंकर ने ट्रंप के एनएसए माइकल वाल्ट्ज से मुलाकात की, द्विपक्षीय संबंधों और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा

**वॉशिंगटन, एजेंसी।** भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अमेरिका में अपनी आधिकारिक यात्रा के दौरान निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) के नामित उम्मीदवार माइकल वाल्ट्ज से मुलाकात की। इस मुलाकात में दोनों नेताओं ने भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय साझेदारी और वैश्विक मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की। जयशंकर वर्तमान में 24-29 दिसंबर तक अमेरिका दौरे पर हैं। यह भारतीय सरकार और ट्रंप प्रशासन के बीच पहली उच्च-स्तरीय व्यक्तिगत बैठक थी। भारतीय विदेश मंत्री ने शुक्रवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, आज शाम वाल्ट्ज से मिलकर खुशी हुई। हमने भारत-अमेरिका द्विपक्षीय संबंधों और वैश्विक मुद्दों पर एक व्यापक चर्चा की। मैं उनके साथ आगे काम करने के लिए उत्सुक हूं। फ्लोरिडा के छठवें कांग्रेसनल जिले के तीन बार के सांसद माइकल वाल्ट्ज ट्रंप के 20 जनवरी को अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण करने के बाद एनएसए के रूप में अपनी जिम्मेदारी संभालेंगे। वाल्ट्ज भारत-अमेरिका संबंधों से परिचित हैं। वह संसद में भारत कॉकस के रिपब्लिकन सह-चेयरमैन हैं। वह अगस्त में भारत का दौरा कर चुके हैं और लाल किले में स्वतंत्रता दिवस के समारोह में भी शामिल हुए थे। इसके अलावा, उन्होंने भारत के पक्ष में कई विधेयकों को समर्थन दिया है। 12 नवंबर को ट्रंप ने वाल्ट्ज को अपने एनएसए के रूप में नियुक्त करने की घोषणा की थी। इससे पहले दिन में, जयशंकर ने कहा कि उन्होंने वाशिंगटन डीसी में भारतीय दूतावास और महावाणिज्यदूतों के साथ दो दिन का एक महत्वपूर्ण सम्मेलन खत्म किया।

### अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में ट्रंप ने दायर की याचिका, टिकटॉक पर प्रतिबंध वाले कानून को रोकने का किया आग्रह

**वाशिंगटन, एजेंसी।** अमेरिका ने नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डॉनाल्ड ट्रंप ने टिकटॉक पर बैन लगाने वाले कानून को रोकने के लिए अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। इस याचिका में ट्रंप ने कोर्ट से आग्रह किया कि वह उस कानून को रोक दे जो 20 जनवरी को उनके शपथ ग्रहण से एक दिन पहले टिकटॉक पर प्रतिबंध लगाएगा, यदि इसको इसके चीनी मालिक बाइटडांस द्वारा नहीं बेचा जाता है। डोनाल्ड ट्रंप की कानूनी टीम ने याचिका में कहा कि इस मामले की जटिलता और नवीनता को देखते हुए, अदालत को इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए अधिक समय देने के लिए वैधानिक समय सीमा पर रोक लगाने पर विचार करना चाहिए, ताकि उन्हें राजनीतिक समाधान का प्रयास करने का अवसर मिल सके। गौरतलब है कि डोनाल्ड ट्रंप अपने पहले कार्यकाल (2017-2021) के दौरान टिकटॉक के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार पर इस ऐप पर प्रतिबंध लगाने की भी कोशिश की थी। इसके लिए रिपब्लिकन नेताओं ने यह चिंता व्यक्त की थी कि चीनी सरकार अमेरिकी टिकटॉक उपयोगकर्ताओं के डेटा का दुरुपयोग कर सकती है या प्लेटफ़ॉर्म पर जो कुछ भी देखा जाता है।

## गाजा में फिर से वापसी कर रहे हमास के लड़ाके, इस्राइली सेना ने कमाल अदवान अस्पताल के करीब किया हमला

**गाजा, एजेंसी।** इस्राइली सेना (आईडीएफ) ने शुक्रवार को गाजा में कमाल अदवान अस्पताल के आसपास सैन्य कार्रवाई की है। दरअसल इस्राइली सेना को सूचना मिली थी कि गाजा के इस इलाके में हमास के लड़ाकों की वापसी हुई है और वे यहां आतंकी गतिविधि संचालित कर रहे हैं। सूचना के आधार पर इस्राइली सेना ने कमाल अदवान अस्पताल के पास छापेमारी की। आईडीएफ ने कहा कि उसने नागरिकों को होने वाले नुकसान को कम करने के लिए ऑपरेशन से पहले नागरिकों, रोगियों और चिकित्सा कर्मियों को सुरक्षित तरीके से निकालने में मदद की। अस्पताल के मरीजों को गाजा के अन्य अस्पतालों में शिफ्ट कर दिया गया है। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय के निदेशक मुनीर अल-बुर्श ने बताया, आईडीएफ ने 350 लोगों को कमल अदवान अस्पताल से नजदीक के स्कूल में जाने का आदेश दिया। इनमें 75 मरीज, उनके साथी और 185 चिकित्सा कर्मचारी शामिल थे। आईडीएफ का कहना है कि यमन से इस्राइल की तरफ मिसाइलें दागी गई हैं। हालांकि इस्राइली सेना ने हवा में

ही इन मिसाइलों को इंटरसेप्ट कर तबाह कर दिया। आईडीएफ ने यह स्पष्ट नहीं किया कि मिसाइल को रोकने वाला इजरायली सिस्टम था या अमेरिकी सिस्टम। अमेरिकी मिसाइल रक्षा प्रणाली बैटरी ने कल सुबह यमन से इजरायल पर दागी गई हौथी बैलिस्टिक मिसाइल को सफलतापूर्वक रोका था। गौरतलब है कि अक्तूबर में इस्राइल में अमेरिका की रक्षा प्रणाली को तैनात किया गया था। आईडीएफ ने बताया कि हूती विद्रोहियों ने पिछले साल इस्राइल पर 200 से अधिक मिसाइलें और 170 ड्रोन दागे हैं। एक अमेरिकी मीडिया को दिए इंटरव्यू में सीरियाई नेता अहमद अल-शरा की ओर से दमिश्क के गवर्नर माहेर मरवान ने कहा है कि सीरिया की नई सरकार इस्राइल के साथ शांति चाहती है। गवर्नर ने कहा कि हमें इस्राइल से कोई डर नहीं है, और हमारी समस्या इस्राइल के साथ नहीं है। हम सह-अस्तित्व चाहते हैं और कोई विवाद नहीं चाहते। हम ऐसी किसी भी चीज़ में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते हैं जो इस्राइल की सुरक्षा या किसी अन्य देश की सुरक्षा को ख़तरे में डाले।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129